शोध दिशा

वर्ष 7 अंक 2 | अप्रैल-जून 2014 | 40 रुपए

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन
16 साहित्य विहार, बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰)
फ़ोन : 01342-263232, 07838090732
ई-मेल : giriraj 3100@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय
दिल्ली एन॰सी॰आर॰
डॉ॰ अनुभूति भटनागर
सी-106, शिव कला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सैक्टर 62, नोएडा
मो॰ : 09928570700

गुड़गाँव कार्यालय
डॉ॰ मीना अग्रवाल
बी-203, पार्क व्यू सिटी-2
सोहना रोड, गुड़गाँव (हरियाणा)
फ़ोन : 0124-4076565, 07838090732

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

अतिथि संपादक
डॉ॰ लालित्य ललित

प्रबंध संपादक
डॉ॰ मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
मनोज अबोध
सत्यराज

कला संपादक
गीतिका गोयल 09582845000
डॉ॰ अनुभूति 09928570700

उपसंपादक
डॉ॰ अशोक कुमार 09557746346

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी॰ए॰

चित्रकार
डॉ॰ आर॰के॰ तोमर
अतुलवर्धन

शुल्क
आजीवन शुल्क : एक हज़ार पाँच सौ रुपए
वार्षिक शुल्क : एक सौ पचास रुपए
एक प्रति : चालीस रुपए
विदेश में : पंद्रह यू॰एस॰डॉलर (वार्षिक)

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें।

स्वत्वाधिकारी 'हिंदी साहित्य निकेतन' की ओर से स्वत्वाधिकारी, मुद्रक प्रकाशक डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, निकट ज्योतिष भवन, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

संरक्षक

रो॰ असित मित्तल, नोएडा
श्री अजय रस्तोगी, मेरठ
श्री निश्चल रस्तोगी, मेरठ
श्री अनिलकुमार गोयल, नोएडा
रो॰ आर॰के॰ जैन, बिजनौर
डॉ॰ धैर्य विश्नोई, बिजनौर
डॉ॰ प्रकाश, बिजनौर
रो॰ राजीव रस्तोगी, मुरादाबाद
रो॰ राकेश सिंहल, मुरादाबाद
श्री महेश अग्रवाल, मुरादाबाद
श्रीमती ताराप्रकाश, मुज़फ़्फ़रनगर
रो॰ परमकीर्तिसरन अग्रवाल, मु॰न॰
रो॰ देवेंद्रकुमार अग्रवाल, (काशी विश्वनाथ स्टील्स, काशीपुर)
श्री प्रमोदकुमार अग्रवाल, (नैनी पेपर्स, काशीपुर)
श्री अमितप्रकाश, मुज़फ़्फ़रनगर
रो॰ नीरज अग्रवाल, जयपुर
श्री सत्येंद्र गुप्ता, नजीबाबाद
श्री अशोक अग्रवाल, गुड़गाँव
डॉ॰ सुधारानी सिंह, मेरठ

आजीवन सदस्य

रो॰ आर॰ के॰ साबू, चंडीगढ़
रो॰ सुशील गुप्ता, नई दिल्ली
रो॰ एम॰एल॰ अग्रवाल, दिल्ली
डॉ॰ मनोजकुमार, दिल्ली
श्री प्रवीण शुक्ल, दिल्ली
डॉ॰ दीप गोयल, दिल्ली
श्री आशीष कंधवे, दिल्ली
श्री अविनाश वाचस्पति, दिल्ली
पावर फाइनेंस कारपोरेशन (इं) लि॰
श्री ए॰बी॰ रावत, दिल्ली

उत्तर प्रदेश

रो॰ डॉ॰ के॰सी॰ मित्तल, नोएडा
श्री सुभाष गोयल, नोएडा
श्री ओमप्रकाश यति, नोएडा
सुश्री भावना सक्सेना, नोएडा
डॉ॰ कुँअर बेचैन, ग़ाज़ियाबाद
डॉ॰ अंजु भटनागर, ग़ाज़ियाबाद
डॉ॰ मिथिलेश रोहतगी, ग़ाज़ियाबाद
डॉ॰ मंजु शुक्ल, ग़ाज़ियाबाद
डॉ॰ मिथिलेश दीक्षित, शिकोहाबाद
डॉ॰ पल्लवी दीक्षित, शिकोहाबाद
रो॰ डॉ॰ एस॰के॰ राजू, हाथरस
श्री दिनेशचंद्र शर्मा, मोदीनगर
श्री एस॰सी॰ संगल, बुढ़ाना
डॉ॰ नीरू रस्तोगी, कानपुर
श्री हरीलाल मिलन, कानपुर
श्री विनोदकुमार गोयल, दादरी
श्री अलीहसन मकरैंडिया, दादरी
डॉ॰ प्रणव शर्मा, पीलीभीत
श्रीमती पिंकी चतुर्वेदी, वाराणसी
श्री अरविंदकुमार, जालौन
नेशनल थर्मल पावर कारपोरेशन
डॉ॰ राकेश शरद, आगरा
डॉ॰ राकेश सक्सेना, एटा
श्री अरविंदकुमार, मोहदा (हमीरपुर)
श्री गोपालसिंह, बेलवा (जौनपुर)
डॉ॰ रामसनेहीलाल शर्मा, फिरोज़ाबाद
श्री दिनेश रस्तौगी, शाहजहाँपुर
श्री भूदेव शर्मा, नोएडा
श्री इंद्रप्रसाद अकेला, मुरादनगर
प्राचार्य, डॉ॰ गोविंदप्रसाद, रानीदेवी पटेल महाविद्यालय कानपुर नगर

खुरजा (उ॰प्र॰)

श्रीमती उषारानी गुप्ता
रो॰ राकेश बंसल
रो॰ डॉ॰ दिनेशपाल सिंह
रो॰ प्रेमप्रकाश अरोड़ा
रो॰ सुनील गुप्ता आदर्श
रो॰ राजीव सारस्वत

जे॰पी॰ नगर

रो॰ अभय आनंद रस्तोगी, हसनपुर
रो॰ डॉ॰ विनोदकुमार अग्रवाल, हसनपुर
रो॰ डॉ॰ सरल राघव, अमरोहा
डॉ॰ बीना रुस्तगी, अमरोहा
रो॰ शिवकुमार गोयल, धनौरा
रोटरी क्लब, भरतियाग्राम

अफजलगढ़ (बिजनौर)

रो॰ रविशंकर अग्रवाल
रो॰ अतुलकुमार गुप्ता
रो॰ महेंद्रमानसिंह शेखावत
श्री वासुदेव सरीन
श्री हंसराज सरीन
श्री अमृतलाल शर्मा
श्री सुरेशकुमार

चाँदपुर (बिजनौर)

डॉ॰ मुनीशप्रकाश अग्रवाल
श्री सुरेंद्र मलिक
गुलाबसिंह हिंदू महाविद्यालय
डॉ॰ बलराजसिंह, बाष्टा (बिजनौर)
श्री विपिनकुमार पांडेय

धामपुर (बिजनौर)

डॉ॰ लालबहादुर रावल
श्री जे॰पी॰ शर्मा, शुगर मिल
डॉ॰ सरोज़ मार्कण्डेय
डॉ॰ शंकर क्षेम
श्री नरेंद्रकुमार गुप्त
श्रीमती सुषमा गौड़
डॉ॰ मिथिलेश माहेश्वरी
रो॰ शिवओम अग्रवाल
डॉ॰ वीरेंद्रकुमार शर्मा
डॉ॰ कृष्णकांत चंद्रा
डॉ॰ श्रीमती संहिता शर्मा
डॉ॰ पूनम चौहान
डॉ॰ भानु रघुवंशी
डॉ॰ ख़ालिदा तरन्नुम
श्री आर्यभूषण गर्ग
श्री संजय जैन
श्री निशिवेशसिंह एडवोकेट
श्री दीपेंद्रसिंह चौहान
मौ॰ सुलेमान, परवेज़ अनवर, शेरकोट
कुँ॰ निहालसिंह, दुर्गा पब्लिक स्कूल
प्राचार्य, आर॰एस॰एम॰ (पी॰जी॰)कालेज
प्राचार्या, एस॰बी॰डी॰ महिला कालेज
राधा इंटर कालेज, अल्हेपुर (धामपुर)
धामपुर पब्लिक कन्या इंटर कालेज

नगीना (बिजनौर)

श्री पंकजकुमार, पो॰ भोगली
श्री करनसिंह, पो॰ भोगली
श्री पंकजकुमार अग्रवाल
श्री मुनमुन अग्रवाल
डॉ॰ वारिस लतीफ
श्री ओमवीर सिंह

नजीबाबाद (बिजनौर)

श्री इंद्रदेव भारती
डॉ॰ रासुलता

बरेली (उ॰प्र॰)

रो॰ डॉ॰ आई॰एस॰ तोमर
रो॰ रविप्रकाश अग्रवाल
रो॰ डॉ॰ रामप्रकाश गोयल
डॉ॰ सविता उपाध्याय
डॉ॰ महाश्वेता चतुर्वेदी
रो॰ पी॰पी॰ सिंह
डॉ॰ अशोक उपाध्याय
रो॰ श्यामजी शर्मा
श्री विशाल अरोड़ा

डॉ॰ वाई॰एन॰ अग्रवाल
श्री राजेंद्र भारती
डॉ॰ देवेंद्राकुमारी झा

बिजनौर (उ॰प्र॰)

श्री राजकमल अग्रवाल
डॉ॰ बलजीत सिंह
रो॰ रमेश गोयल
रो॰ विज्ञानदेव अग्रवाल
श्रीमती शशि जैन
डॉ॰ मोनिका भटनागर
डॉ॰ ओमदत्त आर्य
श्री जोगेंद्रकुमार अरोरा
श्री चंद्रवीरसिंह गहलौत, एडवोकेट
रो॰ आर॰डी॰ शर्मा
डॉ॰ निकेता
डॉ॰ अजय जनमेजय
श्री पुनीत अग्रवाल
डॉ॰ निरंकारसिंह त्यागी
श्री अशोक निर्दोष
श्री वी॰पी॰ गुप्ता
रो॰ प्रदीप सेठी
रो॰ हरिशंकर गुप्ता
रो॰ सी॰पी॰ सिंह
डॉ॰ तिलकराम, वर्धमान कॉलेज
आर॰बी॰डी॰महिला महाविद्यालय
रो॰ डॉ॰ रजनीशचंद्र ऐरन, हल्दौर
श्री अरुण गोयल, किरतपुर
रो॰ डॉ॰ दीपशिखा लाहौटी, नगीना
रो॰ बी॰के॰ मालपानी, स्योहारा
डॉ॰ हेमलता देवी, गोहावर
नहटौर डिग्री कालेज, नहटौर
श्री विवेक गुप्ता, शादीपुर

मवाना (उ॰प्र॰)

रो॰ अनुराग दुबलिश
श्री अंबरीशकुमार गोयल
आर्य कन्या इंटर कालेज
ए॰एस॰ इंटर कालेज
लक्ष्मीदेवी आर्य कन्या डिग्री कालेज

मुज़फ़्फ़रनगर (उ॰प्र॰)

रो॰ शरद अग्रवाल
रो॰ वीरेंद्र अग्रवाल
रो॰ दिनेशमोहन
रो॰ डॉ॰ ईश्वर चंद्रा
रो॰ डॉ॰ अमरकांत
रो॰ अनिल सोबती
रो॰ डॉ॰ जे॰के॰ मित्तल
रो॰ सुधीरकुमार गर्ग
रो॰ प्रदीप गोयल
श्री गौरव प्रकाश
डॉ॰ बी॰के मिश्रा
रो॰ राकेश वर्मा
रो॰ संजीव गोयल
प्राचार्य, एस॰डी॰ कालेज ऑफ लॉ
प्रधानाचार्य, ग्रेन चेम्बर्स पब्लिक स्कूल
रो॰ संजय जैन, शामली
रो॰ डॉ॰ कुलदीप सक्सेना, शामली
रो॰ उमाशंकर गर्ग, शामली
रो॰ डॉ॰ सुनील माहेश्वरी, शामली
श्री अतुलकुमार अग्रवाल, खतौली

मुरादाबाद (उ॰प्र॰)

रो॰ सुधीर गुप्ता, एडवोकेट
रो॰ बी॰एस॰ माथुर
रो॰ ललितमोहन गुप्ता
रो॰ सुरेशचंद्र अग्रवाल
श्री शचींद्र भटनागर
रो॰ योगेंद्र अग्रवाल
रो॰ नीरज अग्रवाल
रो॰ के॰के॰ अग्रवाल
रो॰ श्रीमती सरिता लाल
रो॰ श्रीमती चित्रा अग्रवाल
डॉ॰ महेश 'दिवाकर'
रो॰ ए॰एन॰ पाठक
रो॰ चक्रेश लोहिया
रो॰ यशपाल गुप्ता
रो॰ सुधीर खन्ना
रो॰ रमित गर्ग
श्री विनोदकुमार
डॉ॰ रामानंद शर्मा
डॉ॰ पल्लव अग्रवाल
श्री राजेश्वरप्रसाद गहोई
श्री विश्वअवतार जैमिनी
श्रीमती कनकलता सरस
श्री योगेंद्रकुमार
श्री हरीश गर्ग, संभल
श्री वीरेंद्र गोयल, संभल
श्री नितिन गर्ग, संभल
रो॰ डॉ॰ राकेश चौधरी, चंदौसी

मेरठ (उ॰प्र॰)

रो॰ ओ॰पी॰सपरा
रो॰ विष्णुशरण भार्गव
रो॰ एम॰एस॰ जैन
रो॰ गिरीशमोहन गुप्ता
रो॰ डॉ॰ हरिप्रकाश मित्तल
रो॰ प्रणय गुप्ता
डॉ॰ आर॰के॰ तोमर
रो॰ संजय गुप्ता
श्री कृानस्वरूप
रो॰ नरेश जैन
रो॰ सागर अग्रवाल
डॉ॰ अनिलकुमारी
रो॰ प्रदीप सिंहल
श्री शिवानंद सिंह 'सहयोगी'
रो॰ नवल शाह
डॉ॰ रामगोपाल भारतीय
श्रीमती बीना अग्रवाल
श्रीमती मृदुला गोयल
रो॰ मुकुल गर्ग
श्री सियानंद सिंह त्यागी
श्री राकेश चक्र
रो॰ सी॰पी॰ रस्तौगी
डॉ॰ ज्ञानेदत्त हरित

रामपुर (उ॰प्र॰)

श्री शांतनु अग्रवाल
श्री नरेशकुमार सिंघल
डॉ॰ मीना महे

लखनऊ (उ॰प्र॰)

श्री महेशचंद्र द्विवेदी, आई॰पी॰एस॰
श्री दामोदरदत्त दीक्षित
डॉ॰ किरण पांडेय
श्री अनुपम मित्तल
श्रीमती रेणुका वर्मा
श्रीमती उषा गुप्ता
श्री अमृत खरे
श्री विनायक भूषण

सहारनपुर (उ॰प्र॰)

डॉ॰ विपिनकुमार गिरि
श्री श्रीपाल जैन ठेकेदार
श्री पूर्णसिंह सैनी, बेहट
श्री विनोद 'भृंग'
एम॰एल॰जे॰खेमका गर्ल्स कालेज
श्री सुनिल जैन 'राना'

उत्तराखंड

डॉ॰ आशा रावत, देहरादून
डॉ॰ राखी उपाध्याय, देहरादून
श्री अमीन अंसारी, जसपुर

श्री विपिनकुमार बक्शी, कोटद्वार
डॉ॰ अर्चना वालिया, कोटद्वार
धनौरी डिग्री कालेज, धनौरी
नेशनल इंटर कालेज, धनौरी

रुड़की

डॉ॰ अनिल शर्मा
श्री प्रेमचंद गुप्ता
श्री अविनाशकुमार शर्मा
श्री वासुदेव पंत
श्री मयंक गुप्ता
श्री अमरीष शर्मा
श्री उमेश कोहली
श्री जे॰पी॰ शर्मा
श्री मनमोहन शर्मा
श्री सुनील साहनी
श्री अशोक शर्मा 'आर्य'
श्री मेनपालसिंह
श्री संजय प्रजापति
श्री ओमदत्त शर्मा
श्री अरविंद शर्मा
श्री राजेश सिंहल
श्री ब्रिजेश गुप्ता
श्री संजीव राणा
श्री ऋषिपाल शर्मा
श्री राजपाल सिंह
बी॰एस॰एम॰इंटर कालेज,
आनंदस्वरूप आर्य सरस्वती विद्या मंदिर
योगी मंगलनाथ सरस्वती विद्या मंदिर
शिवालिक पब्लिक स्कूल, डंडेरा

काशीपुर

श्री समरपाल सिंह
श्री प्रमोदकुमार अग्रवाल
रो॰ डॉ॰ वी॰एम॰ गोयल
रो॰ डॉ॰ एस॰पी॰ गुप्ता
रो॰ डॉ॰ डी॰के॰ अग्रवाल
रो॰ डॉ॰ एन॰के॰ अग्रवाल
रो॰ डॉ॰ रविनंदन सिंघल
रो॰ विजयकुमार जिंदल
रो॰ जितेंद्रकुमार
रो॰ प्रदीप माहेश्वरी
रो॰ रवींद्रमोहन सेठ
श्री प्रमोदसिंह तोमर

आंध्र, कर्नाटक, केरल, मिज़ोरम

श्री अनंत काबरा, हैदराबाद
श्री श्याम गोयनका, बैंगलौर
डॉ॰ दीपा के॰, बैंगलोर (कर्नाटक)
डॉ॰ एन॰ चंद्रशेखरन नायर, केरल
डॉ॰ बी॰ आर॰ राल्टे, आइजॉल

तमिलनाडु

डॉ॰ बी॰ जयलक्ष्मी, चेन्नई
डॉ॰ पी॰आर॰ वासुदेवन शेष, चेन्नई
श्री एन॰ गुरुमूर्ति, चेन्नई
सुश्री प्रतिभा मलिक, चेन्नई
सुश्री अपराजिता शुभ्रा, चेन्नई
श्री योगेशचंद्र पांडेय, चेन्नई
श्री महेंद्रकुमार सुमन, चेन्नई
श्री संजय ढाकर, चेन्नई
श्री प्रदीप साबू, चेन्नई
सुश्री स्वर्णज्योति, पांडिचेरी

पंजाब

रो॰ विजय गुप्ता, राजपुरा
कर्नल तिलकराज, जालंधर
श्री सागर पंडित, अमृतसर

उड़ीसा

श्री श्यामलाल सिंहल, राउरकेला

मध्य प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़

रो॰ रविप्रकाश लंगर, उज्जैन
डॉ॰ हरीशकुमार सिंह, उज्जैन
डॉ॰ अशोक भाटी, उज्जैन
श्री माणिक वर्मा, भोपाल
श्री प्रदीप चौबे, ग्वालियर
श्री उमाशंकर मनमौजी, भोपाल
श्री जगदीश जोशीला
श्री विनोदशंकर शुक्ल, रायपुर
श्री रामेश्वर वैष्णव
श्री गजेंद्र तिवारी, बागबाहरा
श्री धीरेंद्रमोहन मिश्र, लक्खीसराय
डॉ॰ रामलखन राय, समस्तीपुर
श्रीमती सीमाकुमारी, समस्तीपुर

महाराष्ट्र, गुजरात

रो॰ सज्जन गोयनका, मुंबई
श्री जावेद नदीम, मुंबई
रो॰ डॉ॰ माधव बोराटे, पुणे
श्रीमती रिज़वाना कृयप, पुणे
रो॰ सुरेश राठौड़, मुंबई
डॉ॰ अश्विनीकुमार 'विष्णु', अमरावती
डॉ॰ शैलजा सुरेश माहेश्वरी, अमलनेर
श्री मधुप पांडेय, नागपुर
श्री सुभाष काबरा
श्री अरुणा अग्रवाल, पुणे
श्री सागर खादीवाला, नागपुर
डॉ॰ मिर्ज़ा एच॰एम॰, सोलापुर
श्री वनराज आर्ट्स, कॉमर्स कालेज,
धरमपुर (बलसाड)
श्री मोरारजी देसाई आर्ट्स एंड कॉमर्स
कालेज, वीरपुर (तापी)

राजस्थान

रो॰ डॉ॰ अशोक गुप्ता, जयपुर
रो॰ अजय काला, जयपुर
श्री कमल कोठारी, जयपुर
रो॰ विवेक काला, जयपुर
श्री आर॰सी॰ अग्रवाल, जयपुर
श्री राजीव सोगानी, जयपुर
श्री सुरेश सबलावत, जयपुर
श्री कमल टोंगिया, जयपुर
श्री मुकेश गुप्ता, जयपुर
श्री विनोद गुप्ता, जयपुर
श्री गिरधारी शर्मा, जयपुर
रो॰ एस॰के॰ पोद्दार, जयपुर
रो॰ राजेंद्र सांघी, जयपुर
रो॰ आर॰पी॰ गुप्ता, जयपुर
श्री जयपुर चेंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंड॰
डॉ॰ शंभुनाथ तिवारी, भीलवाड़ा
डॉ॰ दयाराम मैठानी, भीलवाड़ा
श्री मुरलीमनोहर बासोतिया, नवलगढ़

हरियाणा

श्री विकास, तहसील महम, रोहतक
डॉ॰ स्नेहलता, रोहतक
डॉ॰ सुदेशकुमारी, जींद
श्री हरिदर्शन, सोनीपत
डॉ॰ प्रवीनबाला, जुलाना मंडी
श्रीमती अनिलकुमारी, घिलौड़ कलाँ
डॉ॰ प्रवीणकुमार वर्मा, फरीदाबाद
श्रीमती रेखारानी, फरीदाबाद
श्री अभिषेक गुप्ता, फरीदाबाद
श्रीमती सविताकुमारी, सोनीपत
श्रीमती सुमनलता, रोहतक
श्री सुरेशकुमार, भिवानी
डॉ॰ सविता डागर, चरखी दादरी
छोटूराम किसान कालेज, जींद
ए॰पी॰जे॰ सरस्वती कालेज, चरखी दादरी
विनोदकुमार कौशिक, चरखी दादरी
डी॰सी॰ मॉडल सीनि सेकेंडरी स्कूल फरीदाबाद
डॉ॰ विजय इंदु, गुड़गाँव
श्रीमती विधु गुप्ता, गुड़गाँव

क्या है ये फेसबुक..

फेसबुक इंटरनेट पर स्थित एक नि:शुल्क सामाजिक नेटवर्किंग सेवा है, जिसके माध्यम से इसके सदस्य अपने मित्रों, परिवार और परिचितों के साथ संपर्क रख सकते हैं। इसके प्रयोक्ता नगर, विद्यालय, कार्यस्थल या क्षेत्र के अनुसार गठित किए हुए नेटवर्कों में शामिल हो सकते हैं और आपस में विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। इसका आरंभ 2004 में हार्वर्ड के एक छात्र मार्क जुकरबर्ग ने किया था। तब इसका नाम द फेसबुक था। कॉलेज नेटवर्किंग जालस्थल के रूप में आरंभ करने के बाद शीघ्र ही यह कॉलेज परिसर में लोकप्रिय होती चली गई। कुछ ही महीनों में यह नेटवर्क पूरे यूरोप में पहचाना जाने लगा। अगस्त 2005 में इसका नाम फेसबुक कर दिया गया।

फेसबुक का उपयोग करने वाले अपना एक प्रोफाइल पृष्ठ तैयार कर उस पर अपने बारे में जानकारी देते हैं। इसमें उनका नाम, छायाचित्र, जन्मतिथि और कार्यस्थल, विद्यालय और कॉलेज आदि का ब्योरा दिया होता है। इस पृष्ठ के माध्यम से लोग अपने मित्रों और परिचितों का नाम, ईमेल आदि डालकर उन्हें ढूँढ सकते हैं। इसके साथ ही वे अपने मित्रों और परिचितों की एक अंतहीन शृंखला से भी जुड़ सकते हैं। फेसबुक के उपयोक्ता सदस्य यहाँ पर अपना समूह भी बना सकते हैं। समूह कुछ लोगों का भी हो सकता है और इसमें और लोगों को शामिल होने के लिए भी आमंत्रित किया जा सकता है। इसके माध्यम से किसी कार्यक्रम, संगोष्ठी या अन्य किसी अवसर के लिए सभी जानने वालों को एक साथ आमंत्रित भी किया जा सकता है।

लोग इस जालस्थल पर अपनी रुचि, राजनीतिक और धार्मिक अभिरुचि व्यक्त कर समान विचारों वाले सदस्यों को मित्र भी बना सकते हैं। इसके अलावा भी कई तरह के संपर्क आदि जोड़ सकते हैं। फेसबुक में अपने या अपनी रुचि के चित्र फोटो लोड कर उन्हें एक-दूसरे के साथ शेयर भी कर सकते हैं। ये चित्र मात्र उन्हीं लोगों को दिखेंगे, जिन्हें उपयोक्ता दिखाना चाहते हैं। चित्रों का संग्रह सुरक्षित रखने के लिए इसमें पर्याप्त जगह होती है। फेसबुक के माध्यम से समाचार, वीडियो और दूसरी संचिकाएँ भी शेयर की जा सकती हैं।

फेसबुक पर उपयोक्ताओं को अपने मित्रों को यह बताने की सुविधा है कि किसी विशेष समय वे क्या कर रहे हैं या क्या सोच रहे हैं और इसे 'स्टेटस अपडेट' करना कहा जाता है। फेसबुक और ट्विटर के आपसी सहयोग के द्वारा निकट भविष्य में फेसबुक एक ऐसा सॉफ्टवेयर जारी करेगा, जिसके माध्यम से फेसबुक पर होने वाले 'स्टेटस अपडेट' सीधे ट्विटर पर अद्यतित हो सकेंगे। अब लोग अपने मित्रों को बहुत लघु संदेशों द्वारा यह बता सकेंगे कि वे कहाँ हैं, क्या कर रहे हैं या क्या सोच रहे हैं।

ट्विटर पर 140 केरेक्टर के स्टेटस मैसेज अपडेट को अनगिनत सदस्यों के मोबाइल और कंप्यूटरों तक भेजने की सुविधा थी, जबकि फेसबुक पर उपयोक्ताओं के लिए ये सीमा मात्र 5000 लोगों तक ही सीमित है। सदस्य 5000 लोगों तक ही अपने प्रोफाइल के साथ जोड़ सकते हैं या मित्र बना सकते हैं। फेसबुक पर किसी विशेष प्रोफाइल से लोगों के जुड़ने की संख्या सीमित होने के कारण स्टेटस अपडेट भी सीमित लोगों को ही पहुँच सकता है।

फेसबुक के सार्वजनिक पृष्ठ (पब्लिक पेज) बनाना हाल के दिनों में काफ़ी लोकप्रिय होता जा रहा है। पब्लिक पेज बनाने वालों में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा, फ्रांसीसी राष्ट्रपति निकोला सारकोजी और रॉक बैंड यू-2, भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी आदि शामिल हैं। इनके अलावा भी कई बड़ी हस्तियों, संगीतकारों, सामाजिक संगठनों, कंपनियों ने अपने खाते फेसबुक पर खोले हैं। ये हस्तियाँ या संगठन अपने से जुड़ी बातों को अपने प्रशंसकों या समर्थकों के साथ बाँटना चाहते हैं तो आपसी संवाद के लिए फेसबुक का प्रयोग करते हैं।

पिछले दिनों विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर कितने ही साहित्यकारों को अपने साहित्यिक समाचार, कविताएँ, फ़ोटोग्राफ़ आदि लोड करते हुए देखकर अचानक विचार आया कि क्यों न फेसबुक पर अपनी कविताओं को शेयर करने वाले साथियों को लेकर पत्रिका का अंक निकाला जाए। मैंने अपना यह विचार श्री लालित्य ललित के सामने रखा, जो स्वयं फेसबुक पर बहुत अधिक सक्रिय हैं। जब उन्होंने मेरी बात का समर्थन कर दिया तो मैंने इस अंक के संपादन का दायित्व उन्हें ही सौंपने का निश्चय किया। मेरे आग्रह को उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया और तुरंत फेसबुक पर यह समाचार पेस्ट कर दिया। उसका बड़ा रैस्पांस हमें मिला और आज यह अंक आपके समक्ष है। कृपया अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवश्य अवगत कराइएगा।

अनुक्रम

अंजलि दीक्षित	53	प्रदीप शुक्ल	18	शरद सिंह	50
अंतरा करवडे	52	फिरदौस खान	46	शशि पुरवार	25
अंशु रत्नेश त्रिपाठी	55	बीना शर्मा हनी	45	शशि बंसल	34
अजयकुमार मिश्र	20	भारत दोशी	49	शालिनी अगम	44
अनामिका कनोजिया	54	मंजु मिश्रा	53	शालिनी खन्ना	49
अनामिका चक्रवर्ती	54	मनोजकुमार सिंह	19	शालिनी रस्तौगी	30
अनुप्रिया	15	मलिक राजकुमार	11	शुचिता श्रीवास्तव	30
अनुभूति भटनागर	14	महेशकुमार वर्मा	38	शैलेश शुक्ल	29
अनुलताराज नायरा	43	माणिक	51	शोभना मित्तल शुभी	28
अलका पांडेय	20	मीना अग्रवाल	10	संगीताकुमारी	27
आरतीरानी प्रजापति	9	मीना अग्रवाल असीम	48	संजना अभिषेक तिवारी	8
आलोक खरे	38	मुकेशकुमार सिन्हा	33	संजयकांति सेठ	25
आशीष कंधवे	19	रजनी छाबड़ा	41	संध्या शर्मा	27
ओम नागर	16	रज़िया मिर्ज़ा	36	सरस दरबारी	26
कलावंती	12	रश्मि	34	सीमा सक्सेना असीम	12
किशोर दिवसे	8	रश्मि चतुर्वेदी	22	सुधा ओम ढींगरा	26
कौशल उप्रैती	44	राकेश रंजन	47	सुनीता पुष्पराज पांडेय	24
क्षमा सिंह	36	रुचि भल्ला	51	सुनीता शानू	23
खुरशीद खैराडी	50	लालित्य ललित	22	सुभाष नीरव	17
गीतिका गोयल	24	लिली कर्मकार	28	सुषमा दुबे	24
ज्योत्स्ना शर्मा	43	वंदना गुप्ता	32	सुशीला शिवराण	11
दीपक हेमराज दीप	45	वंदना वाजपेयी	40	सोनी पांडेय	23
नंदलाल भारती	40	वत्सला पांडेय	33	हरकीरत हीर	9
निधि सिन्हा निदा	14	वर्षा सिंह	42	हर्षवर्धन आर्य	10
निवेदिता दिनकर	15	वेद व्यथित	38		
निशा कुलश्रेष्ठ	52				
निशा चौधरी	37				
नीलम मेहदीरत्ता गुंचा	37				
नीलम शर्मा अंशु	47				
नीलिमा शर्मा	13				
नीलोत्पल	36				
पूजा प्रजापति	32				
पूजारानी सिंह	15				
पूनम भाटिया पूनम	17				
पूनम शुक्ला	42				
पूर्णिमा बर्मन	31				
प्रकाशचंद्र भट्ट	39				

शोध दिशा

के
आजीवन सदस्य बनिए
और पाइए हिंदी साहित्य निकेतन से
प्रकाशित पुस्तकें आधे मूल्य में।

शोध-दिशा के पाठकों के लिए एक विशेष योजना

शोध-दिशा का आजीवन सदस्यता-शुल्क
1500 रुपए है।

हिंदी साहित्य निकेतन की पुस्तकों की सूची पत्रिका के अंत में प्रकाशित की गई है।

फेसबुक कविता के मायने मेरी नज़र में

बात बहुत ज़्यादा पुरानी नहीं है, लिखना मेरे लिए शुरू से चुनौती भरा रोमांचक सफ़र रहा है, कई संग्रह आने के बाद भी यह लगता रहा है कि अभी भी कुछ छूट रहा है, सो नियमित लिखना शुरू किया। इस लेखन ने ग्लोबल दुनिया से जोड़ा, यानी आपने लिखा और मिनट-भर में आपकी बात सात समंदर पार की यात्रा कर गई और आप रचना पर मिली प्रतिक्रिया से अछूते भी न रहे। पूरी दुनिया में शब्द की ताकत महसूस की, एक साथ असंख्य मित्रों से मिलने का, जुड़ने का मौका मिला, यह भी पता चला कि उनके सरोकार कितने समर्पित हैं अपनी आस्था के प्रति और अपने लेखन के प्रति।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के समय साहित्यकार डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल से मुलाकात हुई। मैं लेखक मंच का प्रभारी था। अधिकांश समय रचनाकारों से विचार-विमर्श कर बीतता था, ऐसे ही एक दिन फेसबुक कविता पर चर्चा के दौरान बात हुई कि मैं शोध दिशा पत्रिका के लिए फेसबुक कविता पर केंद्रित एक अंक का अतिथि संपादन करूँ, मामला वाकई चुनौती-भरा था, तत्काल एक न्यूज़ बनाकर फेसबुक पर चस्पा की, फिर जो होना था, वही हुआ। इस समाचार को देश-दुनिया के रचनाकारों ने 40 से अधिक शेयर किया और रचनाएँ भेजने के लिए लालायित भी होने लगे।

एक बात मज़ेदार थी, जो कहानी लेखक थे, उनमें भी कविता लिखने की होड़ लग गई, कुछ रचनाएँ तेज़ी से मिलीं और कुछ समय बाद तो संपादक डॉ॰ अग्रवाल के कंप्यूटर में मानो सुनामी आ गई, जब मुझे बताया गया कि 100 से भी ज़्यादा रचनकारों ने अपनी रचनाएँ भेज दी हैं। अब वास्तव में यह काम और भी संकट का था कि इसके चयन में सावधानी बरती जाए, और यही हुआ। कभी मैं मेट्रो पकड़ता और गुड़गाँव जा धमकता या कभी संपादक महोदय मेरे यहाँ आ धमकते।

कई रचनाकारों में जोश इतना ज़्यादा था कि उन्होंने वर्तनी की भी चिंता नहीं की, सोचा होगा कि अपन ने तो भेज दी हैं अपनी रचनाएँ, अब सर खपाते रहें संपादक जी।

इस पत्रिका में अपनी रचना के लिए कई मित्रों की सिफ़ारिश भी आई, कि सर देख लेना, हम तो आपके क़द्रदान हैं शुरू से। पर हमने मिलकर यह निर्णय लिया कि सिफ़ारिश की रचनाओं को क़तई स्थान नहीं दिया जाएगा, बल्कि उन नवांकुरों को मौक़ा देना चाहिए, जो लिख रहे हैं नियमित और जिनकी भावनाएँ बड़ी मौलिक हैं, भाव सुंदर हैं।

एक लंबे समय से मैं देख रहा हूँ कि इस साहित्य को आने वाले समय में कोई इग्नोर नहीं कर पाएगा, करना भी नहीं चाहिए। आज सोशल मीडिया के चलते आमूल-चूल परिवर्तन समाज में होते दिखाई दे रहे हैं, यानी कि इसकी अपनी शक्ति है, अपना सामर्थ्य है। आपका लेखन समाज से सीधे-सीधे जुड़ा हुआ है। आज ऐसे कई नाम साहित्यिक पत्रिकाओं में नज़र आने लगे हैं, जो फेसबुक पर सक्रिय हैं और जिनके सरोकार सच्चे हैं।

कई मित्र फेसबुक पर ऐसे भी हैं, जो अपनी फोटो के साथ मौजूद हैं और कई ऐसे भी हैं, जो किसी और के चित्र के साथ अपनी तुलना करने को उत्सुक हैं। खैर, उन्हें जाने दीजिए। आज प्रेमचंद सहजवाला, मुकेशकुमार सिन्हा और अंजू चौधरी के संपादन में गुलमोहर नामक संचयन भी है, जिसमें तीस रचनाकारों की रचनाएँ ली गई हैं, मगर यहाँ एक साथ 9 दर्जन से भी अधिक लेखक मौजूद हैं, जो बेहद संवेदनशील हैं, समर्पित हैं, और जिनके सरोकार बेहद संजीदा और कोमल हैं।

यहाँ मौजूद तमाम रचनाकारों के विषयों में वैविध्य है। कहीं प्रेम है, कहीं अपनी धरती के लिए लगाव और कहीं संबंधों में छाँटते अपने पल का हिसाब। वैसे भी विचारधारा सबकी अलग है, पर एक बात जो सबमें एक है, वह है अपने कर्म के प्रति तटस्थता, जो मुझे बेहद पसंद आई। उम्मीद करता हूँ कि यह पत्रिका अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगी, पत्रिका को अपने जीवन में एक सदस्य बना लीजिये, आप सहयोग कर सकते हैं वार्षिक शुल्क देकर। आप जानते ही हैं कि आज के दौर में पत्रिका निकालना घर फूँक तमाशा देखना है। पत्रिका हमेशा ख़रीदकर पढ़नी चाहिए, यह मैं कहता हूँ, एक दिन आप सब भी कहेंगे।

मित्रो, जिनकी रचनाएँ हम यहाँ शामिल नहीं कर पाए, वे कृपया अन्यथा न लें, अगली बार वे यहाँ ज़रूर दिखेंगे, प्रस्तुत अंक पर आप अपनी राय ज़रूर दीजिए, ताकि आने वाले अंक और भी बेहतर हो सकें। बहुत प्रयास करने पर भी कुछ साथियों ने अपने पते और फोटो नहीं भेजे हैं।

आपका

लालित्य ललित

संजना अभिषेक तिवारी

विचारशील मर्द

मर्दो, विचारशील मर्दो
स्त्री के संपूर्ण शरीर को
अपनी कलम से नापने वाले
दर्जी मर्दो।

स्त्री-विमर्श के नाम पर
स्त्री को नुमाइश बनाने वाले
कारीगर मर्दो।

कभी चरित्रहीन लड़की
कभी गर्भवती नारी
कभी शोषित कहकर
सस्ती लोकप्रियता पाने वाले
कलाकार मर्दो।

पहले पुरुष-विमर्श करो
दिमाग के खंडहर को
रिपेयर करवाकर
सफ़ेदी करवाओ मर्दो।

मेरे जाने के बाद

मेरे जाने के बाद
बहुत चीखेगी मेरी ख़ामोशी
शायद इतना
कि तुम्हारे कान गल जाएँ, सड़ जाएँ
मेरे जाने के बाद
और फिर तब शायद तब
समझोगे तुम
मेरे शब्दों की क़ीमत।

मेरी वो हर बात
जो तुम कभी न सुन सके
बेचैन कर देगी तुम्हें
मेरे जाने के बाद
और फिर तब शायद तब
समझोगे तुम मेरे छटपटाने का राज़।

तुम्हारी जेब में
हाँ वही, दिल के पास वाली
कुछ फटे सपने मिलेंगे तुम्हें
मेरे जाने के बाद।

और फिर तब शायद तब
समझोगे तुम
मेरा आँसू-भरा अट्टहास।

देखो! वो गाना
बिलकुल वही
जो गुनगुनाते थे हम साथ
पानी में बहता मिलेगा तुम्हें
मेरे जाने के बाद
और फिर तब शायद तब
समझोगे तुम
मेरे संगीतमय रुदन का
हर एक सुर-ताल।
मेरे जाने के बाद।

सुविधा

मिट्टी का लौंदा है ये मन
जिसने प्यार से उँगली फेरी
उस ओर झुक गया
त्याग दी अपनी कोमलता
लचीलापन, चमक, कर्मठता
और सूखकर बन गया वो आकृति
जो तुम्हें सुकून दे
जो तुम्हें मनमोहक लगे
और जिससे केवल जिससे
तुमको सुविधा हो।
केवल तुमको सुविधा हो।

C/O IDBI Bank
D- NO- 9/406,A1-A
OPP. New RTC Bus Stand
Main Road Rajampet (Kadpa)
516115A.P.
M: 9533718860

किशोर दिवसे

किया है कभी एहसास

किया है कभी एहसास
स्वप्नरत शिशु की मुस्कान का।
लोरी से उपजे स्पंदन का
सद्य:प्रसूता की
अनमोल तृप्ति का।
यौवनकलशों से लदी
सद्य:स्नाता
और उन केशों की
आदिम गंध का।
भूखी आँतों की अकुलाहट
और
तपिश से दहकते
मरु की रेत का।
इस्पाती औज़ारों से आक्रांत
गर्भस्थ नारी-शिशु की
चीखों का।
चरम पर तेज़ साँसों,
थिरकते लबों
और युगल जिस्म के
नर्तन का।
झुकी कमर, पोपले मुँह
और बूढ़े शरीर पर
उम्र की सलवटों का।
फौजी की पाती में
छिपे विरह
और पाती बाँचती
विरहन का?

बिलासपुर, छत्तीसगढ़
मो॰ 09827471743
kishorediwase0@gmail.com

आरती प्रजापति

कौन है वो

कौन है वो
जो कर रहा है रोज़ निर्माण
हम जैसों का।
जिसके आगे तुम झुकाते हो सिर
और शायद
पाते हो शक्ति हमें कुचलने की।
कौन है वो जो तुम्हारे मुताबिक
करवाता है तुमसे हर काम
जिसके चाहे बिना
नहीं हिलता तुम्हारा पत्ता भी।
तुम्हारा वो कौन है?
जिसके सामने रोज़
नंगी होती हैं लड़कियाँ
और वो
चुपचाप हाथ में हथियार लिए
खड़ा रहता है मुस्कराते हुए।
कौन है वो जो बनाता है
शायद हमें नहीं
इसलिए देखता है
हमारे साथ होता भेदभाव
सदियों से।

इज़्ज़त

हम महत्त्वहीन हैं
पूरे घर-परिवार के लिए
पर ज्यों ही नाम आता है
हमारी तथाकथित इज़्ज़त का
हम महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं।

सी-77, **शिवगली, नानकचंद बस्ती**
कोटला मुबारकपुर, नई दिल्ली
110003 **मोबाइल** 08447121829
ई-मेल:Aar.prajapati@gmail.com

हरकीरत हीर

मुहब्बत कब मरी है

चलो आज लिख देते हैं
सिलसिलेवार दास्तान
तमाम उम्र के मुर्दा शब्दों की
जहाँ मुहब्बतों के कितने ही फूल
ख़ुदकुशी कर सोए पड़े हैं क़ब्रों में
तुम बताना स्याह लफ़्ज
पागल क्यों होना चाहते थे
टूटे चाँद की जुबान ख़ामोश क्यों थी
कोई क़ैद कर लेता है बामशक्कत
मुहब्बतों के पेड़ों की छाँव
दो टुकड़ों में काटकर
फेंक देता है चनाब में
सुनो, मुहब्बत कब मरी है
वह तो ज़िंदा है क़ब्र में भी
कभी मेरी आँखों से झाँककर देखना
उस संगमरमरी बुत में भी
वह मुस्कराएगी।
यक़ीनन वह फिर लिखेगी इतिहास
'कुबूल-कुबूल' की जगह वह
नकार देगी
तुम्हारी हैवानियत की तल्ख़ आवाज़
बिस्तर पर चिने जाने से बेहतर है
वह खरोंच ले अपने जख़्म
और बुझे हुए अक्षरों से
फिर मुहब्बत लिख दे!

गिरती इंसानियत

अभी-अभी
गोद से कुछ गिरा है
बादलों की गर्जन सुन कोख टूटी है
कोई चीख़ ज़हर बन हड्डियों में
उतर आई है।

सुनो, तुम इस मोहल्ले का नाम
तब्दील कर दो
यहाँ के लोगों की आँखों में
ख़त्म हो गई है इंसानियत
झूठ, फ़रेब, मक्कारी कुछ भी रख दो
कम-से-कम मेरी नज़रें
झुकी तो न होंगी।

बलात्कार की घटनाओं पर

तुम लिखो
मृदु, सौम्य, सुंदर शब्दों से
मीठी, गुदगुदाती, प्रेमरस में भीगी
सुकोमल, मधुर कविता
पर मेरी क़लम
अब स्याही नहीं उगलती
उससे निकलती है आग
मैं झुलसा देना चाहती हूँ
उस आग से
तुम्हारे उन अंगों को जिससे तुमने
नन्ही मासूम मुस्कानों से
किया है बलात्कार!!

हक़

क्या चाहते हो?
औरत हूँ दो आँसू बहाकर
चुप हो जाऊँ?
और तुम वहशीपन से
नोचते रहो मेरा जिस्म?
हक़ जितना तुम्हें है
उतना ही मुझे भी है आज़ादी से
जीने का।

18 **ईस्ट लेन, सुंदरपुर, हाउस नं॰** 5
गुवाहाटी 781005 **असम**
मो॰ 09864171300
harkirathaqeer@gmail.com

डॉ॰ मीना अग्रवाल

बोलता प्रश्न

क्यों नहीं है उसको
बोलने का अधिकार
या फिर अपनी बात को
कहने का अधिकार,
क्यों नहीं है अपनी पीड़ा को
बाँटने का अधिकार,
क्यों नहीं है
ग़लत को ग़लत कहने का अधिकार!
क्यों चारों ओर उसके
लगा दी जाती है/ कैक्टस की बाड़
क्यों कर दिया जाता है ख़ामोश
क्यों नहीं बोलने दिया जाता उसे?
यह प्रश्न अनवरत
उठता रहता है मन में,
बिजली-सी कौंधती रहती है
मस्तिष्क में।
बचपन से अब तक
कभी भी अपनी बात को
निर्द्वंद्व होकर कहने की
हिम्मत नहीं जुटा पाई है वह।
जब भी कुछ कहने का
करती है प्रयास;
मुँह खोलने का करती है साहस
तभी लगा दिया जाता है
चुप रहने का विराम।

आठ की अवस्था हो
या फिर साठ की
वही स्थिति, वही मानसिकता;
आख़िर किससे कहे
अपनी करुण-कथा
और किसको सुनाए
अपनी गहन व्यथा।
जन्म लेते ही/ समाज द्वारा तिरस्कार
पिता की दुत्कार
फिर भाइयों के ग़ुस्से की मार
ससुराल में पति के अत्याचार
सास-ननद के कटाक्षों के वार
वृद्धावस्था में बेटे की फटकार
बहू का विषैला व्यवहार–
सब-कुछ सहते-सहते
टूट जाती है वह,
क्योंकि उसे तो/ मिले हैं विरासत में
सब-कुछ सहने और
कुछ न कहने के संस्कार।

यदि ऐसा ही रहा/ समाज का बर्ताव
मिलते रहे उसे घाव पर घाव,
ऐसी ही रही चुप्पी चारों ओर,
तो शायद मन की घुटन
तोड़ देगी अंतर्मन को,
अंदर-ही-अंदर,
फैलता रहेगा विष/ घुटती रहेंगी साँसें
टूटती रहेंगी आसें
तो जिस बात को
वह करना चाहती है अभिव्यक्त
वह उसके साथ ही चली जाएगी,
फिर इसी तरह घुटती रहेंगी बेटियाँ,
ऐसे ही टूटता रहेगा
उनका तन और मन,
होते रहेंगे अत्याचार;
होती रहेंगी वे समाज की
घिनौनी मानसिकता का शिकार।
कब बदलेगा समय!

कब आएगा वह दिन
जब नारी की बात
उसकी पीड़ा, उसकी चुभन
उसके मन का संत्रास
समझेगा यह समाज,
विश्वास है उसे
कि वह दिन आएगा/ ज़रूर आएगा।

16 **साहित्य विहार**
बिजनौर (उ॰प्र॰) 246701
मो॰ 07838090237

हर्षवर्धन आर्य

लिबास

पूछता हूँ माँ से
माँ?
जब मैं पहली बार
आया था तेरी गोद में
तब कौनसा लिबास था
मेरे तन पर
तेरे आँचल के सिवा,
पर, अब जो दिया है लिबास
ज़माने ने मुझे
बुने हैं उसमें रिश्ते
स्वार्थ की सुई और
घृणा तथा प्यार के धागों से,
जो उलझ गए हैं
इस तरह
कि ढूँढ़ता हूँ एक सिरा
तो उलझ जाता हूँ स्वयं
काश! माँ, ओढ़कर मैं
फिर तेरा आँचल,
बना लूँ लिबास
और लौट जाऊँ बचपन में
जो है धर्म, अर्थ, काम के
बंधनों से परे
ख़ुशी और आनंद प्रतिपल
छलकता है जहाँ!

2497/191, **ओंकारनगर, त्रिनगर**
जैन स्थानक रोड
दिल्ली 110035
मो॰ 09968421236
aryaharshvardhan2@gmail.com

मलिक राजकुमार

लड़ाई

लड़ाई, बस लड़ाई है दामिनी
भीतर लड़ी जाए या बाहर
स्वयं से, अन्यों से
एक से या समूह से
गुज़रना होता है एक प्रक्रिया से।

लड़ाई छोटी हो या बड़ी हो
नहीं लड़ी जाती एक दिन में
पैना करना पड़ता है
अपने हर अस्त्र को
जायज-नाजायज की सोच से परे
उससे अधिक ज़रूरी है
एक ढाल का होना
और होना उस पर
मजबूत पकड़ की तमीज़
हम ढाल बनाएँगे तुमको।

जब और यदि हमें आ जाएगा
ढाल को पकड़कर
अस्त्रों का प्रयोग करना
लड़ाई में जीत हमारी होगी।

तैयारी ही करते रहे तो
लड़ाई हार चुके होंगे
मैदान में आने से पूर्व ही
क्योंकि कोई भी लड़ाई
नहीं लड़ी जाती एक दिन में।

दामिनी ऊर्जा बनो
शक्ति दो, विश्वास दो
हर लो हमारी निराशा, हताशा
पथ पथरीला ज़रूर है
पर संकल्प दृढ़ है हमारा
हमारी दृढ़ता को संबल दो
हम कूद पड़े हैं
हक की लड़ाई में।

लड़कियाँ

कितनी कच्ची होती है
हँसी लड़कियों की
चिड़ियों की चीं-चीं-सी
निकल पड़ती है
खिल-खिल
झट से बुनने लगती हैं
सपने भविष्य के लड़कियाँ
या कुछ भी
हाथों में लेकर
हँसी को मुस्कराहट बनाकर
गुम हो जाती हैं
गुड़ियों के संसार में।

अपनी कल्पना की
सलाइयों पर
आशाओं की डोरियों से
बुनती हैं सपने भविष्य के
रचती हैं कल का संसार
मुस्कराहट को
ख़ामोशी में बदल
जाकर उस संसार में
लड़कियों की पलकों में
नृत्य करने लगती हैं
ढेरों करुण कहानियाँ।

ख़मोशी को आँसू बना
तलाशती हैं
उलझी डोरियों के छोर
और हारकर
छोड़ देती हैं
नियति के भरोसे
पता नहीं क्यों करती हैं
यह सब झमेला लड़कियाँ।

ऐ-1/28 **मिआवली नगर**
दिल्ली 110087
मो॰ 9810116001

सुशीला शिवराण

क्षणिकाएँ

1.
उगती-मिटती
दफन होती प्रेम कहानियाँ
टूटते-बिखरते वजूद
सदियों देखते रहे मूक
क्या करते अगर
पत्थर न होते परबत!

2.
तमाम दिन तो
जलता रहा सूरज
डूबते-डूबते
पत्थर को चाँद कर गया।

3.
माँ
जलाकर दिए
बिखेर देती रोशनी
सहेज लेती
लौ से धुएँ की रेख
आँज देती काजल
हर सुबह।

बदरीनाथ-813
जलवायु टॉवर्स
सेक्टर-56, गुड़गाँव 122011
मो॰ 09873172784
sushilashivran@gmail.com

सीमा सक्सेना 'असीम'

प्यार तुम्हारा

तुम्हारा प्यार है
रूई के नर्म फाहे के जैसा
जो सहलाता है
जख़्मी रिसती चोट को
प्यार से धीरे-धीरे
फिर ढक लेता है
अपने कोमल नर्म एहसास तले
दर्द, तकलीफ़ को
अपने अंदर समेटकर
ले आता है मुस्कुराहट
पीड़ा से छटपटाते चेहरे पर
दिल में प्यार जगाते हुए
भर देता है ललक
जीवन जीने की
मंज़िल की ओर
बढ़ते हुए जो क़दम ठिठक गए थे
चोट खाकर
उनमें भर है देता है रवानगी।

मैं मौन थी

मैं मौन थी
फिर भी तुम ताड़ गए
पढ़ लिया मुझे मेरे भावों से
स्वप्नों से भरी मेरी आँखें देख
चूमकर सजीव कर गए
मेरे मौन को भी
अब सुन रहे हो, समझ रहे हो।
एक साथ है तुम्हारा
तो कुछ बोझिल नहीं
हँसी है, खुशी है
और है मुस्कुराहट होठों पर
साथ हो तुम
तो सब रास्ते आसान हो जाते हैं
किसी राह पर डगमगा जाती हूँ
तो तुम्हारी बाहें दे देती हैं सहारा
घबरा जाती हूँ जब कभी
तब तुम्हारी बातें
बँधा जाती हैं ढाढ़स
प्यार से समझाते हुए
कोई भी पथ कोई भी डगर
आसान हो जाती है
जब साथ हो तुम्हारा।

औपचारिक

इतनी औपचारिकता, इतनी बेरुख़ी
तुम कैसे कर सकती हो
तुम तो प्यार करती हो?
हाँ सच कहा
मैं ही तो करती हूँ तुमसे प्यार
तुम्हारा इंतज़ार
तुम्हारी हर ग़लती को माफ़ करते हुए
तुम्हारी अपेक्षाओं पर भी
नाराज़ न होते हुए
और तुम करते हो मेरा उपयोग
तभी तो लाद देते हो
गहनों के बोझ तले।
तुम्हें चूड़ियों की खनकार,
पायलों की झनकार लुभाती है
और मुझे बनाती है
हथकड़ी बेड़ी के सामान लाचार
मेरे काले, लंबे, घने बालों से
खेलते हुए
कजरारे नैनों की गहराइयों में
उतर जाते हो
तो मैं शरमा-सकुचा जाती हूँ
तो उन्हीं पलों में डाल देते हो भार
एक अनचाही संतान का।

208 **डी, कालेज रोड, निकट रोडवेज**
बरेली (उ०प्र०) 243001
मो० 09458606469

कलावंती

लड़की

लड़की भागती है
सपनों में, डायरी में
लड़की डर से भागती है,
डर की तलाश में।
लड़की देखती है उड़ती पतंगें और
तौलती है पांव।
उसके देह से निकली खुशबू
फैलती है,
घर, आँगन, तुलसी और देहरी तक।
बाबूजी की चिंताओं-सी ताड़ हुई,
अम्मा की खीझ में पहाड़ हुई ,
लड़की घुटनों में सिर डाले
उलझे-उलझे सपनों में
आधी सोती, आधी जागती
सोचती है, एकदिन
जब उसके मन के दरवाज़े होंगे
साझीदार
और खिड़कियाँ गवाह।
वह दूब से उसका हरापन माँग लाएगी,
सूरज से उधार लेगी रौशनी।
चिड़िया से पूछेगी दिशा,
और आसमान का नीला रंग
उसके दुपट्टे में सिमट आएगा।

नारी

वेदमंत्रों में उच्चरित
अर्द्धनारीश्वर की महिमा मुझे तो
कहीं दिखती नहीं, इसलिए बहुत
सोचती हूँ इस पर
मेरी सारी सोच जब किसी निराश
बिंदु पर जाकर ठहर जाती है

तो मेरी पूरी कोशिश होती है
मैं इस बंद दरवाज़े के आगे की
कोई राह तलाश लूँ।
औरत से जुड़ी मेरी अनुभूतियाँ
कैनवास की खोज करती
काग़ज़ पर उतरने से रुकती हैं,
काँपती हैं।
नारी तुमसे जुड़े अंत
नकारात्मक ही क्यों
ठहरते हैं मेरी चेतना में।
तुम उर्वशी हो, अहिल्या हो
कैकेयी हो, कौशल्या हो
किंतु तुम सबकी नियति
किसी-न-किसी राम या गौतम से
जुड़ी है!

प्रेम

मैंने कहा प्रेम,
और झर पड़े कुछ हरसिंगार।
मैंने कहा स्नेह,
और बिछ गए गुलाब।
मैंने कहा मित्रता, और भर गयी
सिर से पाँव तक अमलतास से,
और ज़िंदगी
तुम्हारी शुभाकांक्षाओं के उजास से।

स्त्रियाँ

अक्सर
स्त्रियाँ सुख का हाथ छोड़कर
दुख को पार करा देती है सड़क,
डर के चूल्हे-चौके, बरतन-बासन
की तरह ही है डरवाला भी
उसकी गृहस्थी का एक औज़ार,
कभी-कभी सहती जूतम-पैजार
गए के लौटने का करती है इंतज़ार।
कि कहाँ जाएगा बुद्धू
लौट के डर को आएगा बुद्धू।

जनसंपर्क विभाग, रांची रेल मंडल
टी 32 **बी, नार्थ रेलवे कॉलोनी**
राँची-834001
मो. 9771484961.

नीलिमा शर्मा

चाबियाँ

चाबियाँ
तब तक क़ीमती होती हैं
जब तक रहती हैं ताले के इर्द-गिर्द
और तब तक बना रहता है
उनका वजूद और कीमत
जिस दिन ताला जंक से भर जाता है
और फिट नहीं रहती
उसकी अपनी ही चाबी
उसके वजूद में
लाख तेल डालने
और कोशिशों के बावजूद!
तब हाँ तब!!
बनवाई जाती है उसके लिए
एक नई चाबी
जो खोल सके उसके बंद कोषों को
और नई चाबी के वजूद में आते ही
फेंक दी जाती है पुरानी चाबी
एक अनुपयोगी वस्तु की तरह
किसी भी दराज़ में या कूड़ेदान में
क्योंकि चाबी स्त्रीलिंग वस्तु है
उसका हश्र यही होता आया है
सदियों से।

आँसू के चंद कतरे

जो कहा नहीं जाता लबों से
उसे अक्सर
रोया जाता है दिल से
और बहाया जाता है आँखों से
लफ़्ज़ होते हैं
हर बूँद में आँसू की
और लोग अक्सर
उनको छिपाते हैं
सबसे ख़ासकर अपने अपनों से
क्योंकि ज़िंदगी के रहस्य
या तो लब
बयाँ करते हैं
या फिर आँसू के चंद कतरे।

स्त्री का एकांत

क्यों!!
आख़िर क्यों पूछ लिया
एक स्त्री का एकांत
जिसका कभी अंत नहीं
बचपन से बुढ़ापे तक।

सिसकता बचपन, हुलसाती जवानी
कराहती साँझ
सिसकती उम्र की निशानी।
हर पल स्व को मार,
पर में खुश होती
पुरुष के अहम् को
अपने अस्तित्व पर ढोती।

झूठे नक़ाब के पीछे मुखौटे पहचानती
नियति के ज़हर को भी अमृत मानती
अपने अपनों के बीच पराई-सी
साधनों की भरमार
तन-मन की सताई-सी।

कितना सूना होता है
इनके मन का कोना
रिश्तों की भीड़
पर अपना कोई भी ना
यह ज़िंदगी भी क्या है
एक नारी की
महज एक मृगतृष्णा।

टीचर्स कॉलोनी गोविंदगढ़
देहरादून 248001
http://thoughtpari.blogspot.in
मेरी काव्यरचनाओं का ब्लॉग http:/
doonitesblog.blogspot.in मेरे
संस्मरणों का ब्लॉग।

अनुपूर्णा भटनागर

बचपन

याद आता है बचपन बार-बार।
सुबह उठती
तो चारों ओर होते थे गिफ्ट,
चॉकलेट, टॉफी, ड्रेस
और उसमें भरा,
माँ, पापा और दीदी का अपार प्यार।
सहेलियों को जन्मदिवस पर बुलाना,
नए-नए कपड़े पहनना,
पार्टी होती थी छत पर,
खूब होता था शोर,
पीछे के आँगन में
बनता था केक और खाना,
शाम को दोस्तों का आना,
प्यार से आंटी-अंकल का पुचकारना,
आशीर्वाद देना, गले लगाना,
फिर होता था शुरू नाच-गाना।
रात आती तो मन प्रसन्न हो जाता,
अब तो बस गिफ्टों वाला
कमरा याद आता,
गिफ्ट खुलते,
कुछ से खेलते कुछ डबल होते,
तो उठाकर माँ-पापा
सँभालकर रख देते।
बहुत याद आता है बचपन,
बहुत याद आता है, वो मेरा घर,
वो मेरी छत, वो मेरे दोस्त,
बहुत याद आता है वो नाचना,
हलवाई का बनाया वो मावे का केक,
बहुत याद आता है।

बी-203, **पार्क व्यू सिटी**-2
सोहना रोड, गुड़गाँव 122018
मो॰ 09958070700

निधि सिन्हा निधा

अनुभूति

कौन कहता है तुम नहीं हो,
तुम यहीं तो हो,
सुबह अलसाई आँखों के साथ,
उँगली पकड़कर मुझे उठाते हो,
तुम ही तो हो।
काम के बोझ से जब
झुँझलाने लगती हूँ मैं
आके मेरे कानों में
हौले से गुनगुनाते हो,
तुम ही तो हो।
दिनभर थककर चूर होती
मेरी देह जब बिस्तर पर ढेर होती है
मेरे बालों को हौले से सहलाते हो
तुम ही तो हो।
जब इक पल भी तन्हा होती हूँ
तो चुपके से आ जाते हो,
तुम ही तो हो
देर तक दूर होती है जब नींद
इन आँखों से
अपने होंठों से छूकर
तुम अहसास की लोरी गाते हो,
मुझे नींद के आगोश में
आलिंगन कर ले जाते हो
मेरे ख़्वाबों के आशियाँ में
शब-भर सितारे जड़ते हो,
तुम ही तो हो
कौन कहता है तुम नहीं हो,
तुम यहीं तो हो।

तुम्हारा आभास

मेरे लिए तुम्हारा साथ
जैसे अँधेरे जीवन में दीपक का प्रकाश,
जैसे पथरीली ज़मीन पर
बादल की आस,
जैसे धीमे से बजता
कोई सुरीला साज,
जैसे हौले ही आ जाए
जीवन में मधुमास,
जैसे मज़दूर के दिल में
आशियाने की प्यास,
जैसे अमावस की रात में
तारों भरा आकाश,
हर पल रहता मेरे साथ
तुम्हारा प्यार, तुम्हारा अहसास,
फिर भी सालता है मन को
तुमसे निरंतर दूरी का आभास,
थमती साँसें कहती हैं अब
आ भी जाओ मेरे पास,
आ भी जाओ मेरे पास।

मिर्जा मंडी कालपी,
जिला जालौन उ॰प्र॰ 285204
मो॰ 09198822274
ईमेल : nidhi.kalpi@gmail.com

पूजारानी सिंह

मुश्किलें

मुश्किलों से रोज़ लड़ना,
तो मेरे ही हक़ में है
जा तुझे दे दी है मैंने,
ज़माने-भर की हर खुशी
पर, ग़मों के दरिया में बहना,
बस मेरे ही हक़ में है
बनकर तेरी मैं हँसी,
जी रही हूँ ये ज़िंदगी
तेरे सारे दर्द सहना,
अब मेरे ही हक़ में है।
आ जरा नज़र-भर देख लूँ,
तेरी हर बला को उतार लूँ,
तुझे चूमकर सब वार लूँ,
तुझे प्यार से सब बाँट चलना,
हाँ! मेरे ही हक़ में है।

2183, SobhaAmethyst
Kannamangala
Whitefield hoskote main road
Whitefield
Bangalore , Karnataka 560067
मो॰ 09916977110

निवेदिता दिनकर

जैसे कोई किरदार

जेहन में जुस्तजू
झीनी-सी तृषा लिए
कैसे-कैसे नाज़ुक मोड़
कभी सावन-भादों में सूखे रहना
तो कभी बेचारा बेरंग फागुन
ऊबड़-खाबड़ हो
या बीजुरी-सी जगमग,
कब मैं समाती चली गई
होके बेकरार
जैसे कहानी की कोई किरदार
जैसे कहानी की कोई किरदार।

अवहेलित हुई, व्यथित हुई
दे न सकी दलील सही,
कतरा-कतरा बावड़ी मेरी
सकुचाती रही, सिमटती रही
कब मैं लहराती चली गई
होके बलिहार
जैसे कहानी की कोई किरदार।
जैसे कहानी की कोई किरदार।

सुलग रही हैं तमन्नाएँ,
पिघल रही धड़कनों की चादर
फिरकनी बन फिरती रही...
कितने गिरह कितनी चुप्पी
कब मैं ढकती चली गई
डूब के बारंबार
जैसे कहानी की कोई किरदार।

एच॰आई॰जी॰ 441, **सेक्टर** 16
आवास विकास, सिकंदरा
आगरा 282007
मो॰ 09837081099

अनुप्रिया

हाँ

हाँ, प्यार किया तो था
कभी छुपाया ही नहीं
नहीं लजाई, शरमाई औरों की तरह
और न ही अपने भीतर के
अहसासों को रोका कभी
एक बात ज़रूर हुई
फ़ज़ीहत
हाँ यही तो कहते हैं न
तुम्हारी सभ्य भाषा में
जो भी महसूस किया
बताया और जताया भी
रात-रात भर
रोते-धोते काटी
चिट्ठियों के इंतज़ार में
उस डाकिये का भी किया इंतज़ार
महीनों मुस्कुराई नहीं
कि तुम उदास होगे
उसी निचली सीढ़ी पर बैठकर
तुम्हारी कितनी ही बातें कीं
जिस पर बैठा करते थे तुम।
कितने दिनों तक
पेट भर खाया नहीं
कि तुमने खाया होगा या
गुस्से में निकल गए होगे भूखे ही।
हाँ प्यार किया तो था
और कभी छुपाया भी नहीं।

श्री चैतन्य योग, गली नंबर 27,
फ्लैट नंबर 817
चौथी मंजिल, डीडीए फ्लैट्स
मदनगीर, नई दिल्ली 110062
मो॰ 9871973888
anupriyayoga@gmail.com

ओम नागर

भूख का अधिनियम : तीन कविताएँ

एक

शायद किसी भी भाषा के
शब्दकोश में
अपनी पूरी भयावहता के साथ
मौजूद रहने वाला शब्द है भूख
जीवन में कई-कई बार
पूर्ण विराम की तलाश में
कौमाओं के अवरोध
नहीं फलाँग पाती भूख।

पूरे विस्मय के साथ
समय के कंठ में
अर्द्धचंद्राकार झूलती रहती है
कभी न उतारे जा सकने वाले
गहनों की तरह।

छोटी-बड़ी मात्राओं से उकताई
भूख की बारहखड़ी
हर पल गढ़ती है जीवन का व्याकरण।

आख़िरी साँस तक फड़फड़ाते हैं
भूख के पंख
कठफोड़े की
लहूलुहान सख़्त चोंच
अनथक टीचती रहती है
समय का काठ।

भूख के पंजों में
जकड़ी यह पृथ्वी
अपनी ही परिधि में सरकती हुई
लौट आती है आरंभ पर
जहाँ भूख की बदौलत
बह रही होती है एक नदी।

दो

एक दिन भूख के भूकंप से
थरथरा उठेगी धरा
इस थरथराहट में
तुम्हारी कँपकँपाहट का
कितना योगदान
यह शायद तुम भी नहीं जानते
तने के वजूद को
क़ायम रखने के लिए
पत्तियों की मौजूदगी की
दरकार का रहस्य
जंगलों ने भरा है अग्नि का पेट।

भूख ने हमेशा से बनाए रखा
पेट और पीठ के दरमियाँ
एक फ़ासला
पेट के लिए पीठ ने ढोया
दुनिया-भर का बोझा
पेट की तलवार का
हर वार सहा
पीठ की ढाल ने।

भूख के विलोम की तलाश में
निकले लोग
आज तलक नहीं तलाश सके
पर्याय के भँवर में डूबती रही
भूख का समाधान।

तीन

इन दिनों
जितनी लंबी फेहरिस्त है
भूख को भूखों मारने वालों की
उससे कई गुना भूखे पेट
फुटपाथ पर
बदल रहे होते हैं करवटें।

इसी दरमियाँ
भूख से बेकल एक कुतिया
निगल चुकी होती है
अपनी ही संतानें
घीसू बेच चुका होता है कफ़न
कालकोठरी से निकल आती है
बूढ़ी काकी
इरोम शर्मिला चानू
पूरा कर चुकी होती है
भूख का एक दशक।

यहाँ हज़ारों लोग भूख काटकर
देह की ज्यामिति को साधने में
जुटे रहते हैं आठों पहर
वहाँ लाखों लोग पेट काटकर
नीड़ों में
सहमे चूजों के हलक में
डाल रहे होते हैं दाना।

एक दिन भूख का बवंडर
उड़ा ले जाएगा अपने साथ
तुम्हारे चमचमाते नीड़
अट्टालिकाओं पर
फड़फड़ाती झंडियाँ
हो जाएँगी चीर-चीर
फिर भूख स्वयं गढ़ेगी अपना
अधिनियम।

3-**ए**-26, **महावीरनगर तृतीय,**
कोटा 324005 **(राज॰)**
मो॰ 09460677638, 80039 45548
ई-मेल– omnagaretv@gmail.com

पूनम माटिया पूनम

प्रणय-सूत्र

कितना अद्‌भुत ये अहसास
हाथों में जब दिए थे हाथ
हरे काँच की चूड़ियाँ
हिना रचे थे हाथ।

शुभ मुहूरत, मित्र नक्षत्र
प्रणय-सूत्र में बाँध विश्वास
चली आई पिया के घर
छोड़ बाबुल घर-द्वार।

इक-इक पल तरसे मन
ज्यूँ मीन को जल की प्यास
ओझल थे आँखों से प्रीतम
थमती नहीं थी श्वास।

नव-पल्लव-सी ढूँढ रही
इत-उत स्नेह की छाँव
खोज रही थी उत्तर प्रश्न का
होगा कैसे निर्वाह।

थी उथल-पुथल,
आशंकित था मन
पर थी याद माँ की बात
इसलिए बँधी हुई थी आस।

जीत ही लेगी दिलों को सबके
बाँटेगी जब तू प्रीत
पथ निष्कंटक हो जाएगा
जब साथ चलेंगे मीत।

सिमटता आकाश

बड़ी-सी बचपन की छत
दूर तक फैला था गगन
बादलों में बनती-बिगड़ती
आकृतियों-संग जुड़े थे स्वप्न।

आज बंद,
चौकोर-सा कमरा
कमरे की छोटी-सी छत
बस उतने में ही सिमटी
रह गई अब हर हक़ीक़त।

अनंत, बिन कोने का
गोलाकार आकाश था कैनवास
ज़माने के बदले रंग-ढंग
कैनवास में भी आ गई सिकुड़न।

चकरी की भाँति
अपनी ही धुरी पर घूमता
छत से लटका पंखा
अपना-सा है लगने लगा।

सोच का दायरा बढ़ा भी लें
तो आख़िर कितना
आवाज़ टकरा के लौट आती है
दीवारों से तुरंत।

सिर्फ़ मेरा ही नहीं
हाल है ये हर उस शख़्स का
जिसने देखी होगी कभी
तारों की अनंत दीपशिखा
अपनी ही मुठ्ठी में
क़ैद करने की सँजोई होगी चाह।

भागम-भाग, छुपन-छुपाई
खेल-खेल में चढ़ाई होगी श्वास
बिस्तर पे लेटते ही
नानी-दादी से सुने होंगे क़िस्से
और बातों-बातों में नींद
ले लेती होगी आगोश में।

आज नींद रहती कोसों दूर
कूलर, ए॰सी॰ भी अक्षम
शरीर खुद को लगता है बोझ
न खेलने में, न काम में सक्षम।

सुभाष नीरव

नाखून

इन दिनों
नाखून मेरी कविता का
हिस्सा होना चाहते हैं।

इस पर मेरे कवि मित्र हँसते हैं
और कहते हैं–
कविता की संवेदन-भूमि पर
नाखूनों का क्या काम?
नाखूनों पर बात हो सकती है
कविता नहीं।

जैसे यह जानते हुए भी कि
नाखून रोग का कारण होते हैं
फिर भी फैशनपरस्त
और पढ़ी-लिखी स्त्रियों को
बहुत प्रिय होते हैं नाखून।

अधिक कहें तो
एक निहत्थे आदमी का
हथियार होते हैं नाखून
जो मौका मिलने पर नोंच लेते हैं
दुश्मन का चेहरा।

पर दोस्तो
मेरे सामने एक ओर नाखून हैं
और दूसरी तरफ धागे की गुंजलक-सा
उलझा मेरा देश
और हम सब जानते हैं
गाँठों और गुंजलकों को खोलने में
कितने कारगर होते हैं नाखून।

372, **टाइप**-4, **लक्ष्मीबाईनगर**
नई दिल्ली 110023
फोन : 09810534373, 08447252120
ई मेल: subhashneerav@gmail.com

डॉ. प्रदीप शुक्ल

कुछ मुकरियाँ

1.
बहुत खूब है धक्का-मुक्की
नहीं किसी की जगहें पक्की
कुछ-कुछ दूर पे चढ़ा उतार
क्या सखि रेल?
ना संसार!!

2.
भौजी भी चाहें वो आय
ननदी घूम रही बौराय
वो आए तो आया पाहुन
क्या सखि साजन?
ना सखि फागुन!!

3.
कितना वो तरसा के आया
फिरता पूरे दिन बौराया
मुझसे मत कहलाओ बहना
क्या सखि साजन?
ना सखि फागुन!

4.
नया हमेशा सुंदर लगता
हुआ पुराना जर्जर दिखता
धीरे-धीरे उधड़े सीवन
क्या सखि कपड़ा?
ना सखि जीवन!

गीत

जो सपने हों सब अपने हों, सपनों का मर जाना कैसा
सपने बस सपने होते हैं, ऐसा कोई बहाना कैसा!!

करें कल्पना हम सपने में, मूर्त रूप देने को तत्पर
आगे बढ़ते ही जाना है, काँटे कितने भी हों पथ पर
सफल वही होते जीवन में, सतत परिश्रम जो करते हैं
अवरोधों के पार छलाँगें, उनसे आँख चुराना कैसा
जो सपने हों सब अपने हों, सपनों का मर जाना कैसा!

सदियों से ये होता आया, जिसने सोचा उसने पाया
जिसके लक्ष्य रहे धूमिल से, जीवन में वो ही पछताया
एक बार जो ठान लिया बस, उसको पूरा ही करना है
विजयी रेखा को छूना है, पहले ही रुक जाना कैसा
जो सपने हों सब अपने हों, सपनों का मर जाना कैसा!

रोक नहीं सकता कोई अब, चाहे कितना ज़ोर लगा ले
प्रतिपल बस आगे चलना है, देख नहीं पैरों के छाले
जिसके सपने देख रहा तू, वो मंज़िल अब दूर नहीं है
गिरना तो चलने का हिस्सा, गिरने से डर जाना कैसा
जो सपने हों सब अपने हों, सपनों का मर जाना कैसा!

जीवन के संघर्षों से हम, अक्सर ही घबरा जाते हैं
और सामने देख मुसीबत, अक्सर हम चकरा जाते हैं
मन जितना ही धवल रहेगा, जीवन उतना सरल रहेगा
जीवन का पथ सीधा-सादा, उसको फिर उलझाना कैसा
जो सपने हों सब अपने हों, सपनों का मर जाना कैसा

कुछ सपने जो टूट गए तो, अंधकार छाया क्यों मन में
आशा की किरणें समेट फिर, उजियारा आए जीवन में
फिर नवीन सपनों के अंकुर, अंतर्मन से उग आएँगे
जीवन तो बहता दरिया है, उसका फिर थम जाना कैसा
जो सपने हों सब अपने हों, सपनों का मर जाना कैसा।

जो सपने हों सब अपने हों, सपनों का मर जाना कैसा
सपने बस सपने होते हैं, ऐसा कोई बहाना कैसा !!

बालरोग विशेषज्ञ
गंगा चिल्ड्रन्स हॉस्पिटल
सेक्टर डी, LDA **कालोनी, कानपुर रोड, लखनऊ**
226012; **फोन :** 09415029713, 0522-4004026

डॉ॰ मनोजकुमार सिंह

सोचता हूँ लिखूँ एक कविता

सोचता हूँ लिखूँ एक कविता
एक ऐसी कविता
जिसे लिख सकूँ
और दिख सकूँ मैं खुद उसमें
सुना है आसान नहीं है कविता लिखना
सचमुच कविता लिखना
कविता होना है
जैसे आग जलाने के लिए
ताप का होना
जब भी बैठता हूँ कविता लिखने
लिख नहीं पाता एक भी शब्द
तब फाड़ने लगता हूँ काग़ज़ कोरा
पारने लगता हूँ
टेढ़ी-मेढ़ी लकीर यूँ ही
जिसमें देखता हूँ अनायास
एक पेड़
पेड़ में उड़ने को आतुर
एक ख़ूबसूरत चिड़िया
चिड़िया में एक लड़की
लड़की में इंद्रधनुषी आकाश
आकाश में खिलखिलाता चाँद
चाँद में सपने
सपनों में रंगों की बारिश
बारिश में भीगते पेड़
पेड़ के नीचे भीगती लड़की
लड़की में भीगता मैं सर्वांग
सोचता हूँ लिखूँ एक कविता।

जवाहर नवोदय विद्यालय, भोगाँव,
जिला मैनपुरी (उ॰प्र॰) 205262;
मोबाइल : 09456256597

आशीष कुंधवे

यही तो मैं हूँ

मुझे मालूम है
और तुम्हें भी मालूम है
कि तुम सब जानती हो
और मैं भी सब जनता हूँ
फिर भी हम छुपते रहते हैं
एक-दूसरे से
छुपाते रहते हैं एक-दूसरे को
अपने-आपसे।
और चुप हो जाते हैं
खो जाते हैं समय की धार में
हमेशा के लिए।

यही तो प्यार है
यही तो तुम हो
यही तो मैं हूँ
सच कहा ना
कुछ तो बोलो!!

दोस्त

ढल जाता है सूरज
और मिट जाती हैं यादें
सुबह की
कौन मिला था किससे
किसने पुकारा था किसको
कौन कहता है मुझे याद है?

आज के दोस्त
कल की परछाई हैं
मिलने और बिछड़ने की
सिर्फ़ हमने रस्म निभाई है।
संपूर्ण प्रेम, संपूर्ण त्याग
हमदर्दी और घृणा
प्यार और साथ
क्या फिज़ूल की
कर रहे हो बात।

बस एक शाम गुज़रने दो
बस चाँद को निकलने दो
भावनाओं के भूडोल को
ज़रा नींद से लड़ने दो
सिमटने दो परछाइयों को
क़दमों के नीचे
सच कह रहा हूँ
जो आज दोस्त है
कल छूट जाएगा पीछे।

यह विवशता सिर्फ़ मेरी नहीं है
तुम भी तो विवश हो
चाँद, सूरज, तारे
और ये नज़ारे भी विवश हैं
नदी, कूल,
किनारे भी विवश हैं
विवश हैं सपने और यथार्थ
क्योंकि सबको है
कुछ नूतन तलाश।

अगर मेरी बात ग़लत लगे तो
तुम किसी ख़ामोश शाम से
पूछ लेना
बना लेना फिर
उगते सूरज को गवाह
या देख आना किसी
जलती चिता की राख को।

चलो, आज फिर शाम हो गई है
डूबते सूरज की आँखों को
मैं जरा पढ़ लूँ
किस-किससे मिला आज
जरा ध्यान धर लूँ।

संपादक आधुनिक साहित्य
एडी-94 डी, शालीमार बाग़
दिल्ली 110088
मो॰ 09811184393

अलका पांडेय

आज की नारी

उसने बचपन में सुना
नारी एक देवी है
उसे श्रद्धेय बनना है
नारी एक माँ है
उसे त्याग करना है
नारी एक पत्नी है
उसे पतिव्रता बनना है
नारी एक बेटी है
उसे घर की लाज रखनी है
नारी एक बहू है
उसे सेवा करनी है
नारी समाज की आन है
उसे मर्यादाओं में रहना है।

बड़ी हुई तो पाया
नारी लोलुप दृष्टि से
देखी जाती है
माँ बुढ़ापे में
बेसहारा हो जाती है
उसके पति को
परस्त्री ही भाती है
बेटी भ्रूण में ही
मार दी जाती है
बहू दहेज़ के लिए
जला दी जाती है
खुले आम निर्वस्त्र

घुमाई जाती है।

और उसने ठाना
बस बहुत हुआ न बनेगी देवी
नहीं चाहिए पूजा मिथ्या
पालेगी वो संतानों को
पर नहीं तजेगी अपनी इच्छा
प्यार करेगी पति को तब ही
मिलेगा जब उसका अधिकार
नहीं रही वो आश्रित
बेटी उठा सके है अपना भार
मार नहीं सकता है कोई
कर सकती है अपनी रक्षा
नहीं भोग्या समझो उसको
उसकी भी है एक महत्ता।
बात एक बराबर पर है
तय तुमको अब करना है
हाथ मिलाकर चलना है
या दो-दो हाथ परखना है।

नारी क्या है?

नारी एक फूल है
जो काँटों के बीच भी खुशबू
बिखेरती है
नारी एक शाांत झील है
जो समेटे है सीने में अनगिनत
हलचलें
नारी एक बदरी है
सूखा देख बरस जाती है।

5/41 **विरामखंड, गोमतीनगर**
लखनऊ 226010।
ईमेल
pandeyalka@rediffmail.com
मो॰ 09839022552

अजयकुमार मिश्र

वह तैयार है

सूरज के
लाल होकर झाँकने से पहले,
जल जाती है
उसके कर्मों की आग।
बाबूजी की चाय,
अम्मा का काढ़ा,
मुन्नी और बबलू का
ककहरा पहाड़ा।
सब अपने-अपने बर्तनों में
उबलने लगते हैं।
छोटी ननद की अँगड़ाई,
पिया जी की तन्हाई,
बर्तन कोई नहीं देखता।
जैसे-जैसे सूरज की किरणें,
धरा पर बढ़ती जाती हैं।
उसके कर्मों की परिधि भी,
बढ़ती जाती है।
कभी हैंडपंप पर,
तो कभी रसोई में,
बर्तनों की खटपट होती रहती है।
वह हर जगह बजती है,
कभी अपने, कभी बाहर वाले,
ख़ूब बजाते हैं।
वह गिरती है, सँभलती है,
जीवन की भट्टी में
ख़ूब जलती है।

बागीश भवन, 424-**ए**-11 **वैशाली**
इन्कलेव से 9 **इंदिरानगर, लखनऊ।**
मो॰ 09415017598
ई-मेल-ajayshree30@ymail.com

लालित्य ललित

कैसे-कैसे मित्र

[1]
कुछ पैसे हैं तेरे पास
हाँ, कितने चाहिए मैंने कहा।
यही कोई तीन हजार,
उसने कहा।
मैंने दे दिए
इस बात को तीन साल हो गए
उसके पास नया फ़ोन है
मगर तीन हज़ार देता नहीं
कुछ कह दूँ तो केवल मुस्कराता है
गीतासार सुनाता है।

[2]
आपको मक्खन लगाएँगे
आपको अच्छे से चुपड़ देंगे
और
आप इत्ते से ही ख़ुश हो जाओगे
आप पर मक्खन काम कर गया।

[3]
यह आपका मकान बिकवा दें
और जो जो आप कहें।
ये आपके मित्र नहीं,
ये व्यवसायी हैं
ये आपके घर बेचते हैं
जिन्हें आपकी
भावनाओं से कोई लेना-देना नहीं।

[4]
आज मित्र कोई नहीं
ऐसा भी नहीं
पर निगाह पैनी हो।

[5]
कुछ चाहिए, मैंने कहा
उसने कहा, नहीं
पर आपका विश्वास चाहिए
मिलेगा
अब मैं मौन था
किस पर यक़ीन करूँ,
किस पर नहीं।

[6]
चुनाव से पहले प्रोपर्टी सस्ती
मगर बज़ार में पैसा नहीं
लेकिन उनके पास ख़ूब
जिनके समुद्र में बहता पानी नहीं
केवल नोट, अथाह नोट
नोट ही नोट।

[7]
कहाँ चले आप
अमेरिका
किसलिए
हिंदी सम्मेलन है
क्या होगा
कुछ भी नहीं
हिंदी के नाम पर तमाशा होगा
हवन होगा
और कुछ भी तो नहीं।

[8]
काश
इत्ते हिंदीसेवी
हिंदुस्तान को ही
संपूर्ण कायदा सिखा पाते
नहीं,
उन्हें तो भ्रमण का चस्का है
हिंदी के बहाने

बी-3/43, **शकुन्तला भवन**
पश्चिम विहार, नई दिल्ली 110063
फोन (निवास): 011-25265377
मोबाइल: 09868235397

डॉ. रश्मि चतुर्वेदी

मिहिर की रश्मि

टिकटिकी लगाए देखती रहती हूँ
उस ओर
वक़्त के झरोखे में
कहीं तुम दिख जाओ
पलटती रहती हूँ
कोरे पन्नों को बार-बार
गति लौटा कहीं
तुम दो शब्द लिख जाओ।

पलटे थे जब तुम
मुँह फेर रुख़सती की ओर
दिल कहता रहा हरपल
बस अब तुम रुक जाओ
खफ़ा हो किस बात पर
चल दिए तुम किस छोर
काश एक बार 'रश्मि' की सहर के
मिहिर बन जाओ।

न चली जाऊँ
तेरे वज़्म से परेशान होके
शाम ढलने से पहले
मेरा दीदार कर ले
बस तेरे नाम से जलता
मेरे घर का चिराग
मिलने की एक कोशिश
आख़िरी बार कर ले।

फ्लैट नं॰ 401, **ए**-63, **इंदिरा एन्क्लेव, नेब सराय,**
इग्नू रोड के पास, दिल्ली 110068
मो॰ 08882026424, 08459195160

डॉ. मोनी पांडेय

पाँच कविताएँ

1.
मैं श्रमिक हूँ
बड़े श्रम से गढ़ा है
इन खंडित प्रतिमाओं को
स्थापित तो तुम्हें ही करना होगा
विश्वमंदिर में इन्हें
जानते हो ना
मैं प्रकृति हूँ, तुम पुरुष
चलो सजा दें
कुछ नए प्रतिमानों के साथ।

2.
चली आना गुइयाँ
थाम लेना मेरा हाथ उस दिन
जब थक जाना आहुति देते-देते
बाग वाले नीम की
शाखाओं पर बना लेंगे नीड़
जहाँ कभी सावन में कजरी गाते हुए
कभी मनिहारिन से
रंग-बिरंगे फ़ीते ख़रीदा करते थे
सखी यहीं डाल लेंगे डेरा
चाहे थम जाए सृष्टि।

3.
मैं अक्सर
एक ख़्वाब बुनती हूँ कि
ज़िंदगी सवा सात मीटर की
पारंपरिक परिधान से सिमटकर
सवा तीन मीटर के
पैंट-सर्ट की परिधि में आ जाती
और मेरा मौन विरोध मुखर हो
जमीं हुई धमनियों में संचार करता
एक सुखद अनुभूति से
तृप्त हो जाती
अनगिनत अभिलाषाओं की प्यास
भर जाता ऑक्सीजन फेफड़े में
और कोमा में जा चुकी
कुछ शेष-अशेष
रूढ़ियों की दीवार को उलाँघकर
लौट आता जीवन।

4.
तुम जब-जब मुझमें
खजुराहो का शिल्प तलाशोगे
मैं पाषाण प्रतिमा ही नज़र आऊँगी
और तुम शिल्पकार की तरह
सदियों से अपने पौरुष के दंभ की
छेनी-हथौड़ी लिए
उकेरते रहोगे अर्थहीन मौन
जिसमें केवल कलापक्ष होगा
भावपक्ष समाधिस्थ।

5.
तुम रचो रंगों से नव विहान
भरो कुछ ख़ाली खाकों में
इंद्रधनुष
जीवन के कैनवास पर
तुम आत्मा के चित्र गढ़ो
मैं शब्दों से खेलूँगी
ओढ़ूँगी शब्दों के साँचे में ढली
हरित चूनर
और बिखेर दूँगी सृष्टि में
जीवन के मधुर गीत
तुम्हारे चित्रों में भाव बोलेंगे
मेरे शब्दों के रंग
क्योंकि मैं चित्र,
शब्द, रंग और सृष्टि हूँ
तुम चित्रकार।

संपादक, गाथांतर हिंदी त्रैमासिक
श्री रामचंद्र पांडेय, कृष्णानगर, मऊ रोड, सिधारी, आजमगढ़ 276001
मो॰ 09415907958
gathantarmagazine@gmail.com

सुनीता शानू

धरती का गीत

धरती पर फैली है सरसों की धूप-सी
धरती बन आई है नवरंगी रूपसी

फूट पड़े मिट्टी से सपनों के रंग।
नाच उठी सरसों भी गेहूँ के संग।
मक्की के आटे में गूँधा विश्वास
वासंती रंगत से दमक उठे अंग।

धरती के बेटों की आन-बान भूप-सी
धरती बन आई है नवरंगी रूपसी

बाजरे की कलगी-सी नाच उठी देह।
आँखों में कौंध गया बिजली-सा नेह।
सोने की नथनी और भारी पाजेब-
छम-छम की लय पर तब थिरकेगा गेह।

धरती-सी गृहिणी की कामना अनूप-सी
धरती बन आई है नवरंगी रूपसी

धरती ने दे डाले अनगिन उपहार,
फिर भी मन रीता है, पीर है अपार।
सूने हैं खेत और, ख़ाली खलिहान-
प्रियतम के साथ बिना जग है निस्सार।

धरती की हूक उठी जल-रीते कूप-सी
धरती बन आई है नवरंगी रूपसी

18/144/2, **गली नं.** 3, **ईस्ट मोतीबाग रिलायंस फ्रेश के पीछे, सराय रोहिल्ला दिल्ली** 110007
मो॰ 0918860595937, 0919999913748
दूरभाष 01123699966, 01123692424
shanoo03@gmail-com]
shanoosunita@gmail.com

काश माँ

काश माँ तूने
कठिनाइयों से
लड़ना सिखाया होता
सहारा न देती
खुद ही चलना सिखाया होता!
छोड़ देती मेरा हाथ
गिरकर सँभलना तो सीख जाता
गिरने के डर से
गोद में न उठाया होता!
काश माँ तूने।

तू न जाती प्रिंसिपल के पास
मेरी शिकायतें लेकर,
मुझे ही परिस्थितियों से
निपटना सिखाया होता!
क्यों बढ़वाए मेरे नंबर परीक्षा में
कह-सुनकर
मेरी ग़लतियों से मुझे ही
सबक़ सिखाया होता
काश माँ तूने।

क्यों रिश्वत देकर
मेरी नौकरी लगवाई
दर-दर की ठोकरें खाकर खुद ही
पैसों की क़द्र तो सीख जाता
तेरे रहमो-करम से
बन तो गया मैं महान
पर काश माँ मैं
एक अच्छा इंसान बन पाता
काश माँ तूने।

उसकी तस्वीर

वो चली गई ऐसे ही चुपचाप,
उसके जाने के बाद
पता चला कि वो
कितनी महान थी!
वो सुलाती थी मुझे बड़े प्यार से,
खुद गीले में सोकर मुझे सूखे में
वो खिलाती थी मुझे
थाली भरकर अपने हाथों से
मनव्वल करके
मैं खाकर खेलने लगता था,
यह जाने बगैर ही कि उसने कुछ
खाया या नहीं?
सुबह नहला-धुलाकर, साफ़ कपड़े
पहनाकर वह मुझे
स्कूल छोड़ने जाती थी
गोद में उठाकर,
मुझे तो पता ही नहीं था?
कि वो नंगे पाँव चलती थी,
ताप, धूप और कीचड़ में
मेरे बीमार होने पर वो
निकालती थी
कुछ मुड़े-तुड़े नोट
जो उसने शायद अपनी साड़ी या
पायल के लिए जोड़े होंगे,
वो पैसे निकालकर
डॉक्टर को दे आती थी
अपने लाड़ले को
हँसता-खेलता देखकर
वो खुश हो जाती थी
अपनी फटी किनारी वाली
साड़ी में ही,
जब उसका ध्यान जाता होगा
अपने पायलविहीन पैरों की ओर
तो मन-ही-मन कहती होगी
मेरा बेटा ही तो मेरा गहना है
कितने अच्छे से
समझाती होगी वो
अपने मन को
मुझे पिताजी की
मार से बचाने के लिए वो
ढाल बनकर आ खड़ी होती थी
मेरी ग़लतियों को
अपने सिर लेकर,
खुद डाँट खाकर बिसूरती
किसी कोने में जाकर
और मैं खुश होकर सो जाता
यह जाने बगैर
कि वो मुझे
इतना क्यों चाहती है?
मेरे जन्मदिन पर
रत्ती-रत्ती इकट्ठा किए घी से
हलवा बनाकर
कितनी तृप्त होती थी
मुझे खिलाकर
ज़िंदगी के झमेलों में
वह न कभी बन पाई,
न सँवर पाई,
न कभी खुश हो पाई
बस जीती रही दूसरों के लिए
एक बहू, पत्नी और माँ बनकर
और मैं नादान
न तो कभी उसे समझ पाया
न ही उसके मरने पर
जी भर के रो पाया
लेकिन आज जब मैं
बड़ा हो गया हूँ
उसके आशीषों से रहता हूँ
बड़े से घर में
पहनता हूँ बढ़िया कपड़े
घूमता हूँ महँगी गाड़ियों में,
लेकिन उसके लिए क्या करूँ
मैंने उसकी
एक छोटी-सी तस्वीर
लगा रखी है
अपने बड़े से घर में।

8-**डीके**-1 **स्कीम दव.** 74-**सी**
विजयनगर, इंदौर (म०प्र०)
मो० 09926048459

गीतिका गोयल

माँ

कौन है वो
जिसके हाथों का
मजबूत सहारा पाकर
चलना सीखा
मेरे बचपन ने।

कौन है वो
जिसकी हल्की फूँक की
मीठी छुअन
एक पल में भुला देती
सारे दर्द, सारी तकलीफ़।

कौन है वो
जिसके आँचल की
मुलायम छाँव में
मानो सिमट आतीं
खुशियाँ
सारे संसार की।

कौन हो सकता है वो
माँ के अलावा
'माँ'–
जो मात्र शब्द ही नहीं
स्वयं में
संपूर्ण अर्थ भी है।

ए–202 **पार्क व्यू सिटी**–2
सोहना रोड, गुड़गाँव 122018
मो॰ 09582845000
दूरभाष : 0124–4012173

सुनीता पुष्पराज पांडेय

1.
जब कोई पूछता है
हमारा परिचय नाम
तुम्हारा बतलाना अच्छा
लगता है
तुम्हारे ख़्याल में पहरों
यूँ ही खोए रहना अच्छा
लगता है
तुम्हारी आँखों में मेरे
लिए छलकता प्यार
देखना अच्छा लगता है
मेरे मन को भिगोता
ये एहसास कि तुम
सिर्फ़ और सिर्फ़ मेरे
हो अच्छा लगता है

2.
इक तरफ़ आँसू हैं
एक तरफ़ अंगार
कौन हरे विपदा उनकी
कौन सुने पुकार
माँ कह कौन पुकारे अब माँ
किसका करे इंतज़ार
बच्चे किसके काँधे चढ़ झूले
झूला कौन करे अब प्यार
कल तक थी
जिस साजन के
आवन की आस
अब बेवा कैसे करे इंतज़ार।

3.
मैं एक निपट गँवार बड़ी,
बड़ी बातें जानूँ ना
ज्ञान–विज्ञान मोहे समझ न आवे
सीधी–साधी बातें मोरे मन भावें
लाभ–हानि का भेद न जानूँ
जो मोरे मन भावे, वही सही लागे
जब–जब देखूँ जग की
रीति गुमसुम–सी हो जाऊँ
मेरे मन की बातें मैं
जानूँ या मेरे मोहन जानें।

4.
माँ मैं तेरी परछाईं
जीने का अधिकार दे मुझको
भइया जैसा प्यार दे मुझको माँ
मेरे होने का अभिमान
होगा तुझको
अपने सुख–दुख में तू पाएगी
मुझको
तेरी सखी बन माँ मैं तेरा
जी बहलाऊँगी
तेरे एक बुलावे पे माँ
मैं दौड़ी आऊँगी।

W|O JWO P R Pandey
WO, SV/107
Assu camp, AF Stn-Kalaikunda
Kharagpur , Midanapur (W.B)
PIN-721303
08972921149
spandeypushp@gmail.com

शशि पुरवार

नारी

जग की जननी है नारी
विषम परिवेश में नहीं हारी
काली का धरा रूप, जब
संतान पे पड़ी विपदा भारी
सह लेती काँटों का दर्द
जग की जननी है नारी
विषम परिवेश में नहीं हारी।
पर हरा देता एक मर्द
क्यूँ रूह तक काँप जाती
अन्याय के ख़िलाफ़
आवाज़ नहीं उठाती
ममता की ऐसी मूरत
पीकर दर्द हँसती सूरत
छलनी हो रहे आत्मा के तार
चीत्कारता हृदय करे पुकार
आज नारी के अस्तित्व का सवाल
परिवर्तन के नाम उठा बबाल
वक़्त की है पुकार
नारी को भी मिलें उसके अधिकार
कर्मण्यता, सहिष्णुता, उदारता
है उसकी पहचान
स्वत्व से मिला सम्मान
जग की जननी है नारी
विषम परिवेश में नहीं हारी।

सुलग रहे थे ख़्वाब

वक़्त की दहलीज पर
और लम्हा-लम्हा बीत रहा था पल
काले धुएँ के बादल में।
सीली-सी यादें
नदी बन बह गईं,
छोड़ गईं दरख़्तों को राह में
निपट अकेला।
फिर कभी तो चलेगी पुरवाई
बजेगा निर्झर संगीत
इसी चाहत में
बीत जाती हैं सदियाँ
और रह जाते हैं निशान
अतीत के पन्नों में।
क्यूँ सिमटे हुए पल मचलते हैं
जीवंत होने की चाह में।
न कोई ठौर, न ठिकाना

न तारतम्य आनेवाले कल से,
फिर भी दबी है चिंगारी
बुझी हुई राख में।
अंततः बदल जाते हैं
आवरण,
पर नहीं बदलते
कर्मठ ख़्वाब,
कभी तो होगा
जीर्ण युग का अंत
और एक नया आगाज़।

द्वारा श्री महेश गुप्ता
108, **द्रविड़ नगर, सुदामानगर रोड**
इंदौर (म.प्र.) 425009
मो॰ 09420519803
email: shashipurwar@gmail.com;
blog-http://
sapne.shashi.blogspot.com

संजय कांति सेठ

नारी शक्ति बनाम पेट की भूख

वो
ढोलक की थाप पे
चटाक-सी आवाज़ के साथ
खुद का शरीर
चाबुक से उधेड़ती है।

चार बरस की उसकी छोकरी
थाली में दुर्गा की तस्वीर लिए
तमाशबीनों से
सिक्के बटोरती है

मज़दूर

वो जलाता है भट्टी,
तापता है पसीना
सेंकता है बदन,
बनाता है देश।
बिछाता है सड़क,
भुनाता है रूह
पकाता है पाँव
बनाता है देश।
खोदता है गड्ढा,
बोता है हाथ
उगाता है रोटी,
बनाता है देश
मजबूर नहीं, मजबूत है,
वो मज़दूर है।

द्वारा सुभाष इलैक्ट्रिक कम्पनी,
28/30, 3 **री मरीन स्ट्रीट, धोबी तलाब, मरीन लाइंस, मुंबई** 400002,
मो॰ 09768005444

सरस दरबारी

जीवनचक्र के अभिमन्यु

अपने-अपने धर्मयुद्ध में लिप्त
अक्सर देखा है उसे ...
परिस्थितियों के चक्रव्यूह
भेदने की जद्दोजहद में।

कभी वह लगभग हारा हुआ-सा
उस युवावर्ग का हिस्सा बन जाता है
जो रोज़ एक नौकरी ...
एक ज़मीन की होड़ में
नए हौसलों, नई उम्मीदों को साथ
लिए निकलता है
और हर शाम
मायूसी से झुके कंधे का भार
ढोता हुआ
उन्हीं तानों, तिरस्कार और हिकारत
भरी नज़रों के बीच लौट आता है
रोटी के ज़हर को
लगभग निगलता हुआ,
क्योंकि कल फिर एक और युद्ध
लड़ने की ताक़त जुटानी है
एक और चक्रव्यूह को भेदना है।

कभी वह एक युवती बन जाता है
जो खूँखार इरादों,
बेबाक तानों और भेदती नज़रों के
चक्रव्यूह के बीच
खुद को घिरा पाता है
दहशत उस चक्रव्यूह के द्वार
खोलता जाता है
और वह उन्हें भेदता हुआ
और अधिक घिरता जाता है
कभी वह
एक विधवा रूप में पाया जाता है
एक त्यक्ता, एक बोझ
एक अपशकुन का पर्याय बन
वह भी जीता जाता है,
भेदती हुई संवेदनाओं और
कृपादृष्टि के चक्रव्यूह को
शायद इन्हें भेदते हुए
भेद दे कोई आत्मा
और दर्द का एक सोता फूट पड़े
जिससे कुछ हमदर्दी और अपनेपन
के छींटे उस पर भी पड़ें
और आकंठ डूब जाए
वह उस कृपादृष्टि में
जो भीख में ही सही मिली तो।
न जाने ऐसे कितने असंख्य अभिमन्यु
अपने-अपने धर्म की
लड़ाई लड़ते हुए
जीवन के इस चक्रव्यूह की
भेंट चढ़ते आ रहे हैं
और चढ़ते रहेंगे।

अश्मिभूत

तुमने एक बार फिर
उस सतह को बींधा
जिसके नीचे दबे थे बहुत से अहसास-
अनगिनत सपने, कुछ वादे,
कुछ टूटे, कुछ अनछुए,
कुछ कोशिशें उन्हें निभाने की
कुछ टुकड़े कमज़ोर पलों के
जो वक़्त से छूटकर छितर गए थे
और साथ ही बिखर गई हर उम्मीद
उन्हें दोबारा जीने की।

न छेड़ा होता
उस शांत नीरव सतह को
तो हो सकता है सब-कुछ
वक़्त के बोझ तले हो जाता
अश्मिभूत
रहता तो भीतर ही...!!!

66, **लूकरगंज**
इलाहाबाद 211001
ईमेल-sarasdarbari@gmail.com

सुधा ओम ढींगरा

पतंग

परदेस के आकाश पर
देसी माँजे से सनी
आकांक्षाओं से सजी
ऊँची उड़ती मेरी पतंग
दो संस्कृतियों के टकराव में
कई बार कटते-कटते बची
शायद देसी माँजे में दम था
जो टकराकर भी कट नहीं पाई
और उड़ रही है
विदेश के ऊँचे-खुले आकाश पर
बेझिझक, बेखौफ़ ....

उलझन

घरों के क्षेत्र बढ़े, तो
लोगों के हृदय सिकुड़ने लगे।
समृद्धि का मद चढ़ा, तो
रिश्ते टूटने लगे।
भावनाएँ लुप्त हुईं, तो
संवेग सूखने लगे।
कमरों की भीड़ बढ़ी, तो
बुजुर्ग चुभने लगे।
संस्कारों का गणित उलझा,
तो परिवार टूटने लगे!

101, Guymon Court, Morris Ville,
NC-27560 USA
फोन : 919678-9056
मोबाइल 919801-0672;
ई-मेल–sudhaom9@gmail.com

संध्या शर्मा

जन-सेवा...

सरकारी अस्पताल की
ख़ाली कुर्सी देखकर
उठा एक सवाल
नेता अफ़सर ही क्यों
काट रहे बवाल
इनको भी तो अपना-अपना
सुनहरा कल गढ़ना है
जो नारों पे जीते हैं
उन्हें नेता बनना है
सामने की कुर्सी मंत्री की
पीछे पर अफ़सर को जमना है
चोर-चोर मौसेरे भाइयों को
मिल-जुल जन-धन हड़पना है
जनसेवा के नाम पर
नेता माँगता फिरे है वोट
जनकल्याण के नाम पर
अफ़सर बटोर रहे हैं नोट
फिर यह डॉक्टर?
नेता अफ़सर का युग्म
सामने की कुर्सी ख़ाली रख
जनता को लुभाता है
पीछे की कुर्सी पर बैठ
कल सुनहरा बनाता है
देश का हर नागरिक
इनसे कुछ गुण अगर सीखे
तो देश को कभी सुनहरे कल की
चिंता नहीं सताएगी
हर नागरिक पीछे की कुर्सी से
जनकल्याण बटोरेगा
सामने की कुर्सी नेता को
जनसेवा ख़ातिर
ख़ाली मिल जाएगी।

49/अ, सावित्री विहार, सोमलवाडा
अपना भंडार के पास, वर्धारोड
नागपुर-25
ईमेल- varsharani09@gmail.com

संगीता कुमारी

संगीता कुमारी की कविताएँ

नयन

प्रेम नयन से झलकता है
जब दिल का दामन भरता है
अधर खुले कुछ कहते हैं
बंद होने को कहते हैं
पलक खुली कुछ कहती है
मद-भरी झलक दिखती है
एक नशा-सा रहता है
जब दिल का दामन भरता है........

डोर

वो देखो उड़ चला
अनंत की ओर
न जाने कहाँ है उसका छोर
एक अंजान राह
ज़रूर होगी ख़ूबसूरत
उसकी डोर दिखती नहीं
छिपी है कहीं
हमारा अँधेरा घेरे है हमें
पकड़ साँसों की जमीं
हे प्रभु!
साँसों-संग हो हमारी भोर।

रौनकें

विचारों का तालाब
सब जगह बिखरा पड़ा है
ख़ुशबू चंद फूलों में
छिपी महक रही है
मनोरंजन का साधन
रौनकें एक बटन की
मोहताज हैं बस
समय कटता नहीं
बातें लुप्त हो गई हैं
फिर भी हे मानव!
क्यों तू तन्हा हो गया है।

बैंक लोन

ग़रीब लड़की गई बैंक
लोन लेने के लिए
सिलाई के वास्ते
मशीन पर हाथ-पैर मारेगी
रोटी के वास्ते
अपनी माँ
और छोटे भाई के साथ
मिल
अपनी जीविका
उपार्जन करेगी
कपड़ा सिल
मगर
न लोन, न मशीन,
न मिली रोटी
क्योंकि
लोन लेने के लिए
उसकी झोपड़ी थी छोटी।

सी-72/4 **एन.ए.पी.एस टाउनशिप**
कॉलोनी नरोरा
बुलंदशहर (उ॰प्र॰) 203389

शोभना मित्तल शुभी

तुम्हारा आना

तुम्हारे आने से भरा नहीं
ख़ाली हो गया जितना
तुम्हारे जाने से मेरा घर,
ज़रा चैक कर लो
अपना सामान समेटते समय
कहीं ग़लती से
तुमने समेट तो नहीं ली
लापरवाही से घर में इधर-उधर पड़ी
मेरी कुछ चीज़ें।

जैसे तुम्हारे आने से पहले
वहाँ ताक पर रखी थी एक घड़ी
इंतज़ार की
जिसकी टिक-टिक से
भरा-भरा-सा लगता था मेरा दिन,
उधर दराज़ में रखी थी
उम्मीद की एक टॉर्च
जिसकी रोशनी में
घने अँधेरे के बीच भी
देख लिया करती थी
भावी मिलन की कुछ तस्वीरें।

कुछ यक़ीन रखे थे
अवचेतन के रेफ्रिजरेटर में
जिनसे तर हो जाता था
प्यास से सूखता गला
मेज़ पर रखी थी एक
अतीत की डिब्बी
जिसमें से एक स्मृति उठाकर
अक्सर चबा लिया करती थी
इलायची की तरह
यूँ सुवासित हो जाते थे
कुछ लम्हों के मुख।

एक गुल्लक भी रखी थी शेल्फ़ पर
जिसमें डाल दिया करती थी
रोज़ के ख़र्च से बचे एक-आध दर्द
गुल्लक को उठाते और रखते
जब खनखना उठते थे उसमें पड़े दर्द
तब संगीतमय हो जाते थे कुछ पल।

एक प्रिज़्म भी पड़ा रहता था
यहाँ-वहाँ
जब हाथ आ जाता था तो दिखा
देता था
वक़्त की तीखी धूप में छिपे
ख़ुशियों के कुछ रंग
बुरा न मानना
अब इनमें से कुछ नहीं यहाँ
आख़िर तुम्हारा आना क्यों न हो
पाया वैसा
जैसा होता था तुम्हारा आना।

तुम्हारी याद

तुम्हारी याद को अच्छी तरह तहाकर
रख दिया था
अलमारी के सबसे ऊपर वाले
खाने में
कि खोला करूँगी
सिर्फ़ फ़ुर्सत के पलों में
लेकिन हुआ ये कि जब भी
अति व्यस्तता के कारण हड़बड़ाकर
झटके से खोली अलमारी
वो तहाई हुई याद
ठीक मेरे सामने पट से गिरी
खुल गई तहें और बंद हो गई मैं
अतीत की तहों में।

ई-355, **प्रथम तल, निर्माण विहार**
दिल्ली 110092;
दूरभाष : 011-43054667;
मो॰ 9953235840;
ईमेल: shobhanashubhi@gmail.com

लिली कर्मकार

कुछ पल के उजालों में
मन भी धोखा खा गया
वो अँधेरों में एक पल का
बिजली का चमकना था!
पता नहीं यह मन हमेशा
घने कोहरे में छिपे हुए
किस धुँधले सपनों के पीछे
भागता ही रहता है!
जानती हूँ, धोखा और भ्रम
यहाँ भी मेरे आगे है
फिर भी यह मन,
चंद ख़ुशी के पलों के पीछे
यूँ ही भागता रहता है....!

आज जीवन से त्रस्त हैं
आज जीते जी मर रहे हैं
और हर रोज़ ही अपने
अंतर्मन को मार रहे हैं
हम अपनों के बीच में
पराए बनके खो रहे हैं
हम अपने लक्ष्य को भूल
अपनी मानवता खो रहे हैं
प्रगति की उड़ानों में हम
हर रोज़ नई मौत मर रहे हैं
आज मन अजीबो-ग़रीब
विडंबनाओं के बीच झूल रहा
साँस लेकर ज़िंदा तो है
पर क्या आज ज़िंदा है?

द्वारा श्री अधीरकुमार कर्मकार, पो॰
बिलासीपारा (W/NO-5)
जिला धुबरी 783348
मो॰ 08822301400
ईमेल lilikarmakar630@gmailAcom

शैलेश शुक्ला

आप हो बस आप हो

आप हो बस आप हो, हर ओर बस अब आप हो।

नींदों में मेरी आप हो,
ख़्वाबों में मेरे आप हो
रातों की करवट आप हो,
बिस्तर की सिलवट आप हो
जिससे लिपटकर पड़ी रही, बाँहों का तकिया आप हो।

कविता भी मेरी आप हो,
मेरे गीत भी बस आप हो
ग़ज़लें भी मेरी आप हो,
नज़्में भी मेरी आप हो
मुझको जो शायर बना रही, मेरी शायरी भी आप हो।

मंदिर भी मेरा आप हो
मस्ज़िद भी मेरी आप हो
गिरिजा भी मेरा आप हो
गुरुद्वारा भी मेरा आप हो
तन-मन समर्पित है जिसे, मन-मंदिर की मूरत आप हो।

पूजा भी मेरी आप हो,
मेरी नमाजें आप हो
वाणी भी मेरी आप हो,
मेरा भजन भी आप हो
पल-पल मैं जिसको जप रहा, माला वो मेरी आप हो।

गालों की लाली आप हो
कानों की बाली आप हो
आँखों का काजल आप हो
जुल्फ़ों का बादल आप हो
जिसे देखकर मैं सँवर रही, मेरे मन का दर्पण आप हो।

झरने की कलकल आप हो
उपवन की हलचल आप हो
बारिश की रिमझिम आप हो
तारों की टिमटिम आप हो
मन को जो शीतल कर रही, चंदा की चाँदनी आप हो।

मेरे तन-बदन में आप हो,
मेरे अंग-अंग में आप हो
साँसों की गर्मी आप हो
होंठों की नरमी आप हो
दम से मैं जिसके जी रही, सीने की धड़कन आप हो।

वेदी भी मेरी आप हो
मंडप भी मेरा आप हो
संस्कार मेरे आप हो
मेरे सात फेरे आप हो
जिनको निभाऊँगा उम्र-भर, सातों वचन वो आप हो।

रास्ता भी मेरा आप हो
मंजिल भी मेरी आप हो
मेरी हर डगर में आप हो
मेरे हर सफ़र में आप हो
नदिया-सी बहकर जहाँ गिरी, मेरा समंदर आप हो।

दिल की तमन्ना आप हो
आरज़ू भी मेरी आप हो
चाहत भी मेरी आप हो
सपना भी मेरा आप हो
हर दुआ में माँगा है जिसे, रब से सनम वो आप हो।

हिंदी अधिकारी, सिक्किम विश्वविद्यालय
गंगटोक 737102, **सिक्किम**
08759411563, 09312053330
www.facebook.com@PoetShailesh

शुचिता श्रीवास्तव

प्यार की पुनरावृत्ति

सुबह उठती हूँ आँखें मींचते हुए
और थोड़ा-सा अलसाते हुए
तो सोचती हूँ प्यार
सर्दी में चाय का गर्म घूँट
गले से नीचे उतरता है तो
मन की तली में उतर जाता है
गुनगुना प्यार।
आटा गूँथते वक़्त जाने कैसे
मैं गूँथने लगती हूँ थोड़ा-सा प्यार
चूल्हे पर भगोने में उबलता है दूध
तो साथ-साथ खदबदाता है प्यार
रोटी गोल की बजाय
टेढ़ी-मेढ़ी हो जाती है
क्योंकि चौकी पर रखकर
बेलने लगती हूँ प्यार की लोई
सब्ज़ी में नमक ज़्यादा हो जाता है
क्योंकि मेरी हथेली में पहले से ही
रक्खा रहता है तुम्हारे प्यार का नमक
दाल में डाल देती हूँ
हल्दी की जगह बसंत
क्योंकि हवा चुपके से
रखकर गई होती है
हल्दी के डिब्बे में
थोड़ा-सा बसंती प्यार
चावल हमेशा गीला हो जाता है
उसमें भी मिल जाता है प्यार का जल
बिस्तर पर लेटकर ओढ़ लेती हूँ
रज़ाई के साथ प्यार
और सुबह होने पर फिर वही
प्यार की पुनरावृत्ति।

प्रेम

प्रेम खदबदाता रहता है
बटली में पक रहे चावल की तरह
जिसे चलाते रहना पड़ता है
दुलार की कलछी से।

प्रेम रख देता है
आँखों में वो बादल
जिनसे वक्त बेवक़्त, वजह-बेवजह
पानी नहीं आँसू बरसता रहता है।

प्रेम जलता हुआ दीया है
जिसमें डालते रहना पड़ता है
बार-बार स्नेह
और बढ़ाते रहनी पड़ती है बाती

दूरियाँ

हमारे और तुम्हारे बीच
व्याप्त हैं जो दूरियाँ
आकाश की तरह
वो अब सहन नहीं होतीं मुझसे
मैं ऐसा करती हूँ कि
उन दूरियों के विरुद्ध
एक षड्यंत्र रच डालती हूँ
मैं लड़ूँगी दूरियों से
लगाकर अपनी सारी शक्ति
अपनी भावनाओं की सेना के साथ
और ख़त्म कर दूँगी दूरियों को
अगर नहीं ख़त्म कर पाई उन्हें
तो ख़त्म कर लूँगी अपने नाम को
और ख़त्म हो जाऊँगी मैं खुद
मुझे ये भी पता है
इस लड़ाई में तुम भी मेरे साथ होगे
क्योंकि मेरे नाम के ख़त्म होने पर
अधूरा रहेगा तुम्हारा नाम भी
और मेरे ख़त्म होने पर
ख़त्म हो जाएँगे
तुम्हारी आँखों के सपने
इसलिए तुम कभी
ख़त्म नहीं होने दोगे
न मेरे नाम को, न तो मुझे
तो लो मैं जंग का एलान करती हूँ
दूरियों के विरुद्ध
तुम भी तैयार हो न मेरे साथ
इस जंग में शामिल होने के लिए?

ए-909/2 **इंदिरापुरम्**
लखनऊ (उ०प्र०)
shuchita.wear@gmail.com

शालिनी रस्तोगी

सवैया (मत्तगयंद)

प्रेम पगी रस में लिपटी,
हर बात पिया सुन लागत तेरी,
लाज-हया बिसराय सबै,
फिरती अब काठ भई मति मेरी,
मोहन मोह लियो जब जी,
तन भी गह ले अब केसन देरी,
जीवन जाय अकारथ ये
सगरा तुमने अँखियाँ जदि फेरी।

सवैया (सुंदरी)

सगण ◦ 8 + 1 गुरु
हर रोज़ सुनाय कथा नव साजन,
रोज़ करै नव एक बहाना
सखि हार गई अब तो उनते,
कह झूठन का कित कोय ठिकाना
पल में फिरि जाय न याद रखे,
कब जानत है वह बात निभाना
अभिसार किए नित राह तकूँ,
वह जानत सौतन सेज सजाना।

उपेक्षित

देखा है कभी किसी दरख़्त को
जीवन का रस खो
ठूँठ में बदलते हुए
गर्वोन्मत्त शाखाएँ
जब एक-एक कर होती हैं
हरितश्री से विहीन
कैसे होता है
मान-मर्दन उसका।

पीली पड़ती पत्तियाँ जब
छोड़तीं साथ एक-एक कर
कैसे पल-पल छीजता है
उसका अस्तित्व
ज़मीन छोड़ देती है
जब साथ जड़ों का
उभर आती हैं
धरती की त्वचा पर
बुढ़ापे में उभरी नसों-सी
फिर भी न जाने
किस जिजीविषा से
अपनी कँपकँपाहट को
टाँगों में समेट खड़ा रहता है
मूक दर्शक बन
परिवार के उपेक्षित वृद्ध सम
मानो पूछता हो
हमेशा दिया ही तुम्हें
क्या माँगते हुए देखा है कभी!

हिंदी अध्यापिका डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर 14, **गुड़गाँव**
ब्लॉग–http://shalini.anubhooti.blogspot.in **फेसबुक** https://www.facebook.com, MeriKalamaMereJazbaat\ref=hl

पूर्णिमा वर्मन्

क्षणिकाएँ

1
बरसते बादलों के पार
नभ ने
द्वार खोले हैं
सजाकर सड़क का कालीन
बाँधकर इंद्रधनु ऊपर।
2
लंबी बातें लंबी सड़कें
एक साइकिल साथ हमारे
दूर तलक
छाया पेड़ों की
जैसे दुआ बड़ों की सिर पर
साँझ सकारे
3
इस अकेली शाम का
मतलब न पूछो
सर्द मौसम
और फैला दूर तक एकांत सागर
एक पुल
थामे हुए हमको हमेशा।
4
कहीं तो जाता होगा रस्ता
फूलों वाली छाँव से होकर
हर जंगल
वनवास नहीं होता होगा।
5
खिलखिलाते लुढ़कते दिन
बाड़ से आँगन तलक
हँसकर लपकते रूप
झरती धूप।
6
सन्नाटा सीने में
कोई चाँद उगाता है
आवाज़ों का
लौट के आना
होता नहीं कभी।
7
फिर कोई
मधुमास बस्ती
फिर कोई खामोश रस्ता
कुछ नहीं कहना है
लेकिन
बात हो जाती है फिर भी।
8
हलचलों में गुम गली है
रौशनी की खलबली है
शहर में शाम उतरी है
9
फुरफुराती
दूब पर चुगती चिरैया
चहचहाती झुंड में
लुकती प्रकटती
छोड़ती जाती
सरस आह्लाद के पदचिह्न।
10
फिर मुँडेरों पर झुकी
गुलमोहर की बाँह,
फिर हँसी है छाँह
फिर हुई गुस्सा सभी पर धूप
क्या परवाह?
11
ताड़ के डुलते चँवर
वैशाख के दरबार
सड़कें हो रहीं सूनी
कि जैसे
आ गया हो कोई तानाशाह।

purnima.varman@gmail.com

वंदना गुप्ता

ख़ुद से ख़ुद को हारती एक स्त्री

मेरे अंदर की स्त्री भी
अब नहीं कसमसाती
एक गहन चुप्पी में
जज्ब हो गई है शायद।

रेशम के थानों में
अब बल नहीं पड़ा करते
वक्त की फिसलन में
जमींदोज हो गए हैं शायद।

बिखरी हुई कड़ियाँ
अब नहीं सिमटतीं यादों में
कॉफी के एक घूँट संग
जिगर में उतर गए हैं शायद।

बेतरतीब खबरों के
अफसाने नहीं छपा करते
अख़बार की कतरनों में
नेस्तनाबूद हो गए हैं शायद।

निष्ठुर प्रेमिका और दीवाना प्रेमी

प्रेमी : तुम मुझे अच्छी लगती हो
प्रेमिका : तो अपनी सीमा में रहकर चाहो।
प्रेमी : तुमसे प्यार करता हूँ।
प्रेमिका : तो अपने मन में सराहो
उस चाहत का सरेआम
क्यूँ बाज़ार लगाते हो?
क्यूँ मेरी सीमाओं का
अतिक्रमण करते हो?
तुम्हारी, पसंद तुम्हारी चाहत
तुम्हारे वजूद का हिस्सा है
क्यूँ उसे मेरे
वजूद पर हावी करते हो
क्यूँ मुझसे अपने प्रेम का
प्रतिकार चाहते हो
प्रेमी : चाहत तो प्रतिकार चाहती है
प्रेम का इजहार चाहती है
प्रेमिका : मगर मैंने कब कहा
तुमसे प्रेम करती हूँ?
प्रेमी : जब तक इजहार न करूँगा
तो कैसे अपने प्रेम का
बीज तुम्हारे ह्रदय में रोपूँगा
जब प्रेम का अंकुर फूटेगा
तब इजहार स्वयं हो जाएगा।
प्रेमिका : तो जाओ! धूनी रमाओ
और करो कोशिश
बीज रोपित करने की
मगर इतना जान लो
मरुभूमि में सिर्फ़
कैक्टस ही उगा करते हैं।

एक संवेदनहीन प्रेमिका
एक दीवाना प्रेमी
एक तपता रेगिस्तान
एक शीतल हवा का झोंका
किसी कहानी के टुकड़े-सा
क्या कभी
एक कृती में सवार हो पाए हैं
क्या कभी मोहब्बत के फूल
चिताओं की राख पर उग पाए हैं
प्रेमी-प्रेमिका के संवाद की तरह
क्या कभी कोई खुशबू बिखेर पाए हैं
खोज में हूँ
संवाद की सार्थकता की
उस निष्ठुर प्रेमिका की
जो जलती लकड़ी-सी
हर पल सुलगती हो
और उस दीवाने प्रेमी की
जो किसी दरवेश-सा,
किसी जोगी-सा
सिर्फ़ प्रेम की अलख जगाए
मन के इकतारे पर
एक धुन बजाता हो
और मरुभूमि में उपजे कैक्टस में भी
प्रेमरस की धारा बहाता हो
जहाँ संवाद हक़ीक़त बन जाए
और एक प्रेम-कुसुम
मेरी रूह पर भी खिल जाए
खोज रही हूँ खुद में वो
निष्ठुर प्रेमिका और एक अदद।

डी-19, **राणाप्रताप रोड**
आदर्श नगर, दिल्ली 110033
मेलः rosered8flower@gmail.com
मो॰ 9868077896

पूनम प्रसाद

खाली पटरी

दूसरी ख़ाली पटरी की तरह मैं
जिस पर अचानक
रेलगाड़ी की तरह पुरुष
ट्रैक चेंज करते हुए
बेधड़क चढ़कर लाद देता है
अपना अस्तित्व
अगले कुछ घंटों के लिए
और फिर से ट्रैक चेंज करने
चला जाता है किसी दूसरी पटरी पर
और मैं पड़ी रह जाती हूँ
वहीं उसी जगह।

सी-77, **शिवगली, नानकचंद बस्ती,**
कोटला मुबारकपुर,
नई दिल्ली 110003
मो. 9711254428

वत्सला पांडेय

चाय की प्याली

एक प्याली चाय
दोस्तों के साथ हो तो
गप्पें हो जाती हैं।

एक प्याली चाय
नातेदारों के साथ हो तो
मसले हल हो जाते हैं।

एक प्याली चाय
ऑफ़िस की टेबल पर हो तो
फ़ाइलें निपट जाती हैं।

और एक प्याली चाय
तुम्हारे साथ हो तो
मैं बस मुस्करा जाती हूँ।

तुम्हारे साथ चाय की चुस्कियों में
मैं बस भूल जाती हूँ
सारे दु:ख, चिंता और तनाव
एक प्याली चाय।

तुम और तुम्हारा प्यार

यूँ तो तुम
छूने नहीं देते अपनी टेबल
आज मैंने भी तय कर लिया था
तुम्हारी बिखरी फ़ाइलों को
सैट करने का
खोलते ही दराज
कितने टूटे बटन
मेरे सामने झर से बिखर गए
वो ब्लू शर्ट के कुछ स्पेशल से
अरे इसमें तो तुम्हारी
सारी शर्टों की निशानियाँ सजी हैं
उफ़ ऑफ़िस जाते समय
तुम्हारा चिल्लाना
मेरा जल्दी से सुई-धागा लेकर दौड़ना
टाँकना तुम्हारे टूटे बटन
समझ गई कैसे तुम चुरा लेते हो
मेरे व्यस्ततम समय से
खुद के लिए कुछ पल
इन बटनों को तोड़कर
सच में तुम और तुम्हारा प्यार
अबूझ है।

प्यार

मैंने प्यार को सोचा था
प्यार को शब्दों में ढाला था
प्यार को लिखा था,
प्यार को चाहा था
पर प्यार को जिया है
तो बस तुम्हारे साथ
प्यार को गुनगुनाया है
तो तुम्हारे साथ
प्यार को तराशा है
तो तुम्हारे साथ
सच में सही मायने में
तुमने ही समझाए हैं
मुझे ये ढाई अक्षर
इसलिए तुम मेरे लिए तुम नहीं
हो तो बस मेरा प्यार।

लखनऊ मांटेसरी इंटर कॉलेज पुराना
किला लखनऊ 226001
vatsalapandeya@gmail.com

मुकेशकुमार सिन्हा

माँ का दर्द

माँ के फटे आँचल
को पकड़े गुज़र रहा था
बाज़ार से ननकू
ऐ माँ! वो खिलौने वाली कार
दिलवा दो न!
बाप रे, वो महँगी कार
ना बेटा, नहीं ले सकते
चलो माँ, वो टॉफी
चिप्स ही दिलवा दो न
पेट खराब करवाना है क्या
क्यों परेशान कर रहा है लगातार
घर आने ही वाला है
खाना भी दूँगी,
प्यार व दुलार भी मिलेगा बेटा
मेरा राजा बेटा चल
अब चुपचाप!

पर माँ, घर में चावल-दाल
कुछ भी तो नहीं है
तुमरे अँचरा में पैसे भी तो नहीं
कहाँ से आएगा खाना!

चुप कर, चल घर
जीने भी देगा, या चिल्लाता रहेगा!
(कलपती माँ का दर्द, कौन समझाए?)

कार्यालय, कृषि व खाद्य प्रसंस्करण
उद्योग राज्यमंत्री, भारत सरकार
कृषि भवन, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23017447;
मो॰ 09971379996

डॉ. रश्मि

रिश्तों का बँटवारा

रिश्तों का बँटवारा
बड़ा अजीब होता है
जब ऐसा बँटवारा होता है
तब रुपये-पैसे ही नहीं बँटते
साथ भी बँट जाता है
प्यार बँट जाता है
भावनाएँ बँट जाती हैं।

रिश्तों का बँटवारा
बड़ा अजीब होता है।
जब ऐसा बँटवारा होता है
तब घर, मकान ही नहीं बँटते
कमरे भी बँट जाते हैं
बच्चे बँट जाते हैं
माँ-बाप बँट जाते हैं
रिश्तों का बँटवारा
बड़ा अजीब होता है।

जब ऐसा बँटवारा होता है
तब जमीन, जायदाद ही नहीं बँटती
सपने भी बँट जाते हैं
अरमान बँट जाते हैं
आँसू और दर्द बँट जाते हैं
रिश्तों का बँटवारा
बड़ा अजीब होता है।

अँधेरा बुनती हूँ

उजाले तीखे होते हैं
बहुत चुभते हैं आँखों को
तभी तो मैं अँधेरा बुनती हूँ
घुटन गहराने तक।
हँसी भी चीर देती है
कभी लावे-सी बहती है
मेरे कानों में
तभी तो मैं अश्क चुनती हूँ
दर्द घुल जाने तक।
तुम्हारी याद मुझको
बहुत मीठी-सी लगती है
अकेलेपन की साथी है
सुकूँ देती हैं दिल को
तेरे आने तक।
मैं गुनाह करती हूँ अक्सर एक
ख़्वाब बुनती हूँ जीवन का
मौत के आने तक।

अश्क

अश्क पानी ही तो हैं
तुम लुटाओगे इन्हें कितना
ढुलक जाते हैं गालों पे
समा जाते हैं होंठों पे
अश्क मोती ही तो हैं
तुम सहेजोगे इन्हें कितना।
जलन इनमें ग़ज़ब की है
निकलते आँख से हैं ये
मगर सुलगते दिल के भीतर हैं
अश्क अंगारे भी तो हैं
तुम बुझाओगे इन्हें कितना।

09971711337
dr.rashmi00@gmail.com

शशि बंसल

वक़्त की धूल

वक़्त की धूल अक्सर,
रिश्तों को मलीन कर देती है
जानते हुए भी नहीं झाड़ पाते उसे,
तह पर तह, तह पर तह
चढ़ती जाती है,
हम दूर और दूर और दूर होकर
सुदूर किनारे बनते जाते हैं।
बीच-बीच में भावनाओं की लहरें
अहम की चट्टानें ला पटकती हैं
जिसके आर-पार सही-ग़लत
कुछ नहीं दीखता।
रुक जाते हैं दोनों ही
अनचाहे पढ़ाव पर,
पुरानी स्मृतियों की जुगाली करते हुए
रह जाती है तो बस
अलगाव की कसक,
एक छटपटाहट, एक तड़प,
अधूरे अहसास, और झूठी उम्मीद,
सच
वक़्त की धूल अक्सर
दिलों को कठोर भी कर देती है।

कलम

बहुत आहत किया है
हाथों की जकड़न ने तुम्हारी,
मैंने तो उकेरा वही, जो चाहा तुमने,
फिर भी उपेक्षिता बनी रही मैं,
तुम्हारी लिखी इबारत बाँचते रहे सब,
सराहते रहे तुम्हारे बुद्धिकौशल को,
नहीं समझा किसी ने मेरे संघर्ष को,

जब चाहा उठा लिया,
पटक दिया यहाँ-वहाँ,
सिरहाने पर कभी,
तो कभी किसी मेज पर,
दरी या धरा पर,
कभी छोड़ दिया यूँ ही आधा-सा,
जैसे ही हुई लाचार,
साथ चलने में तुम्हारे,
फेंक आए बाहर कचरे के ढेर में,
इधर मैं एक ढेर से दूसरे ढेर में
पहुँचती रही,
उधर तुम
पायदान पर पायदान चढ़ते रहे,
मेरे अहसासों से दूर,
अपने अहसासों को हवा देते रहे,
जब हम चले थे,
हमसफ़र-हमक़दम बन के,
फिर कैसे अकेले हो गए
क्या तुम्हें नहीं लगता,
जिस इबारत पर इतराते हो इतना,
बिना मेरे
उकेर पाना असंभव ही नहीं,
नामुमकिन था।

यूजी-4 **गोयल हरि अपार्टमेंट,**
पी॰एन॰बी॰ कॉलोनी, ईदगाह हिल,
भोपाल 462001

क्षमा सिंह

1

धान रोपती औरतें
गाती हैं गीत
और सिहर उठता है खेत
पहले प्यार की तरह
धान रोपती औरतों के
पद-थाप पर झूमता है खेत
और सिमट जाता है
बाँहों में उनकी
रोपनी के गीतों में
बसता है जीवन।

जितने सधे हाथों से
रोपती हैं धान
उतने ही सधे हाथों से
बनाती हैं रोटियाँ।

मिट्टी का मोल जानती हैं
धान रोपती औरतें
खेत से चूल्हे तक
चूल्हे से देह तक।

2

दो जोड़ी बेबस, बेचैन आँखें
झाँकती दरवाज़े के पार
तलाशती कोई पदचाप
टटोलती कोई छुअन अपनों की।
उस वृद्धाश्रम की
दो आतुर आँखें
न जाने कितनी जागती रातें थीं
उन आँखों में
जब तुम नहीं सोए
और तुम्हारे साथ
वो दो जोड़ी आँखें भी नहीं सोईं
तुम्हारे हर छोटे क़दमों के साथ
अपने क़दम
छोटे किए जिसने
तुम्हारे कसते शरीर के साथ
जिसके चेहरे की झुर्रियाँ
बढ़ती गईं
तुम्हारे सपनों को पूरा करने में
जिन्होंने अपने सपने
दाँव पर लगा दिए
तुम्हारे हॉस्टल की फ़ीस
महँगे जूते
जो उनकी रोटी से भी महँगे थे
जब भी तुम्हारे सपने टूटे
उन टूटे सपनों की किरचें थीं
उन आँखों में
जब भी तुम उदास हुए
उन आँखों ने
तुम्हारी उदासी को महसूस किया
उन दो जोड़ी आँखों ने
हर सुविधा देने की कोशिश की
बस तुम नहीं दे पाए वे सब
जो बिना क़ीमत
उन्होंने तुम्हें दिया
नहीं दे पाए
उन दो बेचैन आँखों को
उन उदास झुर्रियों को
ठिकाना अपने दिल में।

बस तुम नहीं दे पाए उन्हें
थोड़ा-सा प्यार
दो मीठे बोल,
अपना थोड़ा समय
दो वक़्त की रोटी
अपने घर का एक कोना।

द्वारा विवेक शस्त्रागार
बंगला नं. 64 , **दुकान नं.** 21,
वरुणापुल वाराणसी
मो॰ 09454350540

नीलोत्पल

जाने क्या धड़कता है

जाने क्या धड़कता है
दरख़्त के भीतर
कि हर टहनी से
फूटती हैं कोंपलें
जड़ें खदबदाती हैं
जड़ें चहकती हैं चिड़ियों-सी
मिट्टी के भीतर

फिर चलता है धड़कने के साथ
हरे होने का सिलसिला
हरापन लगातार गिरता है
समय की छाती पर
अपने से जुदा
चीज़ों को जोड़ता हुआ
अपनी देह से
हताशा के छिलके
उतारता आदमी
शामिल होता है तोतों की तरह
बिखरे सब्ज रंगों में
हरा होता पेड़
तय करता है खुद को
तयशुदा चीज़ों से बचाकर।

चिड़ियाएँ

मैं पूरी दुनिया को
चिड़िया की आँखों से देखूँगा
जिनके घोंसले
किसी तरह का टैक्स
अदा नहीं करते
वे समुद्रों में,
तटों पर, दरख़्तों में,
आकाश में, जंगलों में
यहाँ तक कि
हमारे घरों की मुँडेरों और छतों पर
बिना संशय और दुविधा के
टाँग आती हमारी मृत आज़ादी
वे इतिहास और स्मृतियों का
शिकार नहीं
उनके नाज़ुक पंजों में पेड़
संबल पाता है
अगर यह पृथ्वी अपराध,
ईर्ष्या और द्वंद्व में घिरी है
तो उनकी नन्ही गोल भूरी आँखें
अंत है इनका।

दीखता नहीं चिड़ियों का प्रेम
वे क्षितिज
और चिह्न नहीं बनातीं
उनकी मृत देह
शांति का प्रतीक है
उनकी उदासी
वे गिरती पत्तियाँ हैं
जो ढक देतीं
हमारी क़ब्रों को
हरी घास और संगीत से।

मैं जब खिड़कियों से देखता हूँ
अपनी चोंच में
पीला तिनका दबाए
वे पार कर रही होती हैं
मकानों से उठती
प्लास्टिक और चमड़े की गंध को
सारी चिड़ियाएँ
पृथ्वी पर चिहुँक करती
घुल रही हैं
हमारी खरोंची हुई ज़िंदगी में
लोकगीतों की तरह।

173/1, **अलखधाम नगर, उज्जैन,**
456 010, **मध्यप्रदेश**
मो॰ 09826732121, 09424850594

राज़िया अकबर

याद है

वक़्त ने साथ छोड़ा हमारा जो था,
हाय तेरा, तड़पना मुझे याद है।
मुंह छिपाकर तेरा मेरी आगोश में,
हाय कैसा बिलखना मुझे याद है।

प्यार की वादियों में गुज़ारे जो पल,
कैसे दिल से ओ साथी भुला पाएँगे?
जिन लकीरों पे कस्में जो खाई थीं कल,
आज हम वो लकीरें मिटा पाएँगे?
उन रकीबों के जुल्मों को मेरे सनम,
हाय तेरा वो सहना मुझे याद है।

ख़्वाब हमने सजाए थे मिलकर सनम।
एक घरौंदा सुनहरा बनाएँगे हम।
साथ तेरा रहे, साथ मेरा रहे।
हमने खाई थीं इक-दूसरे की कसम।
उन वफ़ाओं की राहों में मेरे सनम,
आज भी सर झुकाना मुझे याद है।

क्या करें मेरे महबूब ऐ जानेमन!
हम भी वक़्तों के हाथों से मजबूर हैं।
ना नसीबा ही अपना हमें साथ दे।
इसलिए ही तो हम आज यूँ दूर हैं।
हिज्र के वक़्त में ओ मेरे हमसुखन।
आज तेरा सिसकना मुझे याद है।

हाय चलती हवाओ, उसे थाम लो।
ठंडी-ठंडी फिजाओ, मेरा नाम लो।
सर से उसके जो पल्लू बिखर जाएगा,
आहें भरके ये माशूक मर जाएगा।
याद जब जब करेंगे हमें 'राज' तब।
हाय मेरा तड़पना मुझे याद है।

raziakbar2429@yahoo.com
09898033677

नीलम मैदीरत्ता गुंजा

1.
मै जानती हूँ, कि तुम हो,
मेरा यक़ीन है, कि तुम हो,
यहीं इस ज़मीं पर,
या शायद मेरे आस-पास,
और मैं यह भी जानती हूँ,
कि तुम मुझे कभी मिलोगे नहीं,
फिर भी मेरी आँखें तुम्हें खोजती हैं,
तुम्हें सोचना, ध्यान करने जैसा है,
तुम्हें महसूस करना,
प्रेम करने जैसा है,
हाँ तुम्हीं तो हो मेरी श्वास,
मेरी संजीवनी,
तुम्हें पा लेना मेरा स्वप्न नहीं है,
तुम्हें खोजना ही मेरी नियति है,
और यह जानते हुए भी,
कि तुम मुझे कभी मिलोगे नहीं,
मेरा सफ़र ख़त्म नहीं होता,
मेरा यक़ीन टूटता नहीं,
क्योंकि मैं जानती हूँ,
जब तक मैं हूँ,
तुम हो।

2.
जीने का मज़ा तो तब है,
जब दो जिस्म हों और एक जान हो,
वो ज़िंदगी कैसी ज़िंदगी,
जहाँ जिस्म दो हों,
मकान भी दो हों,
कमरे चार-चार हों,
और चेहरे दस-दस हों।

3.
जो ख़ुशी मिलती हो,
इस बाज़ार (स्टॉक मार्केट) में,
तो मेरे लिए भी ख़रीद ले,
मैं बारिश कर दूँगी, पैसों की
और जो दर्द बिकता हो तो,
बेच दे, औने-पोने दाम,
और दर्द का जो कोई
ख़रीदार न मिले,
तो मेरा पता लिख ले।

4.
कोई ख़त हो,
कोई तस्वीर हो तेरी,
तो जला दूँ,
पर खुद को कैसे जला दूँ?
अरे! हाँ जल ही तो रही हूँ,
लम्हा-लम्हा, आहिस्ता-आहिस्ता,
तेरी यादों की रोटियाँ सिकती हैं,
क़सम से,
भूख मिट जाती है मेरी।

5.
तुम थे,
तो मैंने सबको छुट्टी दे दी थी,
और अब तुम नहीं हो,
तो सब लौट आए हैं,
उदासी नाश्ता बना रही है,
आँसू चाय में डुबकी,
निराशा को अभी-अभी डाँटा मैंने,
ठीक से सफ़ाई नहीं करती है न,
पर अँधेरे को पता है,
कि मुझे क्या पसंद है,
उसने परदे ठीक से खींच दिए हैं,
अब उजाले की एक भी किरण,
मुझे परेशाँ नहीं करेगी,
तुम्हारा जाना तो दु:ख की वजह नहीं,
पर इन सबका लौट आना तो है।

15/14 **द्वितीय तल, डी.एल.एफ. फेज**
3, **गुड़गाँव** 122 002
मो॰ : 08800398889

निशा चौधरी

1.
चलो आज एक सौदा कर लें
सारे दुख मेरे और सुख तुम्हारे
क्या तुम भी ऐसा कहोगे?
कह सकते हो?
तुम कीमत भी लगा लेना
मुझे भी वसूलने की जल्दी है
हर क्षण
जो मैं जीना चाहती थी
ख़ैर छोड़ो
सौदे के दो हिस्से करते हैं
लो मैंने निभाना चुन लिया
फिर से
और तुमने वही
फिर से।

2.
तस्वीर ख़ूबसूरत हो न हो
ज़िंदगी ख़ूबसूरत हो न हो
पर साथ ख़ूबसूरत हो

मंज़िल ख़ूबसूरत हो न हो
रास्ते ख़ूबसूरत हों न हों
मगर बातें ख़ूबसूरत हों

किनारे ख़ूबसूरत हों न हों
लहरें ख़ूबसूरत हों न हों
पर हाथ थामना ख़ूबसूरत हो

नज़र ख़ूबसूरत हो न हो
नज़ारे ख़ूबसूरत हों न हों
पर नज़रिया ख़ूबसूरत हो

दूर ही सही पर एहसास
ख़ूबसूरत हो
ज़िंदगी के हर पल की याद
ख़ूबसूरत हो।

4
वे बूँदें बारिश की थीं
या तुम्हारे प्यार की
मुझको भिगोती ही चली गईं
वे तुम थे या तुम्हारी परछाईं
तन्हाई जलाती ही चली गई
वादे न थे, करार न था
पर प्यार तो था
वो एहसास तो था तुम्हारे होने का
पर डर भी था तुम्हारे खोने का
और पाने से ज़्यादा मैं खोती चली गई
मैं भूलूँ भी तो कैसे
वो हर पल का मेरे प्यार का बढ़ना
तुम्हारे लिए।

सेक्टर : 1 **बी, क्वाटर नं** 352 **बोकारो स्टील सिटी, झारखंड**
मो॰ 08002705885
ईमेल : imnishworld@gmail.com

आलोक खरे

बिखरते रिश्ते

माँ अब नहीं कहती कि
बेटा कब आ रहे हो,
कितनी बार कहेगी, पूछेगी
थक चुकी है माँ,
और बेटा जिसका शायद
अपना कोई बजूद ही नहीं
रह गया है!
डरते-डरते फ़ोन करता है
कि कहीं माँ
आने के लिए न कह दे!
लेकिन माँ समझ गई है
कि बेटा अब 'अपने' में
मस्त है 'अपनों' को भुलाकर,
बीबी, बच्चे बस
यही हैं उसके 'अपने'
उसका 'अपना' संसार!
अब माँ बस इतना ही पूछती है
कि बेटा तू ठीक तो है न,
बहू और बच्चे सब ठीक है न,
मैं धीरे से हाँ कहता हूँ,
और फिर और भी धीरे
पूछता हूँ 'माँ' तुम ठीक हो,
माँ कहती है बेटा मेरी क्या
आज हूँ कल नहीं,
तुम सब ख़ुश रहो
अपनी दुनिया में!
समय मिले तो कंधा देने आ जाना!
मेरे हाथ से मोबाइल छूट ही गया!
गिर गया ज़मीन पर,
उसका कवर और बैट्री
निकल कर इधर-उधर बिखर गए,
जैसे कि वे कह रहे हों
क्या सोच रहे हो
ये रिश्ते भी धीरे-धीरे ऐसे
ही बिखरते जा रहे हैं!

इंडिया ट्रांसपोर्ट एजेंसी, बी-२८३,
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1,
नई दिल्ली 110020

महेशकुमार वर्मा

ये रिश्ता चीज़ होता है क्या
पता नहीं चलता।
था कभी भाई-भाई का रिश्ता
पर जब वे बड़े व समझदार हुए
दोनों एक-दूसरे के दुश्मन हुए
हथियार लेकर आमने-सामने हुए
भाई-भाई का रिश्ता
दुश्मनी में बदल गया
पता नहीं चलता
ये रिश्ता चीज़ होता है क्या!

पिता ने उसे
अपने बुढ़ापे का सहारा समझा
पर वह तो दुश्मन से भी
भयंकर निकला
निकाल दिया पिता को घर से
था इंसान पर आज वह हैवान बना
पता नहीं चलता
ये रिश्ता चीज़ होता है क्या!
अरे कोई तो बताए
ये रिश्ता चीज़ होता क्या!
नाजुक बहुत होते हैं ये रिश्ते
निभा सको तो
साथ देंगे जीवन-भर ये रिश्ते
नहीं तो सिर्फ़
कहलाने को रह जाएँगे ये रिश्ते।
बनते हैं पल-भर में,
बिगड़ते हैं पल-भर में ये रिश्ते
बहुत ही नाजुक होते हैं ये रिश्ते
बहुत ही नाजुक होते हैं ये रिश्ते।

वैष्णव ग्राफिक्स डिजिटल इमेजिंग, तारा टावर (होटल रिपब्लिक के पीछे), एक्जिबिशन रोड, पटना (बिहार) 800001
मो॰ 9955239846, 9693530575
ई-मेल:vermamahesh7@gmail-com

डॉ. वेद व्यथित

प्यास

प्यास बहुत बलवती प्यास ने
कितने ही सागर सोखे
प्यास नहीं बुझ सकी
प्यास बुझने के हैं सारे धोखे
प्यास यदि बुझ गई तो समझो
आग स्वयं ही बुझ जाएगी
प्यास को समझो आग,
आग ही रही प्यास को है रोके।

प्यास बुझी तो सब-कुछ
अपने आप यहाँ बुझ जाएगा
यहाँ चमकती दुनिया में
केवल अँधियारा छाएगा
इसीलिए मैंने अपनी
इस प्यास को बुझने से रोका
प्यास बुझी तो दिल भी अपनी
धड़कन रोक न पाएगा।

लगता है प्यासों को पानी
पिला पिला कर क्या होगा
पानी पीने से प्यासे की
प्यास का तो कुछ न होगा
प्यास कहाँ बुझ पाती है
बेशक सारा सागर पी लो
सागर के पानी से प्यासी
प्यास का तो कुछ न होगा।

कितनी प्यास बुझा लोगे
तुम बेशक कितने घट पी लो
कितनी प्यास और उभरेगी
बेशक इसे और जी लो
जब तक प्यास को बिन पानी के
प्यासा ही न मारोगे
तब तक प्यास कहाँ बुझ सकती
बेशक तुम कुछ भी पी लो।

त्रिपदी

नदियों के किनारे हैं
हम मिल तो नहीं सकते
पर साथी प्यारे हैं।

कोई मजबूरी होगी
वरना उन फूलों से
नहीं भूल हुई होगी।

तुम फूल चढ़ाने को
मेरी कब्र पे मत आना
मुझे और चिढ़ाने को।

ये कैसा करिश्मा है
जब बात खुशी की हो
दिल और धड़कता है।

दिल उल्टा चलता है
जब इसको ना कहते
यह और मचलता है।

मेरा दिल तो समंदर है
मोती ही मिलेंगे यहाँ
ये बड़ा समंदर है।

क्यों इतना सताती है
तेरी चुप्पी मेरे
क्यों दिल को दुखाती है।

जिसे दौलत कहते हो
दिल उसमें नहीं
मिलता दौलत जिसे कहते हो।

वह दौलत ले आओ
दिल जिस में मिल
जाए ऐसा कुछ ले आओ।

इस प्यार की बस्ती में
यूँ कैसे आए हो
बिन दिल इस बस्ती में।

इस आग से मत खेलो
यह दिल में जलती है
इस दिल से मत खेलो।

दिल ईंधन बनता है
तिल-तिल जलने पर वो
दीपक-सा लगता है।

अनुकंपा-1577 **सेक्टर** 3
फरीदाबाद 121004
फोन : 0129-2302834
मो॰ 09868842688
ईमेल : dr.vedvyathit@gmail.com

जंगल का पेड़

–डॉ॰ प्रकाशचंद्र भट्ट

जंगल का पेड़,
सांस्कृतिक नहीं हो पाया
जंग लड़ता रहा, जंगली कहलाया
सब जगह जाना उसे नहीं आया
सबसे हँसने का,
रोने का हुनर नहीं पाया
झोले में सिमटने की कला नहीं जानी
छिप-छिपकर उभरने का
हुनर नहीं सीखा
झुक-झुककर सलामी का
अदब नहीं दीखा
इसका-उसका, इनका-उनका,
होने का मन नहीं पाया
झुकते, झूमते भी इस कमबख़्त को
अडिग पाया।

असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
द्वाराहाट, अल्मोड़ा उत्तराखंड
ई-मेलः drprakashbhatt@gmail.com
मो॰ 09759818860

डॉ. नंदलाल भारती

डर

आसपास देखकर डरता हूँ,
कहीं से कराह, कहीं से चीख,
धमाकों की उठती लपटें देखकर।
इंसानों की बस्ती को जंगल कहना,
जंगल का अपमान होगा अब
ईंट-पत्थरों के महलों में भी,
इंसानियत नहीं बसती।
मानवता को नोचने,
इज़्ज़त से खेलने लगे हैं,
हर मोड़ पर,
हादिसा बढ़ने लगा है।
आदमी आदमख़ोर लगने लगा है,
सच कह रहा हूँ,
ईंट पत्थरों के जंगल में बस गया हूँ।
मैं अकेला
इस जंगल का साक्षी नहीं हूँ
और भी लोग हैं,
कुछ तो अंधा-बहरा गूँगा बन बैठे हैं
नहीं जमीर जाग रहा है ,
आदमियत को कराहता देखकर।
यही हाल रहा तो वे ख़ूनी पंजे
हर गले की नाप ले लेंगे धीरे-धीरे,
ख़ूनी पंजे हमारी ओर बढ़ें
उससे पहले
शैतानों की शिनाख़्त कर
बहिष्कृत कर दे,
दिल से,
घर-परिसर समाज और देश से।
ऐसा न हुआ तो
ख़ूनी पंजे बढ़ते रहेंगे,
धमाके होते रहेंगे,
इंसानी काया के चिथड़े उड़ाते रहेंगे
तबाही के बादल गरजते रहेंगे,
इंसानियत तड़पती रहेगी,
नयन बरसते रहेंगे,
शैतानियत के आतंक से
नहीं बच पाएँगे,
छिनता रहेगा चैन, काँपती रहेगी रूह,
क्योंकि मरने से नहीं डर लगता
डर लगता है तो,
मौत के तरीक़ों से

तुला

नागफनी सरीखे उग आए हैं
काँटे दूषित माहौल में।
इच्छाएँ मर रही हैं नित,
चुभन से दुखने लगा है रोम-रोम।
दर्द आदमी का दिया हुआ है,
चुभन कुव्यवस्थाओं की,
रिसता जख़्म बन गई है,
भीतर ही भीतर।
हक़ीक़त जीने नहीं देती,
सपनों की उड़ान में जी रहा हूँ,
उम्मीद का प्रसून खिल जाए,
कहीं अपने ही भीतर से।
डूबती नाव में सवार होकर भी,
विश्वास है, हादसे से उबर जाने का।
उम्मीद टूटेगी नहीं,
क्योंकि,
मन में विश्वास है फ़ौलाद-सा।
टूट जाएँगे आडंबर सारे,
खिलखिला उठेगी कायनात,
नहीं चुभेंगे नागफनी सरीखे काँटे,
नहीं कराहेंगे रोम-रोम
जब होगी अँधेरे से लड़ने की सामर्थ्य
पद और दौलत की तुला पर,
भले ही दुनिया कहे व्यर्थ।

आजाददीप-15 **एम-वीणा नगर**
इंदौर (मध्य प्रदेश) 452010
nlbharatiauthor@gmail.com

वंदना बाजपेई

तकलीफ़

ज़िंदगी का सफ़र
इतना मुश्किल नहीं होता
बस मुश्किलें बढ़ाते हैं
कुछ शब्द
जिन्हें हम अनसुना कर
आगे बढ़ जाते हैं
जो बदल जाते हैं
गहरी खाइयों में
या कुछ शब्द जिन्हें
हम कह नहीं पाते
जो अटककर रह जाते हैं
गले में और चुभते रहते हैं
सारी उम्र
हर आती-जाती साँस के साथ।

रहस्य

कभी-कभी लगता है
धीरे-धीरे
सरकती जा रही है हथेली से धूप
जिसे सुदूर जाने कितनी
आकाश-गंगाओं को पार कर
बंद मुट्ठी में लेकर आए थे
अब लगता है कुछ जान लूँ
कुछ समझ लूँ
कुछ खोल लूँ परतें उजालों की
जिससे धूप न सही
कुछ ऊष्मा तो ले जाऊँ
अनिश्चित मार्ग पर
और फिर जब आऊँ

पहली किरण के साथ
मुट्ठी बंद किए हुए
तो कुछ तो जुड़ जाएँ
ये प्रयास।

परछाइयाँ

रात के अँधेरों में
साफ़ बहुत साफ़
दिखने लगती हैं परछाइयाँ
टूटे हुए सपनों की
दर्द की, टीस की, कसक की
आँखों के सामने कई साये
हिलने लग जाते हैं
और हम इन सायों से
भयाक्रांत आँखें खोले
बस
करवट बदलते रह जाते हैं।

ख़ुशी

ख़ुश रहती हूँ मैं
क्योंकि नहीं करती
हर माह की उन्तीस रातें ख़राब
सिर्फ़ और सिर्फ़
पूर्ण चंद्र देखने की ख़्वाहिश में
इसीलिए
जीवन की हर कुरूपता
असामानता और अपूर्णता में
ढूँढ लेती हूँ
ख़ुशी के कुछ क़तरे।

बी-125, **प्रथम तल**
निर्माण विहार, दिल्ली 110092
मो॰ 09818350904

रजनी छाबड़ा

साँझ के अँधेरे मैं

साँझ के झुटपुट अँधेरे में
दुआ के लिए उठाकर हाथ
क्या माँगना
टूटते हुए तारे से
जो अपना ही
अस्तित्व नहीं रख सकता क़ायम
माँगना ही है तो माँगो
डूबते हुए सूरज से
जो अस्त होकर भी
नहीं होता पस्त
अस्त होता है वो,
एक नए सूर्योदय के लिए
अपनी स्वर्णिम किरणों से
रोशन करने को सारा जहान।

अपनी माटी

बस्ती में रहके,
जंगल के लिए
मन-मयूर कसकता है।

इस देहाती मन का
क्या करूँ
अपनी माटी की
महक को तरसता है।

कैसे भूल जाऊँ अपने गाँव को
रिश्तों की सौंधी गलियों में
वहाँ अपनेपन का मेह बरसता है।

फूल और कलियाँ

एक भी पल के लिए,
ओ बाग़वान!
अपने ख़ून-पसीने से
सींची कली को
न आँख से ओझल होने देना
एहसास भी न हुआ हो जिसे
कभी तेज़ हवाओं के चलन का
घिर जाए
अचानक किसी बड़े तूफ़ान में
अंदाज़ लगा सकोगे क्या,
उसकी चुभन का
फूल बनने से पहले ही
रौंद दी जाती है कली
यह कैसा चलन हुआ
आज के चमन का
आदम और हव्वा के
वर्जित फल खाने की
कहानी का
जब-जब होगा दोहराना
आधुनिक पीढ़ी चढ़ती जाएगी
बर्बरता का एक और सोपान
और चमन, यूँ ही
बनते जाएँगे वीराने
फूल और कलियों के जीवन
रह जाएँगे बनकर अफ़साने।

F-206 Block 1, Adithi Pearl Appt
60 Feet Road,
N.R.I. Layout, Kalkere Village
Bangalore 560043
09538695141, 09620875788
rajni.numerologist@gmail.com

पूनम शुक्ला

मैं फेसबुक पर हूँ-1

हरा-भरा वृक्ष है ये एक
लुभाती है कितनी इसकी शाख़
किसी ने सींचा होगा इसे
यूँ ही नहीं लहलहाते पत्ते।

पहाड़ों पर झूमते हैं बादल
है ठंडी नदी की एक धार
एक तैरती नाव
एक किरण भी है सूरज की
मेघों की लटों को सँवारती
हौले से उनके बीच से झाँकती।

अरे कितना नीला
कितना विस्तृत है ये आकाश
उसका एक कोना
सुर्ख़ लाल है सूर्य की आभा से
कोई खड़ा है सूर्य की तरफ़
किए हुए अपनी पीठ
देखता है बस अपनी छाया
पर पक्षियों की
ये अंतहीन उड़ान
कर रही है मुझ तक
स्पंदित अपनी ऊर्जा।

दिखते हैं कुछ लाल गुलाब
जो खींचते हैं प्रेम के चित्र
प्रेम बिना नहीं कोई संबंध
जीवन पुष्प है तो
प्रेम है मकरंद।

कितना कोमल,
मासूम है वो शिशु
उसकी हँसी से गूँजता है मौन
जिसने हँसाया आज
वो है कौन!

अब दिखा भारत का झंडा
अपना प्यारा-सा तिरंगा
साथ है फाँसी का फंदा
अब लिखूँगी गीत एक
मेरे हृदय के बीच
लगी है गूँजने अब ध्वनि
ओह बीत गया है एक घंटा यूँ
मैं फेसबुक पर हूँ।

मैं फेसबुक पर हूँ -2

तुम्हें नहीं भातीं मेरी बातें
मेरी कविताएँ
मेरे हृदय में बजती
वीणा की टंकारें
मेरे मष्तिष्क में बजता
जलतरंग
धरती को चूमते मेरे शब्द
आकाश को नापते मेरे कथ्य।

पहले
नम हो जाती थीं मेरी आँखें
तुम्हारी बेरुख़ी देखकर
पर अब मैं फेसबुक पर हूँ
हज़ारों मित्र हैं मेरे
वो इंतज़ार करते हैं
मेरी कविताओं का,
मेरे कथ्य का।
देखो ये शुभकामनाओं का ढेर!
मैंने भी अब
हँसना सीख लिया है।

50 **डी, अपना इन्कलेव**
रेलवे रोड, गुड़गाँव 122001
मो॰ 09818423425
ई मेल :
poonamashukla60@gmail.com

डॉ॰ वर्षा सिंह

1
तुमसे बातें करना मुझको
अच्छा लगता है
बातों का इक दरिया जैसे
मन में बहता है

2
कल आया था चाँद रात को
पूरनमासी वाला
मैंने सारी रात जपी थी
उसके नाम की माला।

3
रूठने की वजह कोई हो या न हो
कोई अपना जो रूठे, मनाओ जरा।
लोरियों ने सुलाया मुझे नींद में
ख़्वाब टूटे न, ऐसे जगाओ जरा।

4
उनकी चाहत दिल धड़काए
होंठों पर मुस्कान सजाए
आखिर ऐसा क्यों होता है
काश, कोई मुझको बतलाए।

एम III, **शांतिविहार, रजाखेड़ी**
सागर 470004 **(म॰प्र॰)**
फोन : 07582-230088
drvarshasingh1@gmail.com
www.facebook.com/
profile.php?id
=100002592286536&sk=about

अनुलता राज नायर

सिंदूर

किसी ढलती शाम को
सूरज की एक किरण खींचकर
माँग में रख देने-भर से
पुरुष पा जाता है
स्त्री पर संपूर्ण अधिकार।
पसीने के साथ बह आता है
सिंदूरी रंग स्त्री की आँखों तक
और तुम्हें लगता है
वो दृष्टिहीन हो गई।
माँग का टीका गर्व से धारण कर
वो ढँक लेती है
अपने माथे की लकीरें
हरी-लाल चूड़ियों से
कलाई को भरने वाली स्त्रियाँ
इन्हें हथकड़ी नहीं समझतीं,
बल्कि इनकी खनक के आगे
अनसुना कर देती हैं
अपने भीतर की हर आवाज़ को....
वे उतार नहीं फेंकतीं
तलुओं पर चुभते बिछुए,
भागते पैरों पर
पहन लेती हैं घुँघरू वाली मोटी पायलें
वो नहीं देतीं किसी को अधिकार
इन्हें बेड़ियाँ कहने का।

यूँ ही करती हैं ये स्त्रियाँ
अपने समर्पण का,
अपने प्रेम का, अपने जूनून का
उन्मुक्त प्रदर्शन!
प्रेम की कोई तय परिभाषा नहीं होती।

नागफनी

आँगन में देखो
जाने कहाँ से उग आई है ये नागफनी,
मैंने तो बोया था
तुम्हारी यादों का हरसिंगार।
और रोपे थे तुम्हारे स्नेह के गुलमोहर।
डाले थे बीज तुम्हारी खुशबू वाले
केवड़े के।
क़लमें लगाई थीं
तुम्हारी बातों से महके मोगरे की।
मगर तुम्हारे नेह के बदरा
जो नहीं बरसे,
बंजर हुई मैं, नागफनी हुई मैं।
देखो मुझमें काँटें निकल आए हैं,
चुभती हूँ मैं भी
मानो भरा हो भीतर कोई विष।
आओ ना, आलिंगन करो मेरा,
भिगो दो मुझे,
करो स्नेह की अमृत वर्षा
कि अंकुर फूटें, पनप जाऊँ मैं
और लिपट जाऊँ तुमसे
महकती, फूलती
जूही की बेल की तरह...
आओ ना और मेरे तन के काँटों को
फूल कर दो।

एच 43, **अप्सरा कांप्लेक्स**
इंद्रपुरी, भोपाल 462022

डॉ॰ ज्योत्स्ना शर्मा
H-604, **प्रमुख हिल्स,**
छरवाडा रोड, वापी
जिला वलसाड, गुजरात
396191

कुंडलियाँ

कैसे-कैसे दे गई, दौलत दिल पर घाव
रिश्तों से मृदुता गई, जीवन से रस-भाव
जीवन से रस-भाव, कहें ऋतु कैसी आई
स्वयं नीति गुमराह, भटकती है तरुणाई
स्वारथ साधें आप, जतन कर जैसे-तैसे,
लोभ दिखाए खेल, देखिए कैसे-कैसे

जीवन में उत्साह से, सदा रहें भरपूर
निर्मलता मन में रहे, रहें कलुष से दूर
रहें कलुष से दूर, दिलों के कँवल खिले से
हों खुशियों के हार, तार से तार मिले से
दिशा-दिशा हो धवल, धूप आशा की मन में
रहें सदा परिपूर्ण, उमंगित इस जीवन में

बाँचो पाती नेह की, नयना मन के खोल
वाणी का वरदान हैं, बस दो मीठे बोल
बस दो मीठे बोल, बड़ी अद्‌भुत है माया
भले कठिन हो काज, सरल-सा हमने पाया
समझाती सब सार, साँस यह आती-जाती
क्या रहना मगरूर, नेह की बाँचो पाती

राधा की पायल बनूँ, या बाँसुरिया, श्याम
दोनों के मन में रहूँ, इच्छा यह अभिराम
इच्छा यह अभिराम, संग राखें बनवारी
दो बाँसुरिया देख, दुखी हों राधा प्यारी
हो उनको संताप, मिलेगा सुख बस आधा
कान्हा के मन वास, चरण में रख लें राधा

कौशल उप्रेती

नदी बीमार है

नदी बीमार है
कहा कुछ भी नहीं मुझसे
मगर मैं साफ़ देख रहा था
उसकी सूखती हुई काया
उसकी सिमटती हुई माया
दूर दूर तक उदास बैठी
सिसक रही थीं
रेत की टोलियाँ।
निरंतर प्रवाहमान होकर भी
जो थकी नहीं थीं कभी
आज कैसी पड़ी है सुस्त-सुस्त लाचार
अधबेहोशी की हालत में
ज़हर घोल रही हैं
अपनी ही संतानें।
जिनके दूर-दूर तक के
पुरखों को भी अपनी
आँचल का अमृत पिलाकर पाला था
अफ़सोस, यह भेद नहीं जाना कि
दोगे तब तो दे सकूँगी
व्यर्थ का यह ढोंग कैसा
होगा कैसे लाभ गंगा।
जब वो माता थी, उद्धारकर्ता थी
तो इसलिए भी की
मुनियों ने, तपस्वियों ने
जल और वनस्पतियों की
मंगलकामना के साथ
किए थे अजस्र यज्ञ
प्रवाहित किया था
सैकड़ों, लाखों मन दूध,
नहीं डाले थे पहले पाँव भी भूल से
बिना नमन किए अपने प्रणम्य को
अब, पश्चिम का घोर कलियुग
आस्था को
अंधविश्वास मानता है,
देवता जल में रहते हैं
यह सुनकर सारा संसार हँसता है
डालते हैं रोज़ सहस्रों मन कचरा
कल कारखानों का
पयस्विनी थरथराई थी पहले
इन मलबों का बोझ
नहीं सह पाई थी
कभी विकराल होकर
खौफ़ भी दिखलाया थोड़ा बहुत
मगर अब कहती नहीं कुछ
हाँफती रहती है हर पल
भाँपकर उसकी दशा को
बह चली थी आँख मेरी
नहीं चढ़ाई मैंने भी थी
फूल दीपों की वो माला
देखकर उसकी उदासी
बस किया था स्पर्श जल को
आँसुओं का अर्घ्य देकर,
प्रार्थना उसके लिए की।

ए-129, **मातावाली गली, सुकराली**
सेक्टर-17, **गुड़गाँव** 122002
(हरियाणा)
मो॰ 09873971062
ई-मेल : kausupreti@gmail.com

डॉ॰ शालिनी अगम

एतबार

ये प्रेम है न
मुझे न जीने देता है
और न मरने
कितनी कसमें खाईं,
कितने वादे किये अपने आपसे
कि अब न मिलूँगी तुमसे
पर ये एतबार, उफ़
न जाऊँगी उस डगर पर
जहाँ तुम तक पहुँचने वाले
न जाने कितने मोड़ हैं
मन व बुद्धि की कशमश में
जीत इस दिल की
क्यों हो जाती है आख़िर
आज तुमसे गले लगकर
ऐसा लगा
कि न जाने कितने युगों के बाद
मैंने साँस ली
चैन मिला मेरी रूह को
न, अब नहीं
कुदरत करे तो करे
अब मैं तुमसे जुदा न रह पाऊँगी
मेरे आगामी प्रेम-ग्रंथ से।

बी-182 **रामप्रस्थ कॉलोनी**
गाज़ियाबाद 201011
मो॰ 09990018989
http://sweetshalinikasweetworld.blogspot.com
http://shaliniagam.jagranjunction.com
http://shaliniaggarwalshubhaarogyam.blogspot.com
shalini8989@gmail.com

दीपक हैमराजानी दीप

माँ! तू मुझे याद आती है

जब आँख में आँसू होता है
दिल कुछ कहने को होता है
मैं गुपचुप-गुपचुप रोता हूँ
और रात-भर नहीं सोता हूँ, तब
तेरी गोद मुझे याद आती है
मीठी-सी लोरी गाती है
माँ तू मुझे याद आती है
माँ तू मुझे याद आती है।

जब शाम का सूरज ढलता है
और घर की राह पकड़ता है
जब दफ़्तर में साथी का मोबाइल
किसी मीठी धुन पे बजता है
और हाँ, माँ, कहता साथी
जब जी भर-भर के मुस्काता है, तब,
अंतस में कहीं मन की आँखें
हौले से भर आती हैं
माँ तू मुझे याद आती है
माँ तू मुझे याद आती है।

होटल के ए॰सी॰ कमरे में जब
महँगी थाली आती है
हज़ारों का बिल देकर भी जब
भूख न मिटने पाती है तब,
ताँबे के बरतन में पकी
तेरी दाल बड़ी याद आती है।
मन-ही-मन तू एक निवाला
धीरे से खिला जाती है
माँ तू मुझे याद आती है।
माँ तू मुझे याद आती है।

पतझड़ से सूने रिश्तों में जब
ख़ून सूख-सा जाता है
हर बंधन सूखे पत्ते-सा
बस यहाँ-वहाँ लहराता है तब,
रिश्तों की बंजर भूमि में
स्नेह खाद तू मिला जाती है
सूखी फ़सलें हरी-भरी हो
फिर से लहरा जाती हैं
माँ तू मुझे याद आती है
माँ तू मुझे याद आती है।

तेरी नज़रों की छुअन...!

तेरी नज़रों की छुअन से
मचल जाते हैं जज़्बात मेरे
रंगत फिज़ाओं की हुई जाती है
सपनीली-सपनीली।

इठलाती हैं हवाएँ ऐसे
कि खिल उठी हों
ख़ुशबुओं की हज़ार कलियाँ कहीं
और, छलक पड़ती हैं
बेताब लबों से दिल की बातें
कुछ अनकही।

मत गिराओ ये पलकें यूँ नज़ाकत से
एक बार मचल गए तो
सँभलेंगे नहीं फिर होश मेरे।

छाएगा सुरूर कुछ इस तरह कि
बहक जाएगा चाँद भी
पिलाएँगे जब जाम ये नैन मदहोश तेरे।
ओस में भीगी हुई
नर्म सुबहें हैं या कि
नशे के हसीन प्यालों में
डूबी हुई रातें
हर पल बस यही सोचता हूँ
कि आखिर,
क्या हैं ये तेरी आँखें!

256, **सेक्टर** 15 **ए**
फरीदाबाद (हरियाणा) 121007
मो॰ 08826143258

बीना शर्मा 'हनी'

दामिनी

नए रोज़ एक नई दामिनी
नए रोज़ एक नई गुड़िया
दरिंदे बेख़ौफ़ ताक में रहते
हर दिन नया खिलौना
मन बहलाने को जो चाहिए इनको।

कहीं दामिनी, कहीं गुड़िया
अबला हो या सबला, सब घुट रही हैं
मर रही हैं
शर्मसार कौन?
अस्पताल में मौत से लड़ती
गुड़िया ही तो
दुनिया को अलविदा कह गई
दामिनी ही तो
बाक़ी किसी को फ़र्क नहीं
कुछ दिन का कोहराम
इंसाफ़ की गुहार
धीरे-धीरे फिर वही दिनचर्या
और फिर एक दिन
बेख़ौफ़ दरिंदा कोई
निकल पड़ेगा
एक और खिलौने की तलाश में।

mshoneybeeeee@yahoo.co.in

फ़िरदौस ख़ान

मेरे महबूब

मेरे महबूब!
उम्र की तपती दोपहरी में
घने दरख़्त की छाँव हो तुम
सुलगती हुई शब की तन्हाई में
दूधिया चाँदनी की ठंडक हो तुम
ज़िंदगी के बंजर सहरा में
आबे-जमजम का
बहता दरिया हो तुम
मैं सदियों की प्यासी धरती हूँ
बरसता-भीगता सावन हो तुम
मुझ जोगन के
मन-मंदिर में बसी मूरत हो तुम
मेरे महबूब
मेरे ताबिंदा ख़्यालों में
कभी देखो सरापा अपना
मैंने दुनिया से छुपकर
बरसों तुम्हारी परस्तिश की है।

किताबे-इश्क

मेरे महबूब
मुझे आज भी याद हैं वो लम्हे
जब तुमने कहा था–
तुम्हारी नज़्में महज नज़्में नहीं हैं
ये तो किताबे-इश्क की
पाक आयतें हैं
जिन्हें मैंने हिफ़्ज कर लिया है
और मैं सोचने लगी–
मेरे लिए तो
तुम्हारा हर लफ़्ज ही
कलामे-इलाही की मानिंद है
जिसे मैं कलमे की तरह
हमेशा पढ़ते रहना चाहती हूँ।

ख़ामोश रात की तन्हाई

जब कभी
ख़ामोश रात की तन्हाई में
सर्द हवा का इक झोंका
मुहब्बत के किसी
अनजान मौसम का
कोई गीत गाता है तो
मैं अपने माजी के वर्क पलटती हूँ
तह-दर-तह यादों के जजीरे पर
जून की किसी गरम दोपहर की तरह
मुझे अब भी
तुम्हारे लम्स की गर्मी
वहाँ महसूस होती है
और लगता है
तुम मेरे करीब हो।

तुम्हारे ख़त

तुम्हारे ख़त
मुझे बहुत अच्छे लगते हैं
क्योंकि तुम्हारी तहरीर का
हर इक लफ़्ज
डूबा होता है जज़्बात के समंदर में
और मैं
जज़्बात की इस खुनक (ठंडक) को
उतार लेना चाहती हूँ
अपनी रूह की गहराई में
क्योंकि मेरी रूह भी प्यासी है
बिल्कुल मेरी तरह
और ये प्यास
दिनों या बरसों की नहीं
बल्कि सदियों की है
तुम्हारे ख़त मुझे
बहुत अच्छे लगते हैं
क्योंकि तुम्हारी तहरीर का
हर इक लफ़्ज अया होता है
उम्मीद की सुनहरी किरनों से
और मैं
इन किरनों को अपने आँचल में समेटे
चलती रहती हूँ
उम्र की उस रहगुज़र पर
जो हालात की तारीकियों से दूर
बहुत दूर जाती है
सच!
तुम्हारे ख़त मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।

ज़िंदगी की हथेली पर लकीरें

मेरे महबूब!
तुमको पाना और खो देना
ज़िंदगी के दो मौसम हैं।

बिल्कुल
प्यास और समंदर की तरह
या शायद
ज़िंदगी और मौत की तरह।

लेकिन अजल से अबद तक
यही रिवायत है-
ज़िंदगी की हथेली पर
मौत की लकीरें हैं
और सतरंगी ख़्वाबों की
स्याह ताबीरें हैं।

मेरे महबूब!
तुमको पाना और खो देना
ज़िंदगी के दो मौसम हैं।

firdaus.journalist@gmail.com

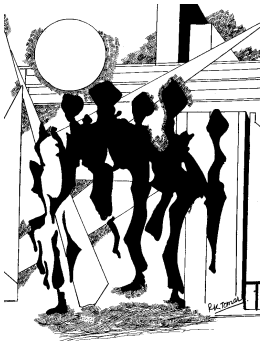

नीलम शर्मा 'अंशु'

ख़्वाब

तू किसी को ख़्वाब की मानिंद
अपनी नींदों में रखे
ये रज़ा है तेरी
पर यहाँ किस कम्बख़्त को
नींद आती है?
अरे, तुझसे भले तो ये अश्क हैं
कभी मुझसे जुदा जो नहीं होते!
टपक ही पड़ते हैं
भरी महफ़िल या तन्हाई में
बेमौसम बरसात की तरह
कहीं भी, कभी भी।

कैसा लगता है

मुझे पता है कैसा लगता है
जब सब कर रहे होते हैं इंतज़ार
बड़ी बेसब्री से, रविवार की शाम।
कब शाम हो और मेरी आवाज़
पहुँचे उन तक हवाओं की मार्फ़त
हवाओं पर होकर सवार।
मुझे यह भी पता है
कैसा लगता है जब
शहर में बारिश, आँधी-तूफ़ान का
नियमित दौर जारी हो।
यह भी कि जब आप घंटों तक
अपने सुनने वालों का मनोरंजन करें
अच्छे-अच्छे नग़मे सुनाएँ।
कैसा लगता है
और फिर घर वापसी के वक़्त
मौसम की बेवफ़ाई के कारण
यातायात के साधन भी
धोखा दे जाएँ,
विशेषकर शहर की धुरी मेट्रो।
मैट्रो के निकट पार्किंग में 'धन्नो'
इंतज़ार करती रहे और आप
उस तक पहुँच ही न पाएँ।
धन्नो तक पहुँचने में ही
घड़ी की सुइयाँ
आठ से दस पर पहुँच जाएँ
और उस तक पहुँचते ही
वो मात्र पंद्रह मिनटों में घर पहुँचा दे।
रश्क होता है धन्नो की वफ़ा पर
दिल रोता है दूसरे साधनों की
बेवफ़ाई पर।
(धन्नो' यानी मेरी स्कूटी।)

fmrjneelamanshu@gmail.com

राकेश रेणु

कैसे खो जाते हैं घर?

कैसे खो जाते हैं घर?
कोई मैना आती है
और चिड़िया के अंडों को तोड़कर
उसके घोंसले मिटा जाती है।
कोई ईंट-पत्थर आता है
और आँगन में लेट जाता है।
कोई माँ बीमार पड़ती है
और बेटा दवाई लेने
शहर चला जाता है।
या बहुत ज़ोरों की बारिश आती है
और मिट्टी के घरौंदे को
डुबो जाती है।
निर्णय करना कठिन है
पर निर्णय नहीं करने जितना
कठिन नहीं।

वक़्त बहुत कम बचा है
निर्णय-अनिर्णय के द्वंद्व में
गिरती जा रही हैं दीवारें
और भाप बनते जा रहे हैं
पोखर, तालाब
काले नाग की लंबी जीभ
बढ़ती जा रही है उस तरफ़
जिधर से कोई बस आती है
कभी कभार
अपने उदास बेटों को लेकर।

नन्ही हथेलियों के स्वप्न

उस दिन
जैसे पहली बार इंगित किया था।
आसमाँ साफ़ है, स्वच्छ है।
अपनी सारी गंदगी बुहारकर
धरती पर गिरा दी है उसने।

कितना अच्छा लगता है,
जब टिमटिमाते हैं तारे,
महकता है चाँद।
और चाँदी की झालर डाले
दमकता है आसमान।

कभी-कभी
फ़जूल-सा सवाल आ जाता है
दिल-ओ-दिमाग़ में कि
क्या आसमाँ ने
अपनी ख़ूबसूरती के बदले
किसी से कुछ नहीं लिया?

फुटपाथों पे थककर सोई हैं
अभी कोमल हथेलियाँ
(सुबह तक उन्हें
चट्टान जो बनना है)

सँजोए अपनी नन्ही आँखों में
नन्हे-मुन्ने सपने।
होटलों के कप-प्लेटों से दूर,
जहाँ वे अपना बचपन सँवारते
बोरे में भरते प्लास्टिकों से अलग
माँ की हथेलियाँ चूमते
एक ऐसी दुनिया
जो उनकी अपनी होती
स्वप्नों से बुने इसी जाल में फँसकर
नींद में अटक जाती हैं वे आँखें
फिर रात्रि के सागर में
गोते लगाते रहते हैं उनके स्वप्न
कभी ऊँची इमारतों से
टकराते हुए
कभी सड़कों पे उदास
भटकते हुए।

पौ फट रही थी,
किरणें छलछला आई थीं।
नन्हे तलवों की लालिमा
काले पहाड़ के प्रपंच में
विलीन हो रही थी।
सब-कुछ जस का तस था।
पर कोमल हथेलियाँ
चट्टान बन रही थीं
मुझे झटका-सा लगा
मैंने सोचा
उनके सपनों का क्या हुआ होगा?
जाकर देखा–
उसी फुटपाथ पर वे रखे हुए थे,

लेकिन,
उन पर पैरों के
कुचले जाने के
जख़्म उभर आए थे।

केंद्रीय विद्यालय नगाँव, असम
पो॰ इटाचाली पोलिटेकनीक कॉलेज
के नज़दीक, जिला नगाँव
असम 782003
मोबाइल 09401807149
ई-मेल-rakesh16ranjan@yahoo.com

मीना अग्रवाल 'असीम'

तीन ग़ज़लें

तेरे दो पलों पर भी अब मेरा हक नहीं
रोना मुझको सारा बस इसी बात का है

मुड़कर भी ना देखा तू आगे बढ़ गया
पुराना किस्सा नहीं ये कल रात का है

गलत चाल से सारी बाजी पलट गई
कमबख़्त खेल सारा शह-मात का है

तेरे दिल में होता था मेरा इक मुकाम
कसूर तेरा नहीं बदले हालात का है

इतनी जल्दी-जल्दी यूँ कैसे बदल गए
सवाल दिल का नहीं, जज़्बात का है

तुझे जीतने चले थे दिल हार के उठे
अजीब तजुरबा दिल की बिसात का है

जिसने मेरी आंखों को धूमिल कर
दिया धुआँ उठता वो तेरे ख़्यालात का है

इस शोर ने मुझको बहरा कर दिया है
यादों की गुजरती जो बारात का है

मेरी हर एक बात सिर्फ़ उनके लिए
उमड़ते हैं जज़्बात सिर्फ़ उनके लिए

क्यों न उन पर ही सब लुटा दूँ साँसों
की सौगात सिर्फ़ उनके लिए

हाथों में लिए हैं कुछ अधबुने सपने
सर्दी की शुरुआत सिर्फ़ उनके लिए

इकट्ठा हो गई हैं कई हसरतें अब
रखो एक मुलाक़ात सिर्फ़ उनके लिए

रोज़ चली आती है मुझको ब्याहने
यादों की बारात सिर्फ़ उनके लिए

बेला चमेली और कुछ हरसिंगार
महकाई एक रात सिर्फ़ उनके लिए

पलकों पर टाँक कर सितारे अनगिन
आसमाँ को दी मात सिर्फ़ उनके लिए

उस एक शख़्स को रखकर अपनी ओर
छोड़ दी कायनात सिर्फ़ उनके लिए

यूँ तो रंग दिए कई पन्ने ए 'असीम'
लिखे चंद कतआत सिर्फ़ उनके लिए

खुशियों से मेरी झोली भरी है
फिर भी क्यूँ दिल में कोई कमी है

बात कर रहे थे अभी हँसते-हँसते
अचानक आँखों में कैसी नमी है

अपने-अपने कामों में मसरूफ़ हैं सब
लगन मुझको बस एक तेरी लगी है

रोज सोचती हूँ आज कह ही दूँगी
लब पर मगर सारी बातें रुकी हैं

तेरे ख़्यालों में जब भी गुम होके देखा
बड़ी जानलेवा ये दिल की लगी है

अपनी जानिब मैं कितना भुला दूँ
यादों की लगती हर पल झड़ी है

जमाने को अक्सर बुरा ही लगा है
असीम अपने दिल की जब भी कही है

सहायक
पशु-चिकित्सा अनुसंधान
संस्थान, इज्जतनगर (बरेली)
aneemagarwal@gmail.com

शालिनी खन्ना

वो खिलौनेवाला

वो खिलौनेवाला
आज फिर नज़र आया था
वही खिलौनेवाला
उसी व्यस्त चौराहे पर
जिसे काफ़ी वर्षों से
देखती आ रही थी
उसी दस हज़ार वर्गमीटर के
क्षेत्रफल में
बाँस के वैसे ही डंडे में लटकाकर
घूमते हुए
तरह-तरह की आवाज़ों वाले
रंग-बिरंगे खिलौने।
अब तो झुर्रियों की परतें
और भी स्पष्ट
नज़र आ रही थीं और साथ ही,
लगभग पूरे सफ़ेद बाल..
यक़ीनन ही धूप में सुखाए हुए नहीं
उसकी पारखी नज़र
देखते ही ताड़ लेती कि कौन है
इन सबमें
उसके खिलौनों का असली ख़रीददार।
मध्यमवर्गीय लोगों को देखते ही
तरह-तरह के
खिलौनों की आवाज़ से
आकृष्ट करता उस ओर
उसे पता है कि उनकी जेब
इज़ाजत नहीं देगी
बावजूद, बच्चों की मुस्कान
बरकरार रखने की
करेंगे ये कोशिश पुरज़ोर
इन्हीं खिलौनो में से चुनेंगे
किसी एक को
सस्ते से, रंग-बिरंगे
महँगी गाड़ी से किसी सूट-बूट
वाले को उतरते देख
वह हट जाता है कटकर एक ओर
क्योंकि उसे पता है कि
ये 'बाबू टाइप' लोग
अपने बच्चों को
उसके ये सस्ते खिलौने
कभी नहीं दिलाएँगे
पर यह कहकर उसका मनोबल
अवश्य गिराएँगे।
'क्यों सस्ते-से खिलौने से
बच्चे को लुभाते हो
क्यों घटिया चीज़ें दिखा-दिखाकर
इन्हें रुलाते हो
फिर बच्चे की ओर
मुखातिब होकर कहेंगे
ऐसे सस्ते-से सड़कवाले
खिलौनों का
क्या करोगे बेटे, चलो मॉल में
तुम्हारी पसंद के
अच्छे खिलौने हैं लेते।'
यह देख आँखों में
आँसू आ जाते अक्सर
पर अंदर-ही-अंदर कर जाता जज्ब
उन्हें भला कहाँ पता है,
उसने कैसे दिन गुज़ारे हैं
ये खिलौने ही तो
उसके जीने के सहारे हैं इसी से तो
बीमार पत्नी की दवाइयों का ख़र्च
है निकल पाता
ये न होता तो भला बेटियों का
ब्याह कैसे निबट पाता
बेटे की पढ़ाई भी आगे न बढ़ पाती
ज़िंदगी रुकी हुई-सी बोझ नज़र आती
ये खिलौने ही तो
जीने के मक़सद हैं
वरना ज़िंदगी होती
बड़ी मुश्किल औ' बेदरद है।

गत्यात्मक ज्योतिष विशेषज्ञा
झरिया, धनबाद, झारखंड 828111

भारत दोसी

चिंगारियाँ

चिंगारियों को हवा दो शोले बना दो
जल जाए व्यवस्था
कुछ ऐसी आग दो
सेकेंगे लोग हाथ तो क्या हुआ?
रोशनी भी तो देगी चिंगारी
बस तुम हवा दो।

तुझे बुरा क्यों नहीं लगता

क्यों, तुझे बुरा क्यों नहीं लगता
जब घर जाते ही
दौड़ता आता है तेरा नंगा बच्चा।

आँगन में जाते ही
घरवाली पूछती है
आज भी नहीं मिला कुछ काम
आ गए ख़ाली हाथ
जेब में नहीं दाम।

दूर खाट पर बैठी माँ
अपने फटे चिथडें सँभालती
तुझे देख मुस्काती।
पिता हाथ की झुर्रियों को देखता
कभी किए काम को तोलता।

वक़्त को कोसता
तुझसे हो रहा निराश।
क्या सचमुच
तुझे बुरा नहीं लगता?

58/5, **मोहन कॉलोनी**
बाँसवाडा (राज॰)
मो॰ 09799467007

डॉ. (सुश्री) शरद सिंह

1

दरिंदे घूमते हैं टोह लेते भेड़ियों से
भला कैसे हों अब आबाद घर की बेटियाँ
बना वहशी किसी नन्ही परी को देखकर
उसे आई नहीं क्या याद घर की बेटियाँ

2

मेरी आँखों को जाने ख़्वाब कैसा दिख रहा है
सुलगती रेत में भी एक दरिया बह रहा है
परिंदे उड़ रहे हैं तोड़कर पिंजरों के ताले
वो मुझसे दूर होकर साथ मेरे रह रहा है

3

सुबह से शाम तेरा इंतेज़ार रहता है
तू आएगा ये हवाओं का रुख़ भी कहता है
अजीब शै है मेरा दिल भी, क्या कहूँ इसको
ये ख़ुद है काँच का, पर पत्थरों में रहता है

4

समाजों के तराज़ू पर मुझे ना तौलकर देखो
मुहब्बत नाम है मेरा, मुझे तौला नहीं जाता
ये अपनी जात का है और वो उस जात का बंदा
अगर इंसानियत है तो, ये सब बोला नहीं जाता

5

मोहब्बत में शरारत का मज़ा कुछ और होता है
कहा इक ने तो दूजे ने सुना कुछ और होता है
यही तो है अलग अंदाज़ जीने और मरने का
कि दुनिया और कुछ समझे, हुआ कुछ और होता है

एम-111, **शांतिविहार, राजाखेड़ी, सागर** 470004 **(म०प्र०)**
www.facebook.com/pages/Sharad.Singh
www.facebook.com/sushrisharad.singh
www.facebook.com/PichhalePanneKiAuraten
drsharadsingh@gmail.com

'खुरशीद', खैराड़ी

धूप कहीं पर और कहीं पर शीतल छाया रघुवर जी
दुख-सुख के दो रंगों से क्या खेल रचाया रघुवर जी

अंत समय पर भेद खुला यह बेगानी थी वो माया
जिस गठरी का जीवन-भर से बोझ उठाया रघुवर जी

पाँव दुपहरी में छूता था बनकर जो अनुचर तन का
साँझ ढली तो वो साया भी पास न आया रघुवर जी

प्यार वफ़ा की बातें करना नादानी है इस युग में
हमने इस दीवाने दिल को फिर समझाया रघुवर जी

ख़ाली हाथ यहाँ पर आना, ख़ाली हाथ चले जाना
जग के इस मेले में क्या खोया क्या पाया रघुवर जी

खुद को कितना निर्बल समझे
हम धागे को साँकल समझे

प्यास छलक आई आँखों में
लोग धुएँ को बादल समझे

अब तो केवल धँसते जाना
दलदल को हम साहिल समझे

सावन के अंधे कुछ सपने
जो काँटे को कोंपल समझे

तोड़ा प्यार भरा दिल मेरा
तुम सोने को पीतल समझे

साथ दिया फिर सच का मैंने
लोग मुझे भी पागल समझे

राहजनों ने फिर-फिर लूटा
हम रस्ते को मंज़िल समझे

'खुरशीद' खैराड़ी जोधपुर (राज.) 09413408422

मणिक

आदिवासी

ये सातवें दिन के हाट भी ग़ज़ब हैं
हाँ इकलौते बड़े ज़रिये हैं
मिलने-मिलाने
गीत गाते दुख बिसराने के
रोचक साधन हैं खिलखिलाने के
साधनहीनों का मन बहलाने के
ज़रूरी साधन है हाट।

मुलाक़ातों की ये पंचायत
देवीय उपहार-सी लगती है
उन तमाम साँवले वनवासियों को
दे जाती है स्वप्न
सप्ताह काटने के लिए
थमा जाती है एक विषय
बतियाने-गपियाने का।

उस दिन वे भूल जाते हैं
दम तोड़ते जंगल का रोना
नदी के पानी में
फैक्ट्री के गंदे निकास का दर्द
घरों में भूखे मरते ढिंकड़े-पूँछड़े
भूल जाते हैं
बाँध बनने से ख़ाली होती
उनकी अपनी बस्तियों की कराह।

क्रोध को मुठ्ठियों में भींचे
युवाओं को
उस रात नज़र नहीं आते
थोक के भाव आरा मशीनों में
कटते हुए पेड़
असल में
उत्साह के मारे थकी देह जल्दी
सो जाती है उस रात।

उन्हें उस रात याद नहीं आता
पथरीली शक्ल का ठेकेदार
जो कम तोलकर कम देता है
मौड़े, अरंडी, कणजे,
तेंदू पत्तों का मोल
मजबूरी में मजूरी का आभास
खो जाता है उस रात।

उन्हें सिर्फ़ याद रहता है क्रम
हाट के लगने और फिर उठने का
वे जानते हैं
उन्हें सोमवार को जाना है पृथ्वीपुरा
चूक गए तो मंगल का दिन
घंटाली जाना पड़ेगा
ये भी न हुआ तो दूजे इलाक़े में
दानपुर का बुधवारिया हाट तो है ही।

पढ़े-लिखे
स्कूली बच्चे तक जानते हैं
गुरुवार को
अरनोद में मेला लगना है
औरतें शुक्रवार की बाट में हैं
जहाँ तेजपुर में वे गुदना गुदाएँगी
उन्हें मालूम है
काजल, टिक्की और लिपस्टिक का
एक बाज़ार ज़रूर लगेगा
उनकी काली देह के
सजने-सँवरने के लिए।

वही व्यापारी, वही दुकानें
वही स्नेह
वही उधारी की सामान्य शर्तें
इस तरह कट जाता है
सात दिन का इंतज़ार
विश्वास और पहचान के सहारे
फिर आ सजता है हाट।

अरे हाँ विश्वास और भोलापन ही तो
इनके पास अवशेष है अब।

शनि को सालमगढ़ और रवि को
दलोट लगेगा
बिग बाज़ार की माफ़िक
उनकी दुनिया में एक मेला
जहाँ फिर से सब-कुछ बिकेगा
सब्ज़ी-भाजी से लेकर
मायरे-मुंडन के सामान
शादी-मोसर से जुड़े कपड़े-लत्ते
सब सब सब!

सच बोलें तो
हाट से पैदा ये आनंद और उल्लास
इनकी क़िस्मत का अवशिष्ट है
मुआफ़ करना
आपको क़सम है
इनके इतने से उल्लास पर
नज़र पर मत लगाना
आपकी अब तक की बाक़ी
करतूतों की तरह।

संस्कृतिकम्, चित्तौड़गढ (राजस्थान)
मो॰ 09460711896
ई-मेल manik@apnimaati.com

रुचि भल्ला

बुद्ध

यशोधरा सुन,
अच्छा ही हुआ कि उस एक रात
तू सोती रही गहरी नींद
और सिद्धार्थ चला गया
दबे पाँव।
जो तू जाग जाती
तो कैसे जा पाता सिद्धार्थ
कैसे जागता संसार
तेरी नींद निष्फल नहीं रही
खोल दी उसने
बुद्ध की आँख।

एम 506, **सिसपाल विहार**
सैक्टर 49, **गुड़गाँव** 122018
मो॰ 09560180202
ई-मेल–ruchibhalla72@gmail.com

निशा कुलश्रेष्ठ

रुआँसी नदी

इससे अधिक ज़ोर से
नहीं बोल सकती
बोल सकती तो बोल देती नदी,
इससे अधिक ज़ोर नहीं रो सकती
जो रो सकती, तो रो देती नदी,
लेकिन सच है
कुछ संवेदनाओं को बाँधना पड़ता है
चुप्पी ओढ़नी ज़रूरी है तब,
जब अंदेशा हो तूफ़ानों के आने का।

जैसे किसी नदी के बहाव से
होने वाली बर्बादी से बचने के लिए
बाँध दिए जाते हैं बाँध
नदी के तट पर
और रोक लिया जाता है
नदी के तेज़ बहाव को
किसी तबाही के होने से पहले।

शहर तो बच जाता है
तटबंध बन जाने से
किंतु नदी के सीने में
बची रहती है बेचैनी
रोके गए बहाव से
बाँधा गया पानी
कसमसाकर रह जाता है
कुछ घोंघे और सीपियाँ
सहमी-सहमी-सी
नदी के किनारे पर उगी हुई घास
बालू में कुछ चमचमाते चाँदी से कण
कहते हैं सभी, सुनो,

नहीं कहना अब
किसी को मुझे अलविदा
नहीं होना अब मुझे
किसी से कभी अलहदा
नहीं रोना अब
किसी के लिए होकर जुदा
बहने दो, बहने दो, मुझे बहने दो।

अबला नारी

बंद महलों जैसे घरों में
घुटनों में मुँह दिए
सिसकती रही लाचारी।
गाँव की कच्ची दीवारों के पीछे
घिसी हुई चुन्नी में मुँह छुपाए
जबरन मुस्कराती रही बेचारी।
चमचमाती गाड़ियों में
काले चश्मों के पीछे से
गड़ जाती हैं गाहे-ब-गाहे कुछ निगाहें
धूल से भरे मैले कुचैले से
उघड़े तन पर।
दाएँ-बाएँ यहाँ, वहाँ से
ढाँपने की कोशिशों में
और भी उघड़ती गई
यौवन की मारी।
ओ बेचारी!
तू महलों में भी अबला नारी
और सड़कों पर भी अबला नारी।

डी-116, **गरिमा विहार, सेक्टर** 35
नॉएडा, (यू.पी.) 201301
मो॰ 09718046020
ई-मेल-
nisha.kulshreshtha@gmail.com

अंतरा करवड़े

तुम लड़की

तुम फूल क्यों नहीं हो जातीं लड़की
एक रंग तो तय हो जाएगा तुम्हारा
माँ-बाप के ताने,
सड़कों की नज़रें
चंद काँटों में हिसाब हो जाएगा सारा।।
फिर देखा करना आसमानों में
कोई न नापेगा नज़र न बदन
बतियाना भँवरों से खुल के
खोल देना ये मन के बंधन
वक़्त जात-रिवाजों की चक्की
लड़की पिसकर रिश्ते में बँधी
कसौटी की आँच पर तपकर फूली
खाने में बँटे सपने की खुशबू सौंधी।

तुम रोटी क्यों नहीं हो जातीं लड़की
एक आकार तो तय हो जाएगा तुम्हारा
धरती से रिश्ता
भूखी आँखों में इज़्ज़त
कोई न कहेगा फिर तुम्हें बेचारा
फूला करना अपने अरमानों से
हाथ-हाथ से टूटा करना
चूल्हे की आग से पेट की आग तक
आँच-आँच तपना प्राणों से
भरे पेट कोई न पूछे
भूख तुम्हारी क़िस्मत में
बहती रहना फिर नदी के जैसे
अंधे कुएँ में भूख के पीछे।

तुम नदी क्यों नहीं हो जातीं लड़की
एक राह तो तय हो जाएगी तुम्हारी
रिश्ते दहेज़ तानों से बचोगी
समुंदर में खो जाएगी मिठास ये सारी
निर्बंध लड़की तुम बहती रहना

प्यासी मिट्टी की गोद को भरते
फूल मौसम खुशहाली के तले
आँसू सबके पीती रहना
कभी फूल, फिर रोटी और नदी-सी
रंग आकारों में राह खोजती
कभी तो औरत होने से पहले
एक दिन को तो
लड़की हो जाना तुम।

117, **श्रीनगर विस्तार**
इंदौर (म.प्र.)
ईमेल–greatantara@gmail-com

अंजलि दीक्षित

पंखों में लगी इस जंग को
छुड़ाना चाहती हूँ
मैं ऊँचे आसमानों में
पंख फैलाना चाहती हूँ
कैद सपनों को
नींद की बंद संदूकची खोलकर
एक नई-सी दुनिया पाना चाहती हूँ
समंदरी लहरों पे
रेत की विसात सजा कर
साहिलों की बोलियाँ
लगाना चाहती हूँ
यूँ गुमनाम-सी पड़ी सिलवटों से
चट्टानों से
आशाओं की नए सीपी, नए मोती
ढूँढना चाहती हूँ
जख़्म को अपनी नई ताक़त बना
एक नई मंज़िल पे जाना चाहती हूँ।

कार्यवाहक प्राचार्या
शहीद भगत सिंह विधि
महाविद्यालय, बिठूर कानपुर
anjalidixitlexamicus@gmail.com
मो॰ 09696189149

मंजु मिश्रा

तमाशा

जब
सात जन्मों के साथी
खड़े हो जाते हैं
एक-दूसरे के विरुद्ध
तब छिड़ता है एक युद्ध।

हथियारों की तरह
उछाली जाती हैं भावनाएँ
और बन जाती हैं
तमाशा सरेआम।

क्या फ़र्क पड़ता है!

मैं एक पत्ता
शाख़ पर रहूँ,
या शाख़ से अलग
क्या फ़र्क पड़ता है!
टूटा तो भी सूखा
न टूटता तो भी सूखता
मुझे तो अपनी जड़ से
उखड़ना ही था!
हाँ, अगर किसी किताब के पन्ने में,
दबा होता तो शायद
कभी इतिहास की तरह
उल्टा-पुल्टा जाता!

गिद्ध

जब-जब नारी ने
पुरुष को आजमाया है
सच पूछो तो बस
जानवर ही पाया है
रंग का, रूप का
वक़्त का, हालात का
फ़र्क चाहे जो भी रहा हो
किसी ने प्यार से
किसी ने प्रहार से
पर
गिद्ध की तरह
मांस ...सबने नोंच खाया है!

एक तुम और एक मैं

एक तुम हो
तुमने पत्थर तराशा
और देखो
कितना सुंदर बुत बना दिया
लोग कहते हैं तुम्हारे हाथों में जादू है
तुमने पत्थर में जान डाल दी!

एक मैं हूँ
एक जानदार
हाड़-मांस का पुतला बनाया
तराशती रही उम्र भर
और न जाने कैसे
वो पत्थर बन गया!

सपना भीगता रहता है

काँपता-सा एक सपना
भीगता रहता है
मेरे मन की बारिश में
बहुत कोशिश करती हूँ
इसे पोंछ-पाँछकर
थोड़ी धूप दिखा दूँ
लेकिन ये माने तब न!
ये तो किसी नटखट बच्चे-सा
मेरी नज़रें बचा
बस लटका रहता है
पलकों की कोरों पर।

3966 Churchill Dr.
Pleasanton California 94588
manjumishra@gmail.com

अनामिका कनौजिया प्रतीक्षा

झूलती हुई डाल

जहाँ तुमने छोड़ी थी
झूलती हुई डाल अब वहाँ
एक सूखी उदासी फूट रही है।

घोंसला बनाने से
डर रही है वो गौरैया
जिसे पिछले बरस
तुमने दिए थे वादों के तिनके
और प्यार की कुछ कतरनें।

सुना था मैंने
कि पंख उसके उड़ने की वजह थे
जिसे जाते वक़्त
माँग ले गए थे तुम उपहारस्वरूप।
और दे गए थे
एक झूलती हुई डाल
बनाने को नया घोंसला
बिना पंखों के।

बृहस्पति

हर पीले बृहस्पतिवार को
हो जाती है मेरी ज़िंदगी नीली
बटोर लाते हो तुम भी कड़वे पत्थर
तोड़ने को मेरे मीठे स्वप्न।

रोज़ उग आती है फफूँद
मेरे जेहन में
कसैला करने को तुम्हारा प्यार।
और हो जाता है फ़ैसला
बिना परैवी किए मेरे अपराध का
सुनो!
तुम अगर चाँद हो तो
मेरे आँगन में मत चमकना
क्योंकि ग्रसित है मेरा बृहस्पति
राहू-केतु से।

कितना ज़रूरी है

कितना ज़रूरी है यहाँ
एक बेटी के लिए बाप,
बहन के लिए भाई,
पत्नी के लिए पति
बिना इन रिश्तों के
स्त्री के लिए जीवन अभिशाप है।

जब वो बाग़ में
तितलियाँ पकड़ती है
तो उसके संग खेलने के बहाने
साथ रहता है उसका पिता हर वक़्त।
जिसका ध्यान खेल से
ज़्यादा रहता है उन राहगीरों पर
जो उसकी बेटी को खेलता देख
ठिठक गए हैं राहों में
और पढ़ता है
उन सबकी मुस्कानों को
जो उसकी बेटी के प्रति
रखती हैं अच्छे और बुरे भाव।

जवानी की दहलीज़ पर भाई
बाप की जगह बन जाता है
उसका रक्षासूत्र
नज़र रखता है
स्कूल से घर तक
और घर से बाज़ार तक
मिलने वाले हर उस शख़्स पर
जो करता है उससे बातें
मुस्कराकर
या देता है उसे तोहफ़े
बेवजह, बिना ओकेजन।

अग्निकुंड के फेरों पर
एक बलिष्ठ भुजाओं का स्वामी
बन जाता है
उसका अंगरक्षक
जो रखता है जानकारी
इस बात की
कि पड़ोस से रिश्तेदारी तक
कौन-कौन आता मिलने
उससे
करता है कैसी-कैसी बातें
क्यों रहता है हर वक़्त
उसे देखकर मुस्कराता
ये सब पुरुष तत्पर हैं
उसे उन सबसे बचाने के लिए
जो हैं किसी के बाप,
भाई या पति।

प से प्रेम

ज़िंदगी की स्लेट पर
उसने बहुत कोशिश की
प से प्रेम लिखने की
पर यादों के सवाल
जो अधूरे थे
वो अधूरे ही रह गए
कभी-कभी ज़िंदगी बेवक़्त ही
पूरी हो जाया करती है
हथेलियों पर बनी
आड़ी-टेढ़ी रेखाएँ
नहीं हल कर पातीं
ज़िंदगी का
कोई भी रेखागणित
साँसें स्याही तो नहीं हैं
किंतु लिख देती हैं
मजबूरी जीने की
और आप ज्यॉमेट्री बॉक्स में बंद
पेंसिल की तरह
इंतज़ार करते हैं
लिखे जाने का 'प्रेम'।

फायमा जोन, त्यागी डेयरी के पास
न्यू आदर्शनगर
रुड़की (हरिद्वार) 247667
ईमेल-
Anamika.pragya2108@gmail.com

अंशु रत्नेश त्रिपाठी

गर्मी की तपिश में वर्षा की पुकार

इंद्रधनुष हाथन में लेकर
बादल आ जा रे!
ठीक मुँहारे चिनगी बरसै,
पोखर फटे बिवाई
माँझी नाव निहारे अपनी
रूठ गई पुरवाई
गाँव-गिराँव भिगोने फिर से
पागल आ जा रे!

खेत हो गए परती अब तो
जरै धूप से जरई
रात-रात भर नींद न आवै
अँखियाँ गिनतीं तरई
नैनन में फिर से बसने बन
काजल आ जा रे!
बूँद-बूँद के लिए तरसती
धरती तुझे अगोरे
अँगना लागे आपन जैसे
कोई खीस निपोरे
पोर-पोर में ताल पिरोते
बादल आ जा रे!
नहर-नहर नदिया गोहराए
पिहुक पपीहा टेरे
उल्टी चले बयार पुरब को
जाने किसको हेरे
अंबर से लेकर अथाह गंगाजल
आ जा रे!
उर में अनगिन चित्र सहेजे
उनको कभी उकेरे
बैठी आस लगाए विरहिन
जोहे साँझ-सबेरे
आख़िर कब तक सुधियाँ सिरजे
साँवल आ जा रे!
मनो लुहार धौंकनी धोंके
ऐसी चलें लुआरें
प्राणी-प्राणी आकुल होकर
नभ की ओर निहारे
नीले-नीले नीलांबर के
पाटल आ जा रे!

आशावादिता

निश्चित है
हर क्षण बदलेगा
तुम सपनों की कथा कहो तो।

आसमान से नीचे आकर
छत पर बूढ़ा चाँद हँसेगा
जंगल होगा, बौने होंगे
परियों का फिर गाँव बसेगा।
नदी हमारी निर्मल होगी
तुम लहरों के संग बहो तो।

ठूँठ हुआ है यह जो बरगद
उसमें नई कोंपलें होंगी
दुआ फलेगी साधु की फिर
नहीं रहेगा कोई ढोंगी।
गीत बनेंगे सारे पल-छिन
तुम दूजों के दर्द सहो तो।

महिमा सपनों की गाथा की
बच्चे फिर से बच्चे होंगे
साँस-साँस में ख़ुशबू होगी
रिश्ते सीधे सच्चे होंगे।
दिन जाने-पहचाने होंगे
तुम अपने घर-घाट रहो तो।

anshu2605@gmail.com

अनामिका चक्रवर्ती

तुम्हें एहसास हो न हो

एक शाम रोज़ आती है
और सुबह में बदल जाती है।
उस शाम और सुबह के बीच
एक अँधेरा,
तेरी यादों की रोशनी लिए
मेरी आँखों में ठहरता है।
नींदें चुन-चुन
कुछ ख़्वाब बुनता है।

तुम्हारे बिना

यादों के घरोंदे से,
जब तेरी ख़ुशबू आती है।
तब मेरा आज महकता है।
तू नहीं पर तेरी,
घड़ी की टिक-टिक से,
मेरी धड़कनों को हौसला आता है।
जीवन मझधार में छोड़ गया तू
साथ मगर,
तेरे सपनों का महल,
मुझको नज़र आता है।
भर आती जब भी आँखें याद में तेरी।
आसमाँ में मुझको,
एक तारा चमकता नज़र आता है।
तू दे गया जीने की वजह मुझे।
तेरे बच्चों में ही,
तेरा साथ नज़र आता है।

द्वारा श्री सुशांत चक्रवर्ती
वार्ड नं॰7-नार्थ जे॰के॰डी॰, मनेंद्रगढ़
(कोरिया) छत्तीसगढ़ 497446

44 वाँ अखिल भारतीय टेपा सम्मेलन

अंतर्राष्ट्रीय मूर्ख दिवस पर 1 अप्रैल 2014 की संध्या कालिदास अकादमी के मुक्ताकाशी रंगमंच पर 44 वें अखिल भारतीय टेपा सम्मेलन का भव्य आयोजन हुआ, जिसमें प्रसिद्ध हास्य-कवियों ने श्रोताओं को खूब हँसाया। टेपा सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष डॉ॰ शिव शर्मा ने अपनी वार्षिक टेपा रपट जारी की। 44 वें टेपा सम्मेलन में लाला अमरनाथ स्मृति टेपा सम्मान प्रसिद्ध कवि श्री प्रदीप चौबे को प्रदान किया गया। समाजसेवी स्व॰ श्री गंगाधर जसवानी द्वारा स्थापित गणेशशंकर विद्यार्थी मंडल टेपा सम्मान कवि डॉ॰ सुरेश अवस्थी को प्रदान किया गया। कवि सम्मेलन में प्रदीप चौबे, डॉ॰ सुरेश अवस्थी, राजेंद्र राही, राशि पटेरिया, दिनेश देशी घी ने खूब हँसाया। कवि सम्मेलन का संचालन कवि श्री दिनेश दिग्गज ने किया।

अशोक 'अंजुम' को एक लाख एक हजार रुपए का नीरज पुरस्कार

उ॰प्र॰ शासन द्वारा अलीगढ़ प्रदर्शनी में गत वर्ष से दिया जाने वाला 'एक लाख एक हज़ार रुपए' का 'नीरज पुरस्कार' प्रदर्शनी के समापन समारोह में चर्चित कवि श्री अशोक 'अंजुम' को प्रदान किया गया। पुरस्कार प्रदानकर्ताओं में कार्यक्रम अध्यक्ष पद्मभूषण नीरज जी के साथ-साथ अलीगढ़ मंडल के कमिश्नर श्री टी॰ वेंकटेश, प्रभारी जिलाधिकारी शमीम अहमद आदि ने इस उपलब्धि के लिए अशोक 'अंजुम' को बधाई दी।

ढींगरा फैमिली फाउन्डेशन-हिन्दी चेतना अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों की घोषणा

उत्तरी अमेरिका की प्रमुख त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका 'हिंदी चेतना' तथा 'ढींगरा फैमिली फाउंडेशन अमेरिका' द्वारा प्रारंभ किए गए सम्मान इस वर्ष निम्न लिखित साहित्यकारों को दिए

जा रहे हैं–ढींगरा फैमिली फाउंडेशन हिंदी चेतना अंतर्राष्ट्रीय साहित्य सम्मान (समग्र साहित्यिक अवदान हेतु) प्रो॰ हरिशंकर आदेश (उत्तरी अमेरिका-ट्रिनिडाड), ढींगरा फैमिली फाउंडेशन हिंदी चेतना अंतर्राष्ट्रीय कथासम्मान : उपन्यास-कामिनी काय कांतारे (महेश कटारे) भारत, कहानीसंग्रह उत्तरायण (सुदर्शन प्रियदर्शिनी) अमेरिका। सम्मान 26 जुलाई 2014 शनिवार को कैनेडा के स्कारबोरो सिविक सेंटर में आयोजित समारोह में दिया जाएगा। पुरस्कार के अंतर्गत तीनों रचनाकारों को शॉल, श्रीफल, सम्मानपत्र, स्मृतिचिह्न, पाँच सौ डॉलर (लगभग 31 हजार रुपये) की सम्मानराशि, कैनेडा आने जाने का हवाई टिकिट, वीसा शुल्क, एयरपोर्ट टैक्स प्रदान किया जाएगा एवं कैनेडा के कुछ प्रमुख पर्यटनस्थलों का भ्रमण भी करवाया जाएगा।

जानकारी देते हुए बताया गया है कि मध्यप्रदेश के ग्वालियर के बिन्हैरटी गाँव के लेखक महेश कटारे पेशे से किसान हैं। हिंदी के महत्त्वपूर्ण कहानीकार श्री कटारे के अभी तक पाँच कहानीसंग्रह छप चुके हैं। सम्मानित उपन्यास कामिनी काय कांतारे राजा भर्तहरि पर लिखा गया उनका वृहत् तथा शोधपरक उपन्यास है जो दो खंडों में प्रकाशित हुआ है। अमेरिका के ओहेयो की लेखिका सुदर्शन प्रियदर्शिनी के अब तक चार उपन्यास तथा चार कवितासंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उन्हें उनके कहानीसंग्रह उत्तरायण के लिए यह सम्मान प्रदान किया जा रहा है। केनेडा निवासी प्रो॰ हरिशंकर आदेश की 180 से अधिक कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। समग्र साहित्यिक अवदान हेतु उन्हें सम्मान प्रदान किया जा रहा है।

देश-विदेश की उत्तम हिंदी साहित्यिक कृतियों एवं साहित्यकारों के साहित्यिक योगदान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित करना ढींगरा फैमिली फाउंडेशन- अमेरिका का उद्देश्य है।

कमला गोइन्का फाउंडेशन पुरस्कारों की घोषणा

कमला गोइन्का फाउंडेशन द्वारा हिंदी से कन्नड़ अथवा कन्नड़ से हिंदी के सर्वश्रेष्ठ अनुवादक के सम्मानार्थ घोषित इक्कीस हजार रुपये राशि का पिताश्री गोपीराम गोइन्का हिंदी-कन्नड़ अनुवाद पुरस्कार इस वर्ष डॉ॰ काशीनाथ अंबलगे को उन की अनुसृजित कृति सुमित्रानंदन पंत अवरा कवितेगळू के लिए दिया जा रहा है।

इस अवसर पर कर्नाटक के वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार श्री रंगनाथराव राघवेंद्र निडगुंदि जी को गोइन्का हिंदी साहित्य सम्मान से एवं प्रो॰ मालती पट्टणशेट्टी को गोइन्का कन्नड़ साहित्य सम्मान प्रदान किया जाएगा। संग-संग कर्नाटक की सिरमौर धर्मस्थल की प्रतिष्ठित समाजसेवी श्रीमती हेमावती वी॰ हेगडे को दक्षिण ध्वजधारी सम्मान दिया जायेगा।

कमला गोइन्का फाउंडेशन के प्रबंधन्यासी श्री श्यामसुंदर गोइन्का के अनुसार बैंगलौर में निकट भविष्य में आयोजित एक विशेष समारोह में चयनित साहित्यकारों को पुरस्कृत व सम्मानित किया जाएगा।

डॉ॰ तारिक असलम 'तस्नीम' एवं आभा भारती को 'परिधि सम्मान'

हिंदी-उर्दू मजलिस, सागर म॰प्र॰ के द्वारा आयोजित 20 वें वार्षिक समारोह में परिधि पत्रिका के 12 वें वार्षिकांक के विमोचन के पश्चात् पटना, बिहार से आमंत्रित प्रतिष्ठित साहित्यकार, कथाकार एवं कथासागर के संपादक डॉ॰ तारिक असलम 'तस्नीम' एवं दमोह से पधारीं प्रसिद्ध छायाकार एवं साहित्यकार श्रीमती आभा भारती को नवाँ परिधि सम्मान सम्मानपत्र, सम्मानराशि, प्रतीक चिह्न, शाल एवं श्रीफल प्रदान किया गया।

डॉ॰ सुरेश अवस्थी व पुराणिक को काका हाथरसी सम्मान

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में प्रसिद्ध व्यंग्यकार आलोक पुराणिक और हास्य-व्यंग्य के कवि व दैनिक जागरण वेब पत्रकार डॉ॰ सुरेश अवस्थी को काका हाथरसी ट्रस्ट की ओर से काका हाथरसी सम्मान दिया गया। ट्रस्ट की तरफ से उन्हें श्रीफल, शॉल और सम्मान राशि दी गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार नरेंद्र कोहली ने की। इस अवसर पर स्वर्ण ज्योति की पुस्तक 'एक कुल्हड़ चाय' और मीना अग्रवाल तथा गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा संपादित पुस्तक 'वृहद हिंदी साहित्यकार संदर्भ कोश' का लोकार्पण भी किया गया।

हॉल संख्या 18 में आयोजित इस कार्यक्रम में कवि अशोक चक्रधर ने कहा कि हास्यव्यंग्य की स्थिति प्रतिपल ओजस्वी हो रही है। वरिष्ठ व्यंग्यकार प्रेम जनमेजय ने कहा कि काका हाथरसी से मिलकर कोई उदास नहीं रह सकता था। आज व्यंग्य काफी लोकप्रिय हो रहा है। उन्होंने कहा कि आलोक पुराणिक ने हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवींद्रनाथ त्यागी की परंपरा को आगे बढ़ाया है। डॉ॰ सुरेश अवस्थी ने कहा मुझे काका जी को सुनने और मंच साझा करने का मौका मिला है। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे इस पुरस्कार के लिए चुना गया है।' उन्होंने दिल्ली के बदले हुए राजनीतिक हालात पर हास्य कविता सुनाकर वाहवाही लूटी। व्यंग्यकार आलोक पुराणिक ने कहा कि बीस साल पहले जो काम सरकार कर रही थी, वही काम आज बाजार कर रहा है। उन्होंने अपना प्रसिद्ध व्यंग्य मोबाइल सुनाया। डॉ॰ अवस्थी को 2011 का और आलोक पुराणिक को 2012 का काका हाथरसी सम्मान देकर हास्यरत्न घोषित किया गया है।

डॉ. शिव शर्मा के व्यंग्य एकांकी

अफलातून की अकादमी' का विमोचन

प्रख्यात व्यंग्यकार डॉ. शिव शर्मा के व्यंग्य एकांकी **अफलातून की अकादमी** एवं व्यंग्यकार डॉ॰ हरीशकुमार सिंह के व्यंग्य संकलन **सच का सामना** का विमोचन प्रेस क्लब में 16 फरवरी 2014 को आयोजित किया गया। विमोचन प्रसंग के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ॰ प्रभात भट्टाचार्य, प्रमुख अतिथि वरिष्ठ कवि श्री प्रमोद त्रिवेदी एवं विशेष अतिथि डॉ॰ शैलेंद्र शर्मा थे। इस अवसर पर डॉ॰ प्रभात भट्टाचार्य ने कहा कि व्यंग्य एक गंभीर विधा है। वक्रोक्ति के जरिये सीधी, सहज, सरल भाषा में व्यंग्य करना आसान काम नहीं है। रचनाकार की प्रतिरोध करने की क्षमता ही व्यंग्य और व्यंग्यकार को जन्म देती है। डॉ॰ शिव शर्मा के व्यंग्य एकांकी मंचन की दृष्टि से लोकरंजक हैं।

हिन्दी साहित्य निवेफतन

16 **साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰)**

फोन : 01342-263232, 07838090732

ई-मेल :
giriraj3100@gmail.com
giriraj@hindisahityaniketan.com
वेबसाइट :
www.hindisahityaniketan.com

महत्त्वपूर्ण कोश एवं संदर्भ ग्रंथ

निश्तर ख़ानक़ाही एवं डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
ग़ज़ल और उसका व्याकरण 150.00

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल एवं डॉ॰ मीना अग्रवाल
हिंदी साहित्यकार संदर्भ कोश : भाग-1 495.00
हिंदी साहित्यकार संदर्भ कोश : भाग-2 700.00
हिंदी साहित्यकार संदर्भ कोश : भाग-3 1100.00
हिंदी शोध के नए प्रतिमान 800.00
हिंदी शोध : नई दृष्टि 800.00
हिंदी तुलनात्मक शोधसंदर्भ 995.00
शोधसंदर्भ-भाग-1 500.00
शोधसंदर्भ-भाग-2 550.00
शोधसंदर्भ-भाग-3 525.00
शोधसंदर्भ-भाग-4 595.00
शोधसंदर्भ-भाग-5 895.00
हिंदी तुकांत कोश 300.00

समीक्षा एवं समालोचना

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
सवाल साहित्य के 200.00

डॉ॰ चंद्रकात मिसाल
हिंदी सिनेमा और दांपत्य संबंध 500.00
सिनेमा और साहित्य का अंत:संबंध 200.00

नवलकिशोर शर्मा
सिनेमा, साहित्य और संस्कृति 150.00

धर्मेन्द्र उपाध्याय
आमिर खान : हिंदी सिनेमा के सेवक 300.00

डॉ॰ अंजू भटनागर
डॉ॰ कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतीक विधान 500.00

डॉ॰ योगेश गोकुल पाटिल
अमरकांत का कथासाहित्य 400.00

डॉ॰ अनुभूति
नारी समस्याओं का समाजशस्त्रीय अध्ययन 450.00

डॉ॰ सुषमा सिंह
राजस्थानी चित्रशैली में आखेट दृश्य 250.00
भोपाल के संग्रहालयों की चित्रकला 250.00

डॉ॰ ज्योति सिंह
मृदुला गर्ग कृत अनित्य : इतिहास और आख्यान का संबंध 150.00
मृदुला गर्ग और नारी-अस्मिता का प्रश्न 300.00

डॉ॰ मिथिलेश माहेश्वरी
काका हाथरसी : एक समीक्षा-यात्रा 300.00

डॉ॰ मनोज कुमार
सांप्रदायिकता और हिंदी कथासाहित्य 250.00

डॉ॰ दीपा के॰
अपनी कविताओं में अशोक चक्रधर 250.00

डॉ॰ मीना अग्रवाल
आधुनिक हिंदी गीतिकाव्य में संगीत (पुरस्कृत) 450.00

डॉ॰ हरीशकुमार सिंह
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल : व्यक्ति और साहित्य 350.00

डॉ॰ अनिलकुमार शर्मा
साठोत्तरी हिंदी-ग़ज़ल : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल का योगदान 350.00

डॉ॰ वी॰ जयलक्ष्मी
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल का व्यंग्य-साहित्य : कथ्य एवं भाषा 450.00

डॉ॰ पूर्णचंद शर्मा
लोकरंगमंच के आयाम 200.00

डॉ॰ शंकर क्षेम
एक साक्षात्कार : पं॰ अमृतलाल नागर के साथ 150.00

अनिरुद्ध सिन्हा
ग़ज़ल : सौंदर्य और यथार्थ 150.00

डॉ॰ ज्योति व्यास
समय के हस्ताक्षर (हिंदी के आधुनिक कवि) 150.00

डॉ॰ लालबहादुर रावल
कालिदास के साहित्य में भौगोलिक तत्त्व 300.00

डॉ॰ अशोककुमार
जनपद बिजनौर के आधुनिककालीन साहित्यकार 350.00

डॉ॰ ओमदत्त आर्य
बिजनौर क्षेत्र की ग्रामोद्योग-संबंधी शब्दावली का अध्ययन 500.00

डॉ॰ मिथिलेश दीक्षित
आस्थावाद एवं अन्य निबंध 300.00
साहित्य और संस्कृति 300.00

डॉ॰ आशा रावत
हास्य-निबंध : स्वतंत्रता के पश्चात् 350.00

डॉ॰ प्रेम जनमेजय
आज़ादी के बाद का हिंदी गद्य व्यंग्य 500.00

विनोदचंद्र पांडेय
हिंदी बालकाव्य के विविध पक्ष 300.00

डॉ॰ स्वाति शर्मा
हिंदी बालसाहित्य : डॉ॰ सुरेंद्र विक्रम का योगदान 450.00

डॉ॰ पी॰आर॰ वासुदेवन
भीष्म साहनी का कथासाहित्य : सांप्रदायिक सद्भाव 300.00

अविनाश वाचस्पति/रवींद्र प्रभात
हिंदी ब्लॉगिंग : अभिव्यक्ति की नई क्रांति 495.00

रवींद्र प्रभात
हिंदी ब्लॉगिंग का इतिहास 300.00

डॉ॰ विजय इंदु
सूरदास का सौंदर्यचित्रण 250.00

डॉ॰ मीनल रश्मि
साठोत्तरी हिंदी रेखाचित्र : शैलीवैज्ञानिक अध्ययन 495.00

डॉ॰ आदित्य प्रचंडिया
डॉ॰ महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (गीत खंड) 700.00
डॉ॰ महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (दोहा खंड) 700.00

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल, डॉ॰ मीना अग्रवाल
वादविवाद प्रतियोगिता : पक्ष और विपक्ष 200.00

डॉ॰ शुचि गुप्ता
फिजी में प्रवासी भारतीय 300.00

डॉ॰ शिवशंकर लधवे
मुक्तिबोध का रचना-संसार 200.00

हास्य-व्यंग्य

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
मेरी हास्य-व्यंग्य कविताएँ 150.00
मेरे इक्यावन व्यंग्य 300.00
चुनी हुई हास्य कविताएँ 250.00
बाबू झोलानाथ 60.00
राजनीति में गिरगिटवाद 100.00
आदमी और कुत्ते की नाक 150.00
आओ भ्रष्टाचार करें 200.00

गोपाल चतुर्वेदी
दूध का धुला लोकतंत्र 150.00

गिरीश पंकज
आधुनिक बैताल कथाएँ 200.00

महेशचंद्र द्विवेदी
भज्जी का जूता 150.00
क्लियर फंडा 120.00
प्रिय-अप्रिय प्रशासकीय प्रसंग 170.00

पं॰ सूर्यनारायण व्यास, सं॰ राजशेखर व्यास
वसीयतनामा 150.00
नो टेंशन/ डॉ॰ सुरेश अवस्थी 170.00

काका हाथरसी
काका की विशिष्ट रचनाएँ 300.00
काका के व्यंग्य-बाण 300.00
कक्के के छक्के 200.00

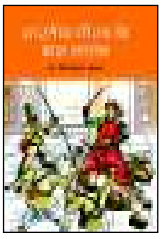

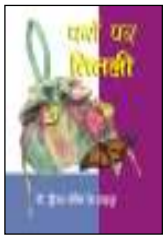

लूटनीति मंथन करी 200.00
खिलखिलाहट 200.00
डॉ॰ आशा रावत
पैसे कहाँ से दें 200.00
चाहिए एक और भगतसिंह 100.00
महेश राजा
नमस्कार प्रजातंत्र 150.00
अशोक चक्रधर
ए जी सुनिए 100.00
इसलिए बौड़म जी इसलिए 100.00
चुटपुटकुले 60.00
तमाशा 60.00
रंग जमा लो 65.00
सो तो है 60.00
हँसो और मर जाओ 60.00
डॉ॰ बलजीत सिंह
नमस्ते जी 150.00
अब हँसने की बारी है 200.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
1995 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 65.00
1996 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 100.00
1997 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 100.00
1998 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 100.00
1999 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 120.00
2002 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 150.00
2003 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 150.00
2004 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 170.00
पिछले दशक की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कहानियाँ 100.00
पिछले दशक की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ 200.00
पिछले दशक के श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य एकांकी 100.00
डॉ॰ शिव शर्मा
शिवशर्मा के चुने हुए व्यंग्य 50.00
बजरंगा (व्यंग्य-उपन्यास) 150.00
अपने-अपने भस्मासुर 150.00
दामोदरदत्त दीक्षित
प्रतिनिधि व्यंग्य 100.00

हास्य-व्यंग्य : मधुप पांडेय के संग/ मधुप पांडेय 200.00
धमकीबाज़ी के युग में/निश्तर ख़ानक़ाही 60.00
ला ख़र्चा निकाल/गजेंद्र तिवारी 200.00
जलनेवाले जला करें/गजेंद्र तिवारी 60.00
कवयित्री सम्मेलन/ सुरेंद्रमोहन मिश्र 100.00
पेट में दाढ़ियाँ हैं/सूर्यकुमार पांडेय 100.00
डॉ॰ हरीशकुमार सिंह
ये है इंडिया 120.00
आँखों देखा हाल 150.00
सच का सामना 150.00
लिफ़्ट करा दे 200.00
देवेंद्र के कार्टून/देवेंद्र शर्मा 80.00
कार्टून कौतुक/देवेंद्र शर्मा 120.00
लिफ़ाफ़े का अर्थशास्त्र/डॉ॰ पिलकेंद्र अरोरा 120.00
अजगर करे न चाकरी/बाबूसिंह चौहान 150.00

कहानी

डॉ॰ आशा रावत
एक सपना मेरा भी था 200.00
विजयकुमार
एक थी माया 200.00
सुरेशचंद्र शुक्ल
सरहदों के पार 200.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
जिज्ञासा और अन्य कहानियाँ 200.00
छोटे-छोटे सुख 200.00
कथा जारी है/बाबूसिंह चौहान 150.00
इक्कीस कहानियाँ/ सत्यराज 100.00
डॉ॰ मीना अग्रवाल
अंदर धूप बाहर धूप (नारी-मन की कहानियाँ) 150.00
कुत्तेवाले पापा 150.00
डॉ॰ दिनेशचंद्र बलूनी
उत्तराखंड की लोकगाथाएँ 200.00
महेशचंद्र द्विवेदी
एक बौना मानव 100.00
लव जिहाद 200.00
इमराना हाज़िर हो 150.00

हैं आस्माँ कई और भी/ नीरजा द्विवेदी 200.00
कौन कितना निकट/रेणु राजवंशी गुप्ता 120.00
लघु कथाएँ/डॉ॰ हरिशरण वर्मा 150.00
डॉ॰ सुधा ओम ढींगरा
कमरा नं॰ 103 150.00
डॉ॰ इला प्रसाद
कहानियाँ अमरीका से 150.00
डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका (सं॰)
प्रेमचंद की कालजयी कहानियाँ 150.00
सुकेश साहनी, रामेश्वर काम्बोज हिमांशु (सं॰)
लघुकथाएँ जीवनमूल्यों की 150.00

उपन्यास

डॉ॰ राजेन्द्र मिश्र
इतिहास की आवाज़ 450.00
श्रीमती सुषमा अग्रवाल
अनोखा उपहार 200.00
आसरा 100.00
तीन बीघा ज़मीन 200.00
मन के जीते जीत 200.00
नीरजा द्विवेदी
कालचक्र से परे 200.00
महेशचंद्र द्विवेदी
भीगे पंख 200.00
मानिला की योगिनी 200.00
डॉ॰ तारादत्त निर्विरोध
और लहरें उफनती रहीं 200.00
डॉ॰ शिव शर्मा
बजरंगा (व्यंग्य-उपन्यास) 150.00
डॉ॰ मोहन गुप्त
अराज-राज 200.00
सुराज-राज 350.00
डॉ॰ आशा रावत
एक गुमनाम फौजी की डायरी 150.00
एक चेहरे की कहानी 150.00
गुरुदक्षिणा (व्यंग्य-उपन्यास) 100.00
प्रेमसागर तिवारी
एक फ़रिश्ता ऐसा देखा 250.00

एकांकी-नाटक

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
मंचीय हास्य-व्यंग्य एकांकी 200.00
मंचीय सामाजिक एकांकी 200.00
बच्चों के हास्य नाटक 200.00
बच्चों के रोचक नाटक 200.00
बच्चों के शिक्षाप्रद नाटक 200.00
बच्चों के अनुपम नाटक 200.00
बच्चों के उत्तम नाटक 200.00
भारतीय गौरव के बाल नाटक 200.00
प्रेमचंद की कहानियों पर आधारित नाटक 300.00
ग्यारह नुक्कड़ नाटक 200.00
प्रकाश मनु
बच्चों के अनोखे नाटक 200.00
हास्य-विनोद के नाटक 200.00
संसार : एक नाट्यशाला/बाबूसिंह चौहान 150.00
ग्यारह एकांकी/डॉ॰ हरिशरण वर्मा 200.00
दमन/रामाश्रय दीक्षित 100.00
स्वप्न पुरुष/उर्मिला अग्रवाल 150.00
अफलातून की अकादमी/डॉ॰ शिव शर्मा 150.00

ललित निबंध एवं रेखाचित्र

कैसे-कैसे लोग मिले/निश्तर ख़ानक़ाही 125.00
यादों का मधुबन/कृष्ण राघव 150.00
समय के चाक पर/डॉ॰ लालबहादुर रावल 125.00
समय एक नाटक/डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल 200.00
दर्पण झूठ बोलता है/बाबूसिंह चौहान 60.00
मकड़जाल में आदमी/बाबूसिंह चौहान 80.00
उफनती नदियों के सामने/बाबूसिंह चौहान 100.00
इन दिनों समर में/डॉ॰ कृष्णकुमार रत्तू 250.00
अनुभव के पंख/चंद्रवीरसिंह गहलौत 250.00
डॉ॰ बालशौरि रेड्डी
मेरे साक्षात्कार 250.00
डॉ॰ बलजीत सिंह
आधी हकीकत आधा फ़साना 200.00
डॉ॰ ओमदत्त आर्य

फूलों की महक 200.00
डॉ॰ गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'
संवाद : साहित्यकारों से 200.00
एक फ़रिश्ता ऐसा देखा/प्रेमसागर तिवारी 250.00

गीत-ग़ज़ल

निश्तर ख़ानक़ाही
निश्तर ख़ानक़ाही समग्र (प्रकाशनाधीन) 500.00
मोम की बैसाखियाँ (ग़ज़ल-संग्रह) 50.00
ग़ज़ल मैंने छेड़ी (ग़ज़ल-संग्रह) 80.00
ग़ज़लों के शहर में (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
मेरे लहू की आग (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
डॉ॰ कुँअर बेचैन
कोई आवाज़ देता है 150.00
दिन दिवंगत हुए 150.00
कुँअर बेचैन के नवगीत 200.00
कुँअर बेचैन के प्रेमगीत 150.00
पर्स पर तितली (हाइकु) 200.00
रमेश पोखरियाल 'निशंक'
मातृभूमि के लिए 200.00
संघर्ष जारी है 170.00
जीवन-पथ में 150.00
देश हम जलने न देंगे 150.00
तुम भी मेरे साथ चलो 150.00
लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'
झरनों का तराना है 200.00
राजेन्द्र मिश्र
असाबिया 200.00
समय के भूगोल में 200.00
आठवाँ राग 200.00
हवाएँ ख़ामोश हैं 200.00
रामेश्वरप्रसाद
शमा हर रंग में जलती है 150.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
अक्षर हूँ मैं (कविताएँ) 150.00
सन्नाटे में गूँज (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
भीतर शोर बहुत है (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
मौसम बदल गया कितना (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
रोशनी बनकर जिओ (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
शिकायत न करो तुम (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
आदमी है कहाँ (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
प्रतिनिधि ग़ज़लें (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
गीतिका गोयल
मान भी जा छुटकी (कविताएँ) 150.00
रामगोपाल भारतीय
आदमी के हक़ में (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
रमेश कौशिक
यहाँ तक वहाँ से (कविताएँ) 200.00
हास्य नहीं व्यंग्य (कविताएँ) 150.00
आर्यभूषण गर्ग
गांधारी का सच (खंडकाव्य) 200.00
डॉ॰ आकुल
राधेय (खंडकाव्य) 120.00
असित चंद्र : अवदात चंद्रिका (काव्य-नाटक) 120.00
जिंदगी गाती तो है/(ग़ज़ल-संग्रह) 120.00
कृिानस्वरूप
आसमान मेरा भी है (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
बूँद-बूँद सागर मैं (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
कर्नल तिलकराज
आँचल-आँचल खुशबू (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
ज़ख़्म खिलने को हैं (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
अग्निसुता/राजेंद्र शर्मा 150.00
सीतायनी/डॉ॰ शंकर क्षेम 150.00
शचींद्र भटनागर
हिरना लौट चलें (गीत-संग्रह) 150.00
तिराहे पर (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
ढाई आखर प्रेम के (गीत-संग्रह) 200.00
अखंडित अस्मिता (मुक्तक) 200.00
मनोज अबोध
गुलमुहर की छाँव में (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
मेरे भीतर महक रहा है (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
तारा प्रकाश
तारा प्रकाश समग्र 500.00
उजियारा आशाओं का 150.00

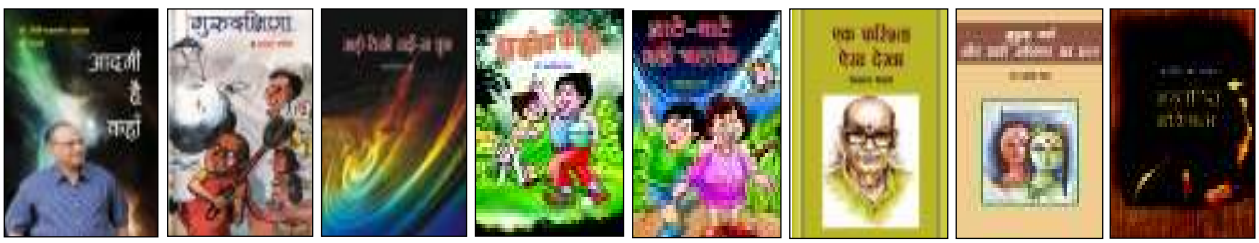

बुलंदी इरादों की 150.00
चलने से मंज़िल मिलती है 200.00
इंद्रधनुष 200.00
संवेदनाओं के रंग 200.00
अश्विनीकुमार 'विष्णु'
सुरों के ख़त 100.00
सुनहरे मंत्र का जादू 100.00
सुनते हुए ऋतुगीत 150.00
सुबह की अंगूठी 150.00
डॉ॰ मीना अग्रवाल
सफ़र में साथ-साथ (मुक्तक-संग्रह) 150.00
जो सच कहे (हाइकु-संग्रह) 150.00
यादें बोलती हैं (कविताएँ) 200.00
एक मुट्ठी धूप/नीरजा सिंह 100.00
डॉ॰ कमल मुसद्दी
कटे हाथों के हस्ताक्षर 150.00
डॉ॰ बलजीत सिंह
फ़ासले मिट जाएँगे (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
शब्द-शब्द संदेश (दोहे) 150.00
जीवन है मुस्कान (दोहे) 150.00
भीतर का संगीत (दोहे) 200.00
सुख के बिरवे रोप (दोहे) 200.00
इंद्रधनुष के रंग (दोहे) 200.00
प्यार के गुलाल से (हाइकु) 200.00
हारना हिम्मत नहीं (मुक्तक) 200.00
डॉ॰ योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण'
बहती नदी हो जाइए (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
अँधियारों से लड़ना सीखें (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
जीवन-अमृत : पर्यावरण चेतना (दोहा-संग्रह) 200.00
अक्षर-अक्षर हो अमर (दोहा-संग्रह) 200.00
वैदुष्यमणि विद्योत्तमा (खंडकाव्य) 200.00
महेशचंद्र द्विवेदी
अनजाने आकाश में 170.00
सत्येंद्र गुप्ता
बातें कुछ अनकही 200.00
मैंने देखा है 200.00

हौसला तो है 200.00
ज़िंदगी रुकती नहीं 200.00
जज़्बात की धूप/धूप धौलपुरी 250.00
नवलकिशोर शर्मा
आड़ी-तिरछी यादों-सा कुछ 180.00
जब चाँद डूब रहा था 200.00
एड्स शतक/पूरणसिंह सैनी 150.00
डॉ॰ ओमदत्त आर्य
खोजें जीवन सत्य (दोहे) 150.00
अपनी एक लकीर (दोहे) 200.00
सलेकचंद संगल
राष्ट्र-शक्ति 150.00
माँ तुझे प्रणाम 150.00
लहरों के विरुद्ध/डॉ॰ रामप्रकाश 200.00
हर वृक्ष महाबोधि नहीं होता/महेंद्र कुमार 200.00
पीड़ा का राजमहल/डॉ॰ उर्मिला अग्रवाल 200.00
मैं एक समुद्र/डॉ॰ तारादत्त निर्विरोध 200.00
उड़ान जारी है/विनोद भृंग 200.00
हरिराम 'पथिक'
कहता कुछ मौन (हाइकु-संग्रह) 200.00
चंद्रवीरसिंह गहलौत 'बेदाग'
धनुषभंजक राम 200.00
एक कुल्हड़ चाय/स्वर्ण ज्योति 200.00
रामेश्वर वैष्णव
सूर्यनगर की चाँदनी (ग़ज़लें) 150.00
दामोदर खड़से
रात (रात पर कविताएँ) 150.00
डॉ॰ आदित्य प्रचंडिया
डॉ॰ महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (गीत खंड) 700.00
डॉ॰ महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (दोहा खंड) 700.00

आत्मकथा-संस्मरण-पत्र

मेरा जीवन : ए-वन/काका हाथरसी 100.00
आत्मसरोवर/ओम्प्रकाश अग्रवाल 125.00
निष्ठा के शिखर-बिंदु/नीरजा द्विवेदी 200.00
सफ़र साठ साल का/डॉ॰अजय जनमेजय (सं)400.00
गीतिका गोयल, अनुभूति भटनागर (संपादक)

यादों की गुल्लक 300.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल (संपादक)
उत्तरोत्तर 500.00
धर्मेन्द्र उपाध्याय
आमिर ख़ान : हिंदी सिनेमा के सेवक 300.00

बाल-साहित्य

लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'
गधा बत्तीसी 200.00
शंभूनाथ तिवारी
धरती पर चाँद (पुरस्कृत) 150.00
डॉ॰ बलजीतसिंह
हम बगिया के फूल (बालगीत) 150.00
आओ गीत सुनाओ गीत 150.00
छुट्टी के दिन बड़े सुहाने 200.00
दिन बचपन के (बालगीत) 200.00
विनोद भृंग
जादूगर बादल (बालगीत) 150.00
बालकृष्ण गर्ग
आटे-बाटे दही चटाके (शिशुगीत) 150.00
गीतिका गोयल
चुनमुन की कहानियाँ (पुरस्कृत) 150.00
डॉ॰ सरला अग्रवाल
किशोर मन की कहानियाँ 150.00
डॉ॰ तारादत्त निर्विरोध
चलो आकाश को छू लें 200.00
डॉ॰ सरोज़नी कुलश्रेष्ठ
काग़ज़ की नाव 150.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
मानव-विकास की कहानी 200.00
पार्टी गेम्स/चाँदनी कक्कड़ 125.00

समाजोन्मुख साहित्य

डॉ॰ सरिता शाह
उत्तराखंड में आध्यात्मिक पर्यटन 200.00
निश्तर ख़ानक़ाही, डॉ॰ गिरिराजशरण, डॉ॰ मीना अग्रवाल
पर्यावरण : दशा और दिशा (पुरस्कृत) 300.00
नारी : कल और आज 200.00
निश्तर ख़ानक़ाही, डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
विश्व आतंकवाद : क्यों और कैसे 125.00
हिंसा : कैसी-कैसी 200.00
दंगे : क्यों और कैसे (पुरस्कृत) 100.00
रमेशचंद्र दीक्षित, निश्तर ख़ानक़ाही, डॉ॰ गिरिराजशरण
मानवाधिकार : दशा और दिशा (पुरस्कृत) 300.00
डॉ॰ गिरिराज शाह
अपराध-अपराधी : अन्वेषण एवं अभियोजन 200.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
गुरु नानकदेव 200.00
अमृतवाणी 300.00
डॉ॰ मूलचन्द दालभ
वेद-वेदान्त दर्शन 300.00
प्रकृति : एक ज्ञेय तत्त्व 300.00
कन्हैया गीता/डॉ॰ मूलचन्द दालभ 900.00
डॉ॰ कमलकांत बुधकर
मैं हरिद्वार बोल रहा हूँ 395.00
डॉ॰ गोविंद शर्मा एवं रवि लंगर
टास्कफोर्स : हैल्थकेयर प्रोजेक्ट्स 450.00
मनोज भारद्वाज
सिद्धाश्रम का संन्यासी 300.00
डॉ॰ लालबहादुर रावल
समुद्री दैत्य सुनामी 300.00

शोध अंक

शोध अंक भाग-1 200.00
शोध अंक भाग-2 200.00
शोध अंक भाग-3 200.00
शोध अंक भाग-4 200.00
शोध अंक भाग-5 200.00
शोध अंक भाग-6 200.00
शोध अंक भाग-7 200.00
शोध अंक भाग-8 200.00
शोध अंक भाग-9 200.00
शोध अंक भाग-10 200.00
शोध अंक भाग-11 200.00
शोध अंक भाग-12 200.00
शोध अंक भाग-13 200.00
शोध अंक भाग-14 200.00
शोध अंक भाग-15 200.00
शोध अंक भाग-16 200.00
शोध अंक भाग-17 200.00
शोध अंक भाग-18 200.00
शोध अंक भाग-19 200.00
शोध अंक भाग-20 200.00
शोध अंक भाग-21 200.00
शोध अंक भाग-22 200.00
शोध अंक भाग-23 200.00
शोध अंक भाग-24 200.00
शोध अंक भाग-25 200.00